॥ राम ॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

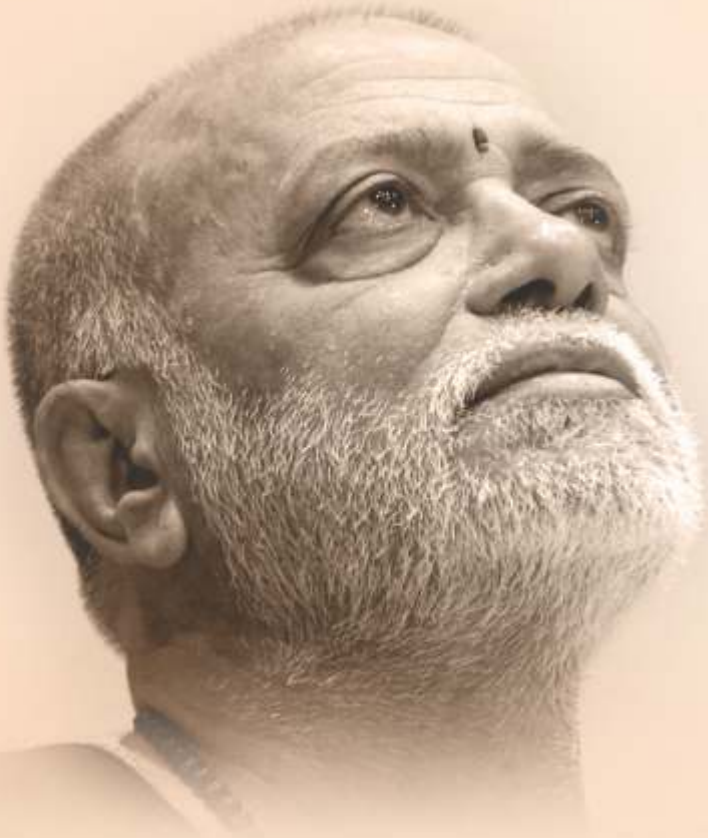

मानस–किष्किन्धाकांड

अबू धाबी (यू.ए.ई.)

आगें चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत निअराया ।।
तब निज भुज बल राजिवनैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ।।

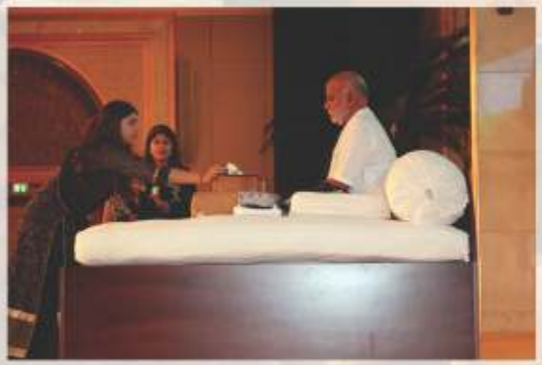

|| **रामकथा** ||
मानस-किष्किन्धाकांड

मोरारिबापू
अबू धाबी (यू.ए.ई.)
दिनांक : १७-९-२०१६ से २५-९-२०१६
कथा-क्रमांक : ८००

प्रकाशन :
मई, २०१८

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क-सूत्र :
ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स
स्वर एनिम्स

प्रेम-पियाला

मोरारिबापू ने अबू धाबी (यू.ए.ई.) में दिनांक १७-९-२०१६ से २५-९-२०१६ दरमियान 'मानस-किष्किन्धाकांड' रामकथा का गान किया।

'किष्किन्धाकांड' यद्यपि छोटा कांड है फिर भी बहुत बड़ा कांड है, ऐसे निवेदन के साथ बापू ने कहा कि 'किष्किन्धाकांड' में नौ संवाद है। और ये नौ संवाद आज की युवानी के लिए, आज के पढ़े-लिखे भाई-बहनों के लिए, छोटे बच्चों के लिए, बुज़ुर्गो के लिए, सब के लिए एक बहुत बड़ा मेसेज है। पहला संवाद है राम और हनुमान संवाद। दूसरा संवाद है राम और सुग्रीव संवाद। तीसरा छोटा-सा संवाद वालि और एक सती साध्वी स्त्री तारा का संवाद। चौथा संवाद है राम और वालि का। पांचवां संवाद है राम और लक्ष्मण का। बंदर-भालू का स्वयंप्रभा के साथ छठ्ठा संवाद। सातवां संवाद है बंदरगण और संपाति का। आठवां संवाद है जामवंत और हनुमानजी का। और नौवां संवाद है तुलसी का अपने मन के साथ। 'किष्किन्धाकांड' के आदि से अंत तक नौ संवाद है जो हमारे मन की समस्याओं का समाधान दे सकता है।

'रामचरित मानस' अपने ढ़ंग से सद्गुरु है, अपनी निजता लिए हुए गुरुग्रंथ है, इन शब्दों में बापू ने 'मानस' का महिमागान किया। 'किष्किन्धाकांड' के केन्द्र में रहे श्री हनुमानजी ने जो-जो किया वो सब गुरु के लक्षण है, ऐसे निष्कर्ष पर आये बापू का कहना हुआ कि हनुमानजी की एन्ट्री से लेकर 'किष्किन्धाकांड' पूरा होता है वहां तक हनुमंतक्रीडा जो है उसमें बुद्धपुरुष के लक्षण चरितार्थ होते हैं। साथ ही बापू ने ऐसा सूत्रपात भी किया कि हनुमानजी केवल वचनात्मक गुरु नहीं है, रचनात्मक गुरु है। वचन की महिमा तो है ही लेकिन गुरु केवल रामनाम जपे इतना पर्याप्त नहीं है। गुरु रामकाम भी करे।

बापू ने तुलसी को अपनी भाषा के पैगम्बर का दर्जा भी दिया कि हरएक भाषा में परमात्मा का संदेश देनेवाला कोई न कोई पैगम्बर आता है। हमारी भाषा का पैगम्बर तुलसी है, जो 'मानस' का पैगाम लेकर आया है।

राम और रामकथा सर्वकाल में प्रासंगिक है, ऐसी बापू की दृढ़ प्रतीति भी इस तरह प्रकट हुई कि राम का अवतार हुआ, राम की लीला हुई, राम का चरित्र हुआ वो काल तो त्रेतायुग था। घटना तो बहुत दूर हुई कालों से पहले। इसलिए कई लोग आशंका करते हैं कि क्या राम हुए हैं? ऐसी घटना कभी हुई है? और कई बुद्धिजीवी लोग ऐसा कहते रहते हैं! सब को अधिकार है। लेकिन राम हुए हैं, हुए हैं, हुए हैं। राम है, है, है। राम रहेंगे, रहेंगे, रहेंगे। और राम सर्वकाल में प्रासंगिक है; रामकथा सर्वकाल में प्रासंगिक है।

'मानस-किष्किन्धाकांड' रामकथा में बापू की व्यासपीठ से यूं रामकथा का सर्वकालीन एवम् सर्वदेशीय माहात्म्य प्रकट हुआ।

– नीतिन वडगामा

रामकथा ये मेरी प्रेम करने की विधा है

आगें चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत निअराया ।।
तब निज भुज बल राजिवनैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ।।

बाप! भगवद् कृपा से इस भूमि पर नौ दिवसीय रामकथा का मंगल आरंभ हो रहा है और वो भी श्राद्ध पक्ष में। इसकी बड़ी खुशी है। कथा के आरंभ में यह रामकथा में अपने सहज विवेक से, सरलता से उपस्थित रहे यहां के वरिष्ठ परिवार के सदस्यगण, मैं और मेरी व्यासपीठ और उसके साथ जुड़े हुए बहुत बड़ी संख्या के श्रोताओं के साथ आप का आदर करता हूं। और मैं एक ही बात कहना चाहूंगा, मुझे तो अंग्रेजी आती नहीं लेकिन बामुश्किल एक-दो वाक्य मैंने कहे, I feel very peaceful atmosphere here. मुझे तुरंत जवाब मिला; जवाब को ज्यादा तालियां देना। जो जवाब मिला उसे मैं सलाम करता हूं। तुरंत sudden विवेक से जो जवाब मिला, because Ramkatha is here. ये है वास्तव में बड़े घरानेवालों की इज्जत, शालीनता और अपनी खानदानी का विवेक। मैं स्वागत करता हूं और इस पूरे मुल्क के लिए, यहां के शाही परिवार, शेख परिवार और पूरे मुल्क की जनता के लिए परमात्मा को प्रार्थना करता हूं कि सत्य, प्रेम और करुणा के माध्यम से यहां की प्रगति हो, जनजन की प्रसन्नता में वृद्धि हो और खुश रहो, खुश रहो, खुश रहो। और इतनी सहजता से आपने जय सीयाराम कहा। ये सीयाराम कोई हिन्दुओं का एकमात्र का परमात्मा नहीं है। वो ही अल्लाह है, वो ही खुदा है, वो ही परमतत्त्व है। जिसको कोई अल्लाह कहे, कोई राम कहे, कोई कृष्ण कहे। क्या फ़र्क पड़ता है? जिसके दिल में वफ़ा है, वफ़ा के कारण जिसके दिल में वफ़ादारी है। वफ़ादारी के कारण इन्सान-इन्सान के प्रति, मुल्क-मुल्क के प्रति, मज़हब-मज़हब के प्रति जिसके दिल में वफ़ादारी है, वो लोग ऐसा ही सोचेंगे, ऐसा ही समझेंगे, ऐसा ही जीएंगे। बाकी हिन्दुस्तान में कई लोगों को 'जय सीयाराम' बुलवाना बड़ा कठिन है! उसे डर लगता है कि ये बोलने से कहीं सांप्रदायिक न हो जाये! और ये महानुभाव, कोई सीखी सीखाई बात नहीं, ऐसे सुना और आपने इस पावन नाम के साथ सब का स्वागत किया। ये आप का बड़प्पन है, ये वफ़ादारी का परिचय है। धर्म के नाम पर, कोम के नाम पर, संकीर्ण विचारों के नाम पर इन्सान को इन्सान के नाम पर हम बिलग करे यह संभव नहीं यदि सत्य, प्रेम और करुणा है तो-

हमें बिलग ज़माना करे ये मुमकिन नहीं,
लेकिन ये हुकमे खुदा है तो कोई बात नहीं।

मैं बहुत हृदय से आप का स्वागत करता हूं और मेरे श्रोता भाई-बहनों का भी स्वागत। यहां से प्रणाम करता हूं। जो इस कथा में निमित्तमात्र यजमान बने हैं माँ-बेटी और उसके साथ पूरा सहयोग है जगदीशभाई, उसके पिताजी का, आशिष का, पूरे परिवार का। यहां इस कथा का आयोजन हुआ, मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। मैं सोच रहा था कि 'मानस' के किस विषय पर बोलूं? किस पात्र पर, प्रसंग पर बोलूं? कौन सूत्र उठाउं मैं? निर्णित नहीं था करीब दो-ढ़ाई बजे तक लेकिन फिर मेरे मन में आया कि मैं आप के सामने 'मानस-किष्किन्धाकांड' कहूंगा। इस बार की विदेश यात्रा का आरंभ केनेडा में 'मानस-सुन्दरकांड' से हुआ था। बीच में 'मानस-सुकरात'। उसके बाद क्योटो में 'मानस-सहज' और मुझे लगा कि यहां मैं आप के सामने 'मानस-किष्किन्धाकांड' गाऊं। इसके लिए मेरी व्यासपीठ ने 'किष्किन्धाकांड' की चौपाईयां जहां से शुरू होती है वहां से प्रथम पंक्ति उठाई है। और दोनों चौपाईओं के बीच में 'किष्किन्धाकांड' है। यद्यपि छोटा कांड है। फिर भी बहुत बड़ा कांड है, बहुत बड़ा।

मेरी व्यासपीठ की दृष्टि से 'किष्किन्धाकांड' में नौ संवाद है और ये नौ संवाद आज की युवानी के लिए, आज के पढ़े-लिखे मेरे भाई-बहनों के लिए, बुज़ुर्गों के लिए, छोटे-छोटे बच्चों सब के लिए एक बहुत बड़ा मेसेज है। पहला संवाद

है 'किष्किन्धाकांड' में एक राम-हनुमान संवाद। ये संवाद सभी काल में प्रासंगिक है। लेकिन आज के काल में अत्यंत नितांत प्रासंगिक है। आप सब जानते हैं कि 'रामचरित मानस' स्वयं संवाद का शास्त्र है। यहां विवाद, दुर्वाद, अपवाद को जगह नहीं।

निषेध कोईनो नहीं, विदाय कोईने नहीं,
हुं शुद्ध आवकार छुं, हुं सर्वनो समास छुं।

-राजेन्द्र शुक्ल

मेरे भाई-बहन, आप मेरे श्रावक भाई-बहन हैं। मेरी ममता है आप के प्रति। मैं एक अगली कथा में शायद बोल गया और शायद राजकोट की सभा में आदरणीय बापा की वंदना की गई, तभी मैंने कहा था कि प्रवचन मेरा माध्यम है आप से मोहब्बत करने का। मैं प्रवचन क्या खाक करूं? मेरे पास शब्द कितने? यद्यपि मेरे देश के उपनिषदों ने कहा है, 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।' प्रवचन करने से वाणी पवित्र होती है। यस, लेकिन अतिशय बोल-बोल करना मूढ़ता कहा है मनीषीओं ने। परमात्मा की पूजा करनी है तो आदमी फूल के द्वारा प्रभु से मोहब्बत करता है। कोई जल के द्वारा वजू करे। कोई स्नान करे। किसी से प्रेम करने के लिए कोई माध्यम चाहिए। कोई चिठ्ठी लिखे। किसी न किसी चीज से हम अपना प्रेम व्यक्त करते हैं। मुस्कुराहट से, प्रेम से, आंसू से, चिठ्ठी से कैसे भी। मैं पूरे विश्व को प्रेम कर रहा हूं कथा के माध्यम से। रामकथा ये मेरी प्रेम करने की विधा है। आप से मेरी ममता है, मोहब्बत है। इसलिए बारबार गाये जा रहा हूं। और इससे अगर आप को ज्यादा खुशी मिले तो मेरी खुशी इससे कई गुना बढ़ सकती है।

तो ये नौ संवाद युवान भाई-बहन, मेरी दृष्टि में हमारा बहुत बड़ा समाधान दे सकते हैं। उसको ठीक से सुनियेगा। उसको ठीक से पीओ। उसको ठीक से 'जीओ' शब्द यूझ करूं कि नहीं? आजकल 'जीओ जीओ' हो रहा है! कुछ दिनों बाद 'जयो जयो' होगा। 'जयो जयो माँ जगदंबे...' बाप! मेरे भाई-बहन, आग-अग्नि यदि समस्या है, प्रोब्लेम है तो उसका समाधान पानी है। सीधेसादे सूत्र समझो। कहीं आग लगी है, जल रहा है घर, उसका समाधान क्या है? रोए? नको। सीना कूटे? नहीं। डीप्रेस हो जाए? नहीं तो। भाग जाये? कायरता है। क्या समाधान है? पानी। आग का समाधान पानी है। रोग का समाधान तंदुरस्ती है, आरोग्य है। बहुत ठंड लग रही है, उसका समाधान है उष्णता, गरमी। लेकिन एक तत्त्व ऐसा है मेरे युवान भाई-बहन, हमारा और आप का मन। मन की समस्या का समाधान दूसरा नहीं है, मन ही है। जो मन नकारात्मक है तो ही मन हकारात्मक भी है। मेरा और आप का जीवन का 'किष्किन्धाकांड' चौथा सोपान है। 'किष्किन्धाकांड' ये व्यक्ति का परमतत्त्व से शादी करने का चौथा फेरा है। तीन फेरे है-'बालकांड', 'अयोध्याकांड', 'अरण्यकांड'। मुझे और आप को 'रामचरित मानस' के साथ अबू धाबी की इस सुंदर रमणीय प्यारी भूमि पर फेरे लगाने हैं। काश! सत्य, प्रेम, करुणा से हमारी शादी हो जाए। पक्का, मन अगर समस्या है तो समाधान भी मन ही है। आग समस्या है तो समाधान पानी है।

मेरे पास युवान लोग आते हैं, पूछते हैं, मैं कहता हूं, तुम इतने दु:खी क्यों हो? जीवन में प्रसन्न रहने की पल है, क्षण है तब इतने उदास क्यों हो? एक बात याद रखना होगा, जो आदमी रात्रि को संतोष लेकर सोता है और सुबह में उत्साह लेकर जागता है वह आध्यात्मिक है। आध्यात्मिक व्यक्ति का क्या परिचय है? तिलक करो, मुझे आनंद है। क्या तिलक में आध्यात्मिकता आ जाती है? जो आदमी रात को सब काम पूरा करके सोता है और संतुष्ट भाव से सो जाएगा और सुबह उत्साह से भरकर जागेगा, यही आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता कोई वस्त्र बदलने की घटना नहीं है। आदमी को नेगेटिव विचार से पोझिटिव विचार में अपने आप को परिवर्तित करने की विधा है। बहुत फायदा होगा साहब! रोज परीक्षण किया जाय कि हम संतोष लेकर रात को सोते हैं? मैंने तो अभी गुजरात के हमारे नवनियुक्त मुख्यमंत्री की सभा में कहा। मैं तो सब से डिस्टन्स रखकर बैठा हूं। मैं तो इतना ही कहूंगा, गुजरात ही नहीं, पूरी दुनिया, सारी दुनिया सूरज उगे और सूरज अस्त हो तब तक विकास करे और सूरज डूब जाय और फिर दूसरी सुबह सूरज उगे तब तक विश्राम करे। युवक भाई-बहन, पूरे दिन विकास करो और जैसे सूरज डूबा, दूसरा दिन उगे तब तक विश्राम करो। 'भगवद्गीता' ने सतत संतुष्ट को योगी कहा। 'योगी' शब्द आता है तो होता है ऐसा होगा, ऐसा होगा। नहीं, प्रत्येक व्यकित योगी का बिरुद प्राप्त कर सकता है। 'संतुष्ट: सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चय...' तो ये नौ संवाद तलगाजरडा की दृष्टि में जो है, वो आप के साथ मेरा प्यार है। इसलिए मैं ये विधा बना रहा हूं। आप को मोहब्बत करने जा रहा हूं। राहत इन्दौरीसाहब का एक शे'र है-

जनाजे पर मेरे लिख देना यारों,
मोहब्बत करनेवाला जा रहा है।

इससे अतिरिक्त कुछ मत लिखना। तो 'किष्किन्धाकांड' के आदि से अंत तक नौ संवाद है, जो हमारे मन की समस्याओं का मन के द्वारा समाधान करता है। युवानी में जब एन्जोय करना है, प्रसन्न रहना है। एक दूसरों से मोहब्बत करते-करते समर्पित होना है। ऐसे समय में नेगेटिव सोच कई प्रकार की उलझनें पैदा करती है। ऐसे माहौल में ये नौ दिन मेरे लिए और आप के लिए एक अवसर है अबू धाबी की इस भूमि पर। मैं तो अक्सर सोचता रहता हूं कि कहां वो व्यासपीठ जहां नानां-मोटां दोरडां पर सफेद सोफा उडता होय पवनमां अने क्यां आवा एक आलीशान होलमां रामकथा! और एकमात्र इसके पीछे तत्त्व है और वो है, 'पोथीने परतापे क्यां क्यां पूगिया!' ये पोथी के कारण रोज हम अहोभाव में रहते हैं। बाप! नौ संवाद का अर्थ नव, नाईन, नवीन संवाद, एक नया संवाद, कुछ नया दर्शन, कुछ नयी महसूसी।

तो बाप! पहला संवाद है 'किष्किन्धाकांड' के आरंभ में। और बहुत महत्त्व का कांड। सब सोपान महत्त्व के लेकिन यह कांड जो है जिसमें हनुमानजी पहली बार प्रवेश करते हैं रामकथा में, तुलसी के 'मानस' में। और हमारे जगदीशभाई बजरंगबली को मानते हैं। पहला संवाद है राम और हनुमान-संवाद। दूसरा संवाद 'किष्किन्धाकांड' में है राम और सुग्रीव संवाद, जिसमें पूरा मित्राष्टक आ जाता है। जिस पर एक स्वतंत्र कथा ओलरेडी हो चुकी है। 'मानस-मित्राष्टक' नाम दिया। तीसरा छोटा-सा संवाद वालि और एक सती साध्वी स्त्री तारा का संवाद। पति-पत्नी के बीच संवाद हो जाये तो बहुत समस्याएं समाप्त हो जाये! संवाद नहीं हो पाता! बड़ी मुश्किल। संवाद का अभाव। नितांत अभाव। और वालि और उसकी पत्नी तारा जिस तरह संवाद करती है ये तीसरा संवाद। हमारे समृद्धों को तुलसी 'किष्किन्धाकांड' में स्पर्श कर रहे हैं। मित्र-मित्र, सेवक-स्वामी, पति-पत्नी सब जगह संवाद की आवश्यक्ता है। चौथा संवाद राम और वालि। पांचवां संवाद है राम और लक्ष्मण।

बरसा बिगत सरद रितु आई।
लछिमन देखहु परम सुहाई।।

एक क्षण तो पहले ये हुआ कि 'मानस-शरदरितु' करूं? क्योंकि एक बार तो कहीं हुआ है 'मानस-शरदरितु' कच्छ में। एक ओर शरद के दिन आ रहे हैं तो दिमाग में एक चमकारा हुआ। लेकिन लगा कि एक बार 'किष्किन्धाकांड' की बातें आप के सामने करूं। राम और लक्ष्मण का भाई-भाई का संवाद। जिसमें ऋत और ऋतु दोनों को माध्यम बनाया। एक भाई एक भाई के साथ संवाद करे तब ऋतु मानी समय देखे कि कौन ऋतु चल रही है? ऋत मानी 'ऋत वदिस्यामि, सत्यं वदिस्यामि।' उपनिषदीय घोषणा है। और वो ऋत यद्यपि सत्य क्या है, उसकी बहुत लंबी-चौड़ी परिभाषाएं जो विद्वान लोग करते हैं, मनीषीगण करते हैं लेकिन ऋत बहुत अद्‌भुत तत्त्व है। छठ्ठा संवाद है बंदर-भालू का स्वयंप्रभा के साथ। जिसमें स्वयं प्रज्ञा जाग गई हो। उसके साथ एक संवाद ये छठ्ठा संवाद है। मुख्य केन्द्र में अंगद। सातवां संवाद है बंदरगण और संपाति का। आठवां संवाद है जामवंत और हनुमानजी का। और नौवां संवाद है तुलसी का अपने मन के साथ।

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहँ।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहँ।।
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई।।

तो व्यासपीठ की दृष्टि में ये नौ संवाद संख्या की दृष्टि से भी है और हम और आप सब के लिए सत्संग ये वार्तालाप कुछ अल्लाह करे, परमात्मा करे नवीन हो। जिसस क्राईस्ट कहा करते थे, आदमी को चाहिए रोज नये कपड़े पहने। जिसस इतने गरीब थे अपने नीजि जीवन में की उसके पास रोज नए कपड़े कहां? बहुत गरीब थे। एकमात्र वस्त्र पहनते थे। लेकिन वो कहते थे कि रोज नया कपड़ा पहनना है। आदमी का विचार रोज नया होना चाहिए। मैं मेरी 'रामचरित मानस' की पोथी का वस्त्र रोज बदलता हूं। इसके पीछे मेरा

संकेत है कि 'रामचरित मानस' रोज नूतन है।

तो 'मानस-किष्किन्धाकांड' इस नव दिवसीय रामकथा का शीर्षक रहेगा और उसकी चौपाईयों में पहली पंक्ति और आख़िरी पंक्ति इन दो पंक्तिओं के मध्य में 'किष्किन्धाकांड' है इसलिए उठाई है। तो मैं आप सब को निमंत्रित करूं कि हम गाये और आप भी गाये।

आगें चले बहुरि रघुराया ।
रिष्यमूक पर्बत निअराया ।।
तब निज भुज बल राजिवनैना ।
कौतुक लागि संग कपि सेना ।।

जहां से चौपाईयां शुरू होती है 'किष्किन्धाकांड' में वहां की पहली पंक्ति का पहला शब्द है 'आगे।' राम जब भी चले आगे ही चले। कभी पीछे लौटे ही नहीं। व्यक्ति को चाहिए निरंतर आगे कदम। कोई भी स्थिति में आगे चलो। चलते रहना। मेरा बहुत पुराना, मेरा मीन्स व्यासपीठ का बहुत पुराना विचार, जीवन रेल्वे लाईन नहीं कि समान्तर चलता रहे। जीवन तो है गंगधारा। कितने मोड़ों से गुजरना है! कभी ये घाट तो कभी वो घाट। कभी पानी कम, कभी पानी ज्यादा। लेकिन गंगा बहती रहती है। उसकी पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहती है। जीवन में राम ने हमें सिखाया है आगे बढ़ते रहो, आगे बढ़ो। आगे चले, आगे बढ़े। राम पूरी यात्रा में आगे बढ़ते गये। अयोध्या से निकले कभी पीछे नहीं लौटे। जब अपना लक्ष्य सिद्ध हुआ तब भगवान अयोध्या लौटे, इससे पहले नहीं। 'आगें चले बहुरि', बहुरि मीन्स फिर पुन: आगे और फिर आगे। जो निरंतर आगे बढ़े वो ही भगवान है।

आगें चले बहुरि रघुराया ।

अब फ़र्क देखो। भगवान निरंतर आगे बढ़ते हैं, तो निर्भय है। और सुग्रीव एक जगह ऋष्यमूक पर्वत पर बैठ गया है, तो भयभीत है। बैठा हुआ आदमी भयभीत होगा। कैसी भी स्थिति हो आगे बढ़े वो आदमी निर्भीक होगा। रावण से भी लोहा लेगा। हां, यदि बैठना ही है तो कोई ऐसे बुद्धपुरुष के पास बैठ जाए कि हमारी निर्भीकता में वृद्धि होगी। मेरे युवान भाई-बहन, कोई ऐसा स्थान, कोई ऐसी जगह जहां हमारा अंत:करण हमें कह दे, ऐसी जगह जाकर बैठना कि हम आगे बढ़ते रहे। हमारी अभयता में वृद्धि हो। हम पहले से ही कहीं चूक कर लेते हैं ताकि फिर आगे मुश्किल हो जाती है।

तो बाप! भगवान आगे बढ़ते रहे, आगे बढ़ते रहे। जब तक वो अमरता का लक्ष्य, पूरे ब्रह्मांड में रामराज्य का लक्ष्य, वो प्रेमराज्य का लक्ष्य, वो सेतुबंध का लक्ष्य, वो संवाद का लक्ष्य। तो इस सोपान में 'किष्किन्धाकांड' में हनुमानजी का प्रवेश होता है। वहां से राम और हनुमान का संवाद शुरू होता है। मैं आप से ये भूमिका कह रहा था इस कथा का विषय 'मानस-किष्किन्धाकांड'; क्योंकि एक-एक संवाद, एक-एक कथा का सामान है लेकिन ये नौ संवादों को लेकर कुछ हमारे जीवन को ज्यादा प्रसन्न कर सके। प्रसन्नता ही परमपद है। मुझे खबर नहीं, कौन परमपद है? मेरी दृष्टि में, तलगाजरडा की दृष्टि में प्रसन्नता ही परमपद है। और वो परमपद जहां हो वहां मिल जाय और हम प्रसन्न न हो सके तो घाटे का सोदा है। प्रसन्नता। शायद हमारी प्रसन्नता बढ़े। प्रसन्नता परमात्मा का पर्याय है। जगद्गुरु आदिशंकराचार्य कहते हैं, 'प्रसन्न चित्ते परमात्म दर्शनम्।' प्रसन्न चित्त से हरिदर्शन होते। तो 'किष्किन्धाकांड' को नौ भाग में रखकर संक्षिप्त संवाद मेरी व्यासपीठ आप के साथ करेगी। बीच-बीच में आप के विचार का भी स्वागत करूंगा। नौ दिन आप को कोई काम तो है ही नहीं यहां। बधां बहु कहे के अहीं आ जोवानुं छे, आ जोवानुं छे! हवे आ बधुं जोया पछी शुं? क्या देखने का?

सिर्फ़ दिदार के लिए तेरे कूंचे में घूमते हैं,
आवारगी के लिए तो पूरी दुनिया पड़ी है।

साहब! भटकना ही है तो पूरी दुनिया पड़ी है। लेकिन आनंद आता है।

पोथीने परतापे क्यां क्यां पूगिया!

प्रत्यक्ष प्रमाण है। हां, साहब! रामकथा के साथ मैं, आप, जो-जो श्रोताओं के रूप में, किसी रूप में जुड़े हैं वो सब पोथी के प्रताप से ही पहुंचे हैं। ये तो बहुत महत्त्व की बात है। आ पाछी उड़ान एवी के अकस्मात न थाय, फ्यूल ना खूटे के इमरजन्सी लेन्डिंग करवुं पडे एवुं क्यारेय न थाय! आ उड़ान एवी छे साहेब! क्यारेय अकस्मात थाय ज नहीं। ऐसी एक उड़ान के लिए हम घूम रहे हैं। फिर एक बार नौ दिन हम यहां इस बातों को लेकर आगे बढ़ेंगे। तो ये थी भूमिका। तो बाप! गोस्वामीजी ने 'किष्किन्धाकांड' को काशी का दर्जा दिया है। ये काशी है। हम नौ दिन काशी में निवास कर रहे हैं। शुरू करते हैं काशी क्षेत्र के वर्णन से। इस धरती पर मुक्ति की जन्मदाता जो भूमि है ऐसी काशी।

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर।

जो ज्ञान की खान है। 'अघ हानि कर।' पाप को नष्ट करनेवाली है।

जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न।।

जहां शिव और भवानी बिराजित है। जीव, तू ऐसी काशी का सेवन क्यों नहीं करता? और फिर काशी के सेवन की गति हमारी बढ़े। तो ये कहा कि तू ये भी सोच, सुरासुर ने जब समुद्रमंथन किया और विष निकला तब पूरी दुनिया जलने लगी। सभी देवता जलने लगे, भागो, बचाओ! ऐसे मौके पर विषम से विषम हलाहल विष का जिस महादेव ने पान किया। हे मन! तू ऐसे शिव का भजन नहीं करता? तो काशी और काशीपति का स्मरण किया आरंभ में और फिर 'किष्किन्धाकांड' की ये पहली पंक्ति ये केवल भूमिका के रूप में।

आप जानते हैं, 'मानस' के सात सोपान है। 'बालकांड', 'अयोध्याकांड', अरण्यकांड', 'किष्किन्धाकांड', 'सुन्दरकांड', 'लंकाकांड', 'उत्तरकांड।' एक अर्थ में कहूं तो आगे के छ: सोपान में समस्याएं है। सातवां सोपान 'उत्तरकांड' ये समाधान है। उसके बाद कुछ नहीं बचता। 'पायो परम बिश्रामु।' एक डकार, एक तसल्ली प्रगट होती है। तो सात सोपान का ये शास्त्र है 'रामचरित मानस।' इसमें चौथा फेरा लगाने के लिए हम अबू धाबी आये हैं। लोग शादी के लिए बाहर नहीं जाते? रहते हैं भावनगर में और गोवा में जाकर शादी करते हैं। रहते हैं गोवा में तो दुबई में जाकर शादी करते हैं। रहते हैं दुबई में और जाये मस्कत शादी करने को। ऐसे हम लोग शादी के लिए आये हैं। लेकिन किससे ब्याहना है? वो परमतत्त्व को ब्याहना है। तो ये चौथा सोपान जो है 'किष्किन्धाकांड' का। इस कथा में हम जिसका आश्रय कर रहे हैं उसमें हम जुड़ सकते हैं, संलग्न हो सकते हैं।

तो सात सोपान में संपादित ये 'रामचरित मानस' में कद में, विस्तार में 'बालकांड', 'अयोध्याकांड' बड़े हैं। 'लंकाकांड' भी थोड़ा बड़ा है, 'उत्तरकांड' भी है। प्रमाण में 'अरण्यकांड' छोटा है। 'सुन्दरकांड' छोटा है। 'किष्किन्धाकांड' सब से छोटा है। तीस दोहा। एक मास पारायण का विश्राम। एक प्रवाही परंपरा का निर्वहन करने में मुझे आनंद रहता है, इसलिए इसका परिचय केवल ग्रंथ परिचय। पहला सोपान जो 'बालकांड' है, जिसको वाल्मीकि का शब्द लेकर 'कांड' कहते हैं। यद्यपि तुलसी ने 'कांड' शब्द का उपयोग नहीं किया। फिर भी उसको हम कांड कहने के आदती है। तो पहला सोपान जो 'बालकांड' है उसका मंगलाचरण गोस्वामीजी करते हैं तब सात मंत्रों में करते हैं। संस्कृत मंत्रों में तुलसी ने मंगलाचरण किया है। पहला मंत्र जहां से गोस्वामीजी 'रामचरित मानस' का आरंभ करते हैं-

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

पहले मंत्र में वाणी और विनायक की वंदना की। दूसरे में शिव और पार्वती की वंदना की। तीसरे मंत्र में त्रिभुवन गुरु के रूप में महादेव की वंदना की गई। आगे सीता-रामजी की वंदना की गई। हनुमानजी और वाल्मीकि की वंदना की गई। लेकिन आख़िर में स्वान्त: सुख के लिए मैं इस कथा को भाषाबद्ध कर रहा हूं, ऐसा संकल्प करते हुए तुलसी ने

मंगलाचरण किया। उसके बाद बिलकुल ग्राम्यगिरा में, लोकबोली में तुलसी को उतरना था। श्लोक को लोक तक पहुंचाना था। इसलिए तुलसी ने लोकबोली में ये शास्त्र की रचना की है। पांच सोरठें लिखे हैं। पंचदेवों की पूजा की। एक संकेत किया कि सनातन धर्मावलंबीओं को चाहिए पंचदेव की पूजा। ये पंचदेव की पूजा है। पंचदेव है गणेश, सूर्य, दुर्गा, भगवान विष्णु और भगवान महादेव। ये पंचदेवों की हम सनातन धर्मावलंबी लोग पूजा करते हैं। जो हमारे आचार्यचरण जगद्गुरु शंकराचार्य का आदेश रहा। तुलसी ने इस शैव मत को शास्त्रों में प्रथम रख के एक सुंदर समन्वय किया; एक सुंदर संवाद किया; सेतुबंध किया।

तो पांच देवों की पूजा की बात आई। व्यासपीठ कहती रहती है। गणेश की पूजा तो हम करते हैं। पूरा पंद्रह दिन चलती है। अनंत चतुर्दशी तो कल ही गई। पूरा हुआ गणेश विसर्जन लेकिन मैं कल गुजर रहा था तो रास्ते के बीच में हनुमान का मंदिर था। मैंने गाडी थोड़ी धीरे करवाई। उस हनुमान का नाम था कष्टभंजक हनुमान। मैंने कहा, रोड़नी वच्चे होय ए कष्टभंजक कहेवाय के कष्टदायक? आने कष्टभंजक हुं न कहुं! शरणागति है हनुमंत चरणों में लेकिन कौन माने? वैसे गणेश के उत्सव को मनाओ। अगली साल तक सोचो। बाकी गणेश विसर्जन में जो युवान लोग मरते हैं वो सह्य नहीं। विघ्नहर्ता का नाम हम बदनाम कर रहे हैं। विघ्न क्यों आता है? हमारी चेष्टाओं के कारण। ये क्या पागलपन है? गणेश की पूजा करनी ही चाहिए। गलीगली, घरघर में हो और एक विचार तो देश में ये भी चला कि मिट्टी का गणेश बनाओ। ये विचार अच्छा मुझे भी लगा। और विसर्जन भी अपने आंगन में करो। उसमें तुलसी का पौंधा रोपो। ये अच्छा विचार है, मुझे अच्छा लगा। खैर! समय लगेगा। लेकिन जो हो, उत्सव की कोई मना नहीं करना चाहिए। ये तो उत्सवप्रिय देश है हमारा। लेकिन ये घेलछा में युवक लोग डूब जाते हैं वो सह्य नहीं लगता। गणेश की पूजा करना मेरे भाई-बहन, अपने विवेक की पूजा करना। और विवेक गणेश चतुर्थी के दिन एक ही दिन नहीं होना चाहिए। जिंदगीभर होना चाहिए। और इस गणेश का विसर्जन आप कर सकते हैं। विवेक का विसर्जन कभी मत होने देना। विवेक का विसर्जन हो रहा है उसका क्या? बड़े-बड़े नगरों में तो गणेश की पूजा होती है और रात में फिर जो जलसे होते हैं! अल्लाह बचाए! ये पीना, मस्ती ये सब क्या? देवताओं की मजाक किये जाते हैं! आप युवापीढ़ी बाज आये इससे। प्रतिक्षण विवेक ये गणेशपूजा है। उजाले में रहने का संकल्प ये सूर्यपूजा है कि जहां तक मेरी सावधानी होगी मैं प्रकाश में जीऊंगा। मूढ़ता में नहीं। ये हो गई सूर्यपूजा। सूर्य अर्घ्य। मेरे विचार मैं विशाल रखूंगा वो हो गई विष्णुपूजा। विशालता, संकीर्णता नहीं। और मेरी श्रद्धा कभी टूटने नहीं दूंगा वो हो गई दुर्गापूजा। गुणातीत श्रद्धा, मौलिक श्रद्धा। अंधश्रद्धा नहीं और अश्रद्धा भी नहीं। श्रद्धा तो होनी ही चाहिए।

हमारी परंपरा में हमने सब से पहले गणेश की स्थापना की है। उसका मतलब है विवेक विचार की पहली स्थापना होनी चाहिए। और एक बार विवेक विचार की स्थापना हो जाये तो उत्सव अति आनंद देगा। उसमें घेलछा नहीं होगी, उसमें दुर्घटनाएं नहीं होगी। उसमें गलत चमत्कारों और गलत परचे कुछ नहीं चाहिए। गणेश की पूजा होनी ही चाहिए लेकिन विवेक विचार छूट न जाये। विवेक बुद्धि का विसर्जन न हो जाये। तो विशाल दृष्टिकोण विष्णुपूजा। गुणातीत श्रद्धा दुर्गापूजा। विवेक गणेशपूजा। उजाले में रहने का शिवसंकल्प सूर्यपूजा। और दूसरों का कल्याण हो, दूसरों का शुभ हो वो शिवपूजा; वो महादेव की पूजा। तो पांच सोरठें में पंचदेव की बात की और तुलसी कहते हैं, मेरे लिए तो ये पांचों मेरे गुरु में आ जाते हैं इसलिए-

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।

गुरुवंदना गोस्वामीजी ने शुरू की। बार-बार व्यासपीठ ने कहा है, समझ आ जाये, गुरुगम मिल जाये, गुरु के घर का कोने कोना समझ में आ जाये तो गुरु ही सूर्य, विष्णु, गुरु ही शिव है, गुरु ही दुर्गा, गणेश है। अवश्य। ओल इन वन। एक में सब समाहित है। शिवपूजा; शिव मानी विश्वास, पार्वती मानी श्रद्धा। जिसकी श्रद्धा कोई कुंठित न कर पायें। जिसके भरोसे का कोई भागाकार न कर सके। तो बाप! गुणातीत श्रद्धा ये दुर्गापूजा है। दूसरों का शुभ हो।

खुशी देजे जमानाने मने हरदम रुदन देजे।
अवरने आपजे गुलशन मने वेरान वन देजे।

खुदा तुझने विनंती आटली छे आ नाज़िरनी,
कमळ बिडाय ए पहेलां भंवरने उड्डयन देजे।

दूसरों का शुभ हो ये शिवपूजा है, निरंतर शिवपूजा है। लेकिन गुरु में सब आ जाता है। कोई गुणातीत बुद्धपुरुष मिले तो समझो ये दुर्गा है। ऐसी श्रद्धावाला आदमी जिसमें कभी विवेक कुंठित न होता हो तो समझो गणेश है। गुरु विवेकसागर, समझो ये बुद्धपुरुष गणेश है। मूढ़ता में कभी जीओ ना। जहां तक संभव हो होश में जीए, प्रकाश में जीता हो, समझना ये गुरु भास्कर है। ये सूर्य है। दूसरों के लिए ही जिसका जीवन चलता हो पर कल्याण के लिए समझना ये शिव है। और जिसकी विचारधारा संकीर्ण नहीं है, समझना वो विष्णु है। गोस्वामीजी पांच देवों की वंदना करने के बाद-

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

गुरुदेव के चरणकमल की मैं वंदना करता हूं। गुरु के चरणकमल, गुरु के चरण की नख ज्योति, गुरु के चरण की रज और गुरु की चरणपीठ ये चार की अध्यात्म में पहुंचे हुए बुद्धपुरुष की शरणागति में बहुत बड़ी महिमा है। एक तो उसके चरणकमल यानी असंग हो दूषित न हो। कमल की तरह जलकमलवत् जिसका आचरण, चरणकमल, चरणरज आख़िरी अंश जो हमारे जीवन को कृतकृत्य कर दे। ऐसी चरणरज की गुरु परंपरा में महिमा है। तीसरा है गुरुचरण की नखज्योति। उसमें व्यक्तिपूजा न आ जाए इसको मैं सावधान करके चलूं। उसका आध्यात्मिक अर्थ लेना चाहिए। व्यक्ति पूजा के रूप में नहीं। उसके नख की ज्योति हमारे भीतरी अहंकार का नाश करती है। इसका सिमरन करने से दिव्य दृष्टि होती है। ऐसा शास्त्र कहता है। गुरु की चरणपादुका, ये सब की अपनी अपनी महिमा है। तो गुरुचरण पादुका, गुरुचरणरज, गुरुचरण नखज्योति, गुरु चरणकमल ये चारों की अपनी अध्यात्म जगत में प्रतिष्ठा है। ऐसे गोस्वामीजी ने गुरुवंदना की। गुरुचरणरज से मेरी दृष्टि को पवित्र करके मैं 'रामचरित मानस' वर्णन करने जा रहा हूं, ऐसा संकल्प गोस्वामीजी ने व्यक्त किया। तुलसी ने सब की वंदना की। सब से पहले ब्राह्मण देवताओं की, उसके बाद साधुचरित लोगों की, उसके बाद साधु समाज की प्रयाग के साथ तुलना करके वंदना की। फिर सब की वंदना करते-करते रघुकुल, जनककुल उसकी वंदना करते-करते श्री हनुमानजी महाराज की वंदना तुलसी करते हैं।

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

श्री हनुमानजी महाराज की वंदना तुलसी ने की। हम भी कर लें 'विनय' के पद की कुछ पंक्तिओं के माध्यम से-

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल अमंगल मूल-निकंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

श्री हनुमानजी को प्राणरक्षक माना गया है। 'मानस' के पंचप्राण की रक्षा श्री हनुमानजी ने की है। एक प्राणतत्त्व श्री हनुमानजी है। और पवन के बिना, प्राण के बिना हम जी नहीं सकते। बिलकुल बिनसांप्रदायिक तत्त्व है श्री हनुमानजी। मैं मेरे श्रोताओं को कहता हूं ये कलियुग है, ये काल ऐसा है कि हनुमान की उपासना कोई तंत्रपरक न करो तो ज्यादा अच्छी बात। हनुमानजी के आश्रय के लिए सौम्य मंत्र का आश्रय करो। शुद्ध सत्त्व-तत्त्व है श्री हनुमानजी मेरी दृष्टि में। और उसकी नितांत आवश्यकता मानी गई। इसलिए पारिवारिक वंदना के बीच में हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजी ने की।

परमात्मा की पूजा करनी है तो आदमी फूल के द्वारा प्रभु से मोहब्बत करता है। कोई जल के द्वारा वजू करे। कोई स्नान करे। किसी से प्रेम करने के लिए कोई माध्यम चाहिए। कोई चिट्ठी लिखे। किसी न किसी चीज से हम अपना प्रेम व्यक्त करते हैं। मुस्कुराहट से, प्रेम से, आंसू से, चिट्ठी से कैसे भी। मैं पूरे विश्व को प्रेम कर रहा हूं कथा के माध्यम से। रामकथा ये मेरी प्रेम करने की विधा है। आप से मेरी ममता है। मोहब्बत है। इसलिए बारबार गाये जा रहा हूं।

हमारी भाषा का पैगम्बर तुलसी है, जो 'मानस' का पैगाम लेकर आया है

बाप, 'मानस-किष्किन्धाकांड', जो 'रामचरित मानस' का चौथा सोपान है, जिसमें कल भूमिका में कहा गया कि मेरी दृष्टि में नव संवाद है। इसका पहला संवाद राम-हनुमंत संवाद है, जो हमारे जीवन के बहुत बड़ी समस्याओं का समाधान है। गौर किया जाये लेकिन इससे पूर्व-

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः।।

'किष्किन्धाकांड' के मंगलाचरण में गोस्वामीजी ने दो मंत्र लिखे हैं। एक मंत्र में भगवान राम का दर्शन और तत्पश्चात् दूसरे मंत्र में इस भगवान के परम पावन नाम का दर्शन। जिन लोगों को तुलसी के काल में कुछ पीड़ा रही कि तुलसी का संस्कृत ज्ञान जरा कमजोर था उसको निमंत्रण दे रहा हूं कि प्रत्येक सोपान के मंगलाचरण को जरा शांति से उसका दर्शन करें। ये तुलसी की करुणा है। मेरी दृष्टि में अस्सी प्रतिशत इस आदमी ने संयुक्ताक्षर को इन्कारा है। वो 'अर्थ' नहीं लिखेगा, 'अरथ' लिखेगा ताकि आख़िरी व्यक्ति तक उसका संकेत पहुंचे। 'वर्ण' के बदले 'वरण' लिखेगा। संस्कृत होगा तो 'वर्णानामर्थसंघानां' करेगा। लेकिन जोड़े हुए शब्दों का उच्चार तुलसी ने नहीं लिखा जानते हुए भी क्योंकि केवल हेतुहीन हेत था। 'विनयपत्रिका' में एक पद है गंगा स्तुति में-

तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुबंस-बीर,
बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका।
जय जय भगीरथनन्दिनि, मुनि-चय चकोर-चन्दिनि,
नर-नाग-बिबुध-बन्दिनि जय जह्नु बालिका।

गंगा के तट पर तुलसी तीर-तीर राम का सिमरन करते-करते घूम रहे हैं। ये केवल गंगा के तट पर नहीं, ये पूरा हिंदुस्तान गंगा है। और हिंदुस्तान के गांव-गांव के पादर में जब प्रिंट की व्यवस्था नहीं थी, 'रामचरित मानस' लोग तक कैसे पहुंचे? उसको कौन छापे? कौन प्रकाशक इसका जिम्मा ले? तब ये अवधूत तुलसी निकला था 'मानस' लेकर हर मोहल्ले, हर गांव, हर मिसहर, हर कस्बा। यहां तीर का मतलब है हर गांव का पादर छाना। एक निवेदन विनोबा भावे के हवाले से करना चाहता हूं। महामुनि विनोबाजी का हवाला दे रहा हूं। आपने कहा है कभी कि कुरान में ऐसा कहा है कि मैं हर एक भाषा को जाननेवाले के लिए एक-एक पैगम्बर भेजता हूं। हे आरब भाई-बहन, मैं तुम्हारे लिए, मोहम्मदसाहब कहते हैं, आपकी बोली में खुदा का मेसेज लेकर आया हूं। अरबी भाषा और वहां पवित्र कुरान का निवेदन विनोबाजी के द्वारा, प्रत्येक भाषा को एक-एक पैगम्बर मिला है। इसमें हिंदी, लोकहिंदी, भोजपुरी हिंदी, अवधि हिंदी, तलगाजरडी हिंदी, उसका पैगम्बर गोस्वामी तुलसीदास है। ये उसका पैगाम लेकर आया है।

साहब! एक समय था हिन्दुस्तान में 'भगवद्गीता' कौन जाने देहाती लोग! ये तो बाद में कोर्ट में 'भगवद्गीता' आई लेकिन हार्ट में तो 'रामचरित मानस' आई। और ध्यान दो 'विनय' का पद है। तुलसी कहां-कहां घूमे हैं? हिन्दुस्तान का सनातन धर्मावलंबियों का कोई घर खाली नहीं था तुलसी के पौधे के बिना। जिसके घर में तुलसी का पौधा देखा और गोस्वामीजी वहां 'मानस' लेकर गया। इसी तरह प्रचार-प्रसार हुआ। इसी तरह गांव-गांव, कस्बे-कस्बे तक 'रामचरित मानस' का प्रचार और लोकहृदय में इस शास्त्र की स्थापना करने के लिए तुलसी ने जोड़ाक्षर को छोड़ा। फिर एक बार विनोबा का एक वक्तव्य ओर स्मरण में आ रहा है। विनोबाजी ने कहा कि भारत में यदि बुद्ध के बाद किसी एक व्यक्ति का आध्यात्मिक साम्राज्य रहा हो तो वो गोस्वामीजी तुलसी थे; बुद्ध के बाद, तथागत बुद्ध के बाद। बुद्ध को हमने निकाल भी दिया, चलो, क्योंकि हमारी मूल बातों पर उसने थोड़ा प्रहार किया और मूल बातें भी हमनें मूढ़ता के कारण पकड़ रखी तो

हमने बुद्ध को देश निकाल दे दिया। बुद्ध के विचार विदेश में बहुत गए। जपान ने किसी घर में आप बूट पहनकर पैर नहीं रख सकते, क्योंकि जपानी मानते हैं कि प्रत्येक घर मंदिर है। ये बुद्ध प्रभाव है। मंदिर बनाने नहीं पड़ते। खाली थोड़ा रिनोवेशन करो। घर को ही मंदिर बनाओ। मेरे पास शुरू-शुरू में बहुत लोग कहते थे कि बापू, आपको इतने सुननेवाले हैं। आप अपील करो तो यहां मंदिर कर सकते हैं, यहां कर सकते हैं। मंदिर होने चाहिए। जो कर रहे हैं सब प्रणम्य है। लेकिन मैं कहता था कि मेरा काम मंदिर बनवाना नहीं है। मेरा काम तो जहां जो आदमी रहता है उसी घर को मंदिर का रूप देना है। मंदिर हो और उसमें शराब पी जाए तो! मंदिर हो और उसमें जीव की हत्या की जाए तो! मंदिर हो और नर बलि, पशु बलि, अश्व बलि, गौ बलि तक बलि दिया जाए तो! मंदिर हो और छल-कपट का नेटवर्क बनाया जाए तो! बेटर है घर मंदिर हो। रावण की लंका में मेरा हनुमान घूमता है तो मंदिर ही मंदिर देखता है।

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा।
देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।

मंदिर में योद्धा देखे! योद्धा हो वहां परोक्ष-अपरोक्ष युद्ध होता ही है। मंदिर में तो बुद्धा होना चाहिए। सब को सोये पाया मंदिर। एक भवन देखा हनुमानजी ने। मंदिर है छोटा-सा। लेकिन बिलग है। तुलसी का पौधा लगा हुआ है आंगन में। रामायुध अथवा तो रामनाम अंकित भवन है, गृह है। श्री हनुमानजी महाराज सोचते हैं कि पूरी लंका के मंदिर में योद्धा सोये हैं! इसमें जानकी नहीं है। शायद इस भवन से जानकी की खबर मिल जाये। मंदिर से तो भक्ति का पता नहीं मिला, शायद भवन से मिल जाये। और रावण भी भवन और मंदिर का भेद समझता था। रहता है तो बड़े-बड़े आलीशान प्रासादों में रावण, अवश्य। मंदिरों की महिमा है, अवश्य। लेकिन घर को मंदिर बनाओ। घर ही मंदिर है। फिल्म के एक गीत में तो लिखा है, 'दिल एक मंदिर है, प्रेम की जिसमें होती है पूजा।'

तो मेरे कहने का मतलब तुलसी संस्कृत के प्रकांड विद्वान रहते हुए लोकमंगल की यात्रा उसकी थी। लोगों तक जाना था। आख़िरी आदमी तक बात जानी चाहिए साहब! ये बहुत अद्भुत काम है! संस्कृत में तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' लिखा होता तो शायद अपनी भी हिम्मत नहीं थी, मोरारिबापू की भी नहीं। हर एक भाषा में परमात्मा का संदेश देनेवाला कोई न कोई पैगम्बर आता है। हमारी भाषा का पैगम्बर तुलसी है, जो 'मानस' का पैगाम लेकर आया है। तुलसी के काल में कई लोगों को तकलीफ़ थी! आज भी कई लोगों को तकलीफ़ है! और अब तुलसी नहीं है तो मेरे साथ लड़ते हैं! कोई तो चाहिए! मैंने कहा कि मैंने क्या कसूर किया है? बाबा को पूछो, वहां जाओ! मेरा तो इतना ही निवेदन है कि कम से कम मंगलाचरण के मंत्रों को पंडितगण देखें, राजी होंगे। लोकविद्या तो संस्कृत के पास भी है। संस्कृत में भी पुराने लोकगीत है और आज नये-नये संस्कृत के विद्वान संस्कृत में लोकगीत लिखने का स्तुत्य प्रयास भी कर रहे हैं, स्वागत है। बाप! और मैं तो कुछ चौपाइयां भी खोज रहा हूं कि ये तो संस्कृत भाषा के लिए जो निशानी देनी चाहिए वो केवल तुलसी ने नहीं दी, बाकी चौपाई संस्कृत में ही है। बाकी कई चौपाई मैं ऐसी खोज रहा हूं मेरी अक्ल के अनुसार गुरुकृपा से कि जो केवल संस्कृत ही है लेकिन लगती है अपनी लोकबोली। इसको थोड़ा संस्कृत का टच दिया जाए तो ये संस्कृत में है। कोई परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा।

'सीतान्वेषणतत्परौ', कौन है देवता? इस्लाम धर्म कहता है, मोहम्मदसाहब कहते हैं कि मैं केवल दूत हूं, पैगाम देने आया हूं। अल्लाह तो केवल एक ही है, परमात्मा एक ही है, ईश्वर तो एक ही है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है। मुझे भगवान मत बनाना। मैं अल्लाह का पैगम्बर हूं। ऐसे हम भी तो कहते हैं, 'राम समान प्रभु नाहीं कहूँ।' राम के समान कोई ईश्वर नहीं। हम तो उसका पैगाम दिए जा रहे हैं सब। इन्सान को भगवान मत बना देना। ईश्वर तो है परमतत्त्व। कैसा है राम? 'सीतान्वेषणतत्परौ'; सीता की खोज के लिए जो तत्पर है। इसका मतलब है हमारी बुद्धिरूपी सीता को कोई न कोई मोहरूपी रावण अपहरण करके ले गया है और इसी बौद्धिक, इस प्रज्ञा का बल हमें फिर प्राप्त हो इसलिए जो हमारी बुद्धि की तलाश में हमें मदद करता है। ऐसा है 'सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ।' हमारे लिए ये पैरों से बिना जूते चल रहा है। 'भक्तिप्रदौ तौ हि नः।' और हमारी भूली हुई भक्ति को प्राप्त करा देते हैं। जो हम लुट गए थे उसको प्रस्थापित कर दिया। राम ऐसे सुन्दर है। 'वरधन्विनौ', श्रेष्ठ धनुष बाण लेकर। विज्ञान हो तो श्रेष्ठ होना चाहिए, शस्त्र हो तो वर-श्रेष्ठ होना चाहिए क्योंकि श्रेष्ठ को एक जिम्मेवारी आ जाती है कि वो किसी को मारे ना, किसी को परेशान ना करे।

इस कथा का कलवाला एक वाक्य याद रखो, बापा ने भी अंग्रेजी में बता दिया सोओ तब संतोष से सोओ। जागो उत्साह से जागो। कोई तिलक करने की जरूरत नहीं। कोई माला करने की जरूरत नहीं। करो तो अच्छी बात है। पर तुम माला फेरे और कहो मर गए, मर गए! बहुत ज्यादा सोचती है आज की युवानी। जब से सुना है, उसी क्षण जीवन सुधार लो। देर मत करो। आप कहे कि बापू, आप ये सब करते हैं? मेरी बात छोड़ो। मैं तुम्हें पते की बात कहता हूं। मेरे सत्तर साल हो गए। अब कुछ पता नहीं हमें! तुम्हें अभी बहुत जीना है मेरे बाप! अभी तो माँ की गोद से बाहर निकले बापू, बापू, बापू करते हैं ये जो आप की श्रद्धा है इस श्रद्धा के लिए मैं आप को प्रार्थना करता हूं। बहुत लंबी जीवनी जीनी है। तो बहुत आप सोचते रहते हैं। मैं तो जितने लोगों को देखता हूं तो विचार में ही देखता हूं! ट्रेन इधर जाती हो तो वो उधर जाता हो! खबर नहीं, कहां जा रहा है! समझो। और मेरे भाई-बहन, अकारण जो ज्यादा विचार है उसका प्रमाण सद्व्यक्ति के संग से, सद्तत्त्व के सुमिरन से और सद्ग्रंथ के वाचन से कम होता है। अच्छा पढ़ो। दिमाग को कोई क्रिएटिव-कोई रचनात्मक कार्य में लगाओ। तो मेरा कहने का मतलब कोई भी वस्तु शुभकारक हो उसके लिए हमारा चिंतन होना चाहिए।

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिन: पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।

'किष्किन्धाकांड' के मंगलाचरण के दूसरे मंत्र में प्रभु के नाम की महिमा का गायन है। कैसा है ये नाम? 'संसारामयभेषजं', संसाररूपी रोग का औषध है। 'आमय' का अर्थ है रोग, 'निरामय' का अर्थ है रोगमुक्ति। प्रभु का नाम कैसा है? संसार के रोगों का औषध है। 'सुखकरं', औषधि कैसी है? सुखद है, स्वादु है, कटु नहीं है। 'सुखकरं श्रीजानकीजीवनं', गोस्वामीजी कहते हैं, जानकी का जीवन ऐसा है। 'धन्यास्ते कृतिन: पिबन्ति सततं रामनामामृतम्।' जो शंकर भगवान के सुंदर मुख में निरंतर निवास करता है; श्रीमद् शंभु उसके मुख में कायम निवास करता है।

तुम पुनि राम राम दिन राती।

कुल मिलाकर मुझे इतना ही कहना है, मंगलाचरण में, पहले मंत्र में रामदर्शन; दूसरे मंत्र में रामनाम का दर्शन। फिर लोकबोली में तुलसी उतरते हैं तुरंत मंगलाचरण के बाद-

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न।।

कल उसका उच्चारण हो चुका। काशी क्षेत्र का स्मरण किया है और-

जरत सकल सुर बृंद बिषम गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस।।

तुलसी अपने मन को कहते हैं, हे मन्दमन, तू ऐसे शिव को क्यों नहीं भजता? उसके समान कृपालु कौन है? दाता कौन है? 'रामचरित मानस' में पांच देव है जो मैंने वरण किये। देवताओं से मेरी बनती नहीं लेकिन मैंने निकाले। एक तो है रामदेव, मेरा राम, राघव राम। एक तो रामदेव है। दूसरा

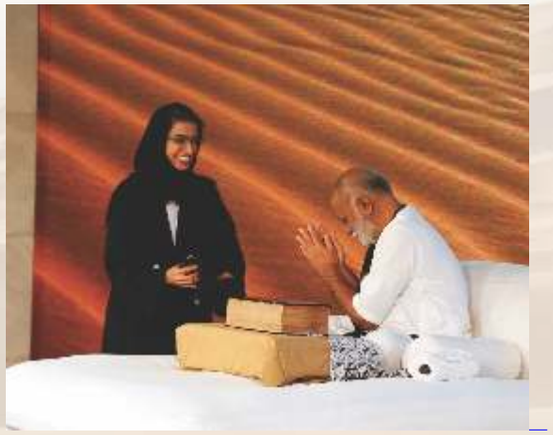

नामदेव, 'धन्यास्ते कृतिन: पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।' प्रभु का नाम। और तीसरा कामदेव। लाख गालियां दो, वास्तविकता को ठुकरा नहीं सकोगे। तुलसीदासजी ने इतना कामदेव का वर्णन 'मानस' में किया है। ये देव है। मैं जब काम पर खजुराहो में बोला, कोणार्क में बोला। अभी कहीं एक बार ओर बोलना है अल्लाह करे, कामदर्शन। तुलसी के आधार पर काम देव है। मेरी व्यासपीठ ने कहा था, आज तक किसी ने क्रोध देव नहीं कहा। लोभ देव नहीं कहा लेकिन काम को हमने देव की पदवी दी है। कामदेव वो भी एक देव है। और सब के पास एक गुरु होता है उसको भी हम गुरुदेव कहते हैं। ये तो वर्गीकरण है बाकी सब से बड़े से बड़ा देव तो वो है महादेव है। जिसके पास हो वो दे तो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन जिसके पास कुछ भी न हो लेकिन भृकुटि भंग से आश्रित जो चाहे वो भर दे ऐसा कोई विश्व में है वो महादेव है। शंकर के पास कुछ नहीं है। उसके घर की तलाश ली जाए तो सात वस्तु मिलती है। आठवीं वस्तु नहीं मिलती है! गंधर्वराज पुष्पदंत एक शब्दप्रयोग करता है 'महिम्न' में 'तंत्रोपकरणम्।' उसके घर का तंत्र सात उपकरण में कैसे चलता होगा! सात मंत्र शंकर के उपकरण। घर में सात चीज, आठवीं चीज नहीं लेकिन दे तो खबर नहीं क्या नहीं देता!

महोक्ष: खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिन:
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।।

'महोक्ष:।' पहला उपकरण है शंकर के घर का महोक्ष। महोक्ष मानी बैल। महोक्ष उसको कहते हैं, बूढ़ा बैल जो किसी काम में ना आये। शंकर उसका उपयोग करते हैं। ऐसा वाहन महोक्ष:। खट्वांगं एटले खाटू खाट सभा। शंकर के घर में विश्राम करने चारपाई नहीं, खाट नहीं थी बल्कि खट्वांग, खट्वांग का अर्थ है खाटलानुं एक ज अंग; एक ज पायानो खाटलो। ये क्या होता है? एक पाये की खाट ये तो हमारा महादेव ही करता है। परशु; तीसरी चीज परशु। अब शंकर तो धूर्जटि है, वन प्रिय है, उसको वन में घूमना है, इधर-उधर जाना है तो हथियार तो चाहिए। कोई जाडी झांक रहे हो तो उसको रास्ता करने के लिए शंकर के पास एक परशु था, एक कुहाड़ा था। ये त्रिशूल और शंकर का धनुष ये तो शंकर की शोभा है। बाकी मूल गंधर्व ने जो देखा उसमें तो है परशु। 'रजिनं' मानी वस्त्र। या तो व्याघ्र चर्म, मृग चर्म या तो दिशा का वस्त्र। 'भस्म'; भस्म लेपन उसका शृंगार। 'फणिन:'; शृंगार सर्प। बाहर जाये तो लोग सुंदर कपड़ा पहन ले, कोट पहन ले, टोपी बराबर पहन ले, माला बाहर रखे और शंकर बाहर जाए तो फणिन:। बाहर जाना है, कुबेर के घर जाना है तो सर्प रखते हैं। 'कपालं'; खाने के लिए बर्तन तो चाहिए, कांसा चाहिए। कपाल खोपड़ी पात्र है। 'भवद्भूप्रणिहितां'; गंधर्वराज कहता है कि तेरे पास कुछ नहीं लेकिन तेरी भृकुटि के इशारे से जो-जो भी मांगेगा, तू उसको इतना देता है। 'स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।' जो अपने आत्मा में ही प्रसन्न रहता है। उसके पास उपकरण में कुछ नहीं होता लेकिन दुनिया को मालामाल कर देता है। 'चपटी भभूत में हैं खजाना कुबेर का।' तो महादेव समान कोई देव नहीं।

मैं इतना ही कहकर आगे बढ़ूं कि शंकर को कोई भजो नहीं तो कोई चिंता नहीं लेकिन शंकर की निंदा मत करना। कृष्ण को भजो; राम को भजो लेकिन अद्भुत परम तत्त्व है महादेव। शिव मानी शिव। उसके समान कौन है? और तुलसी को चौथे सोपान 'किष्किन्धाकांड' में काशी और शंकर की याद आई क्योंकि काशीपति शंकर वानर के रूप में 'किष्किन्धाकांड' में प्रवेश करनेवाला है। हनुमान के रूप में काशीपति तो है शिव। 'वानराकार-विग्रह पुरारी।' ऐसा तुलसी का वक्तव्य है। तो शिव की इस तरह महिमा का गायन किया। बाकी शिव शिव है, इतना तो आप समझ लो। अद्भुत है! एक बार 'मानस-महिम्न' करूं। महिम्न स्तोत्र अद्भुत है साहब! शंकर के समान कृपालु कौन है? इसके समान कृपा बरसानेवाला कौन है? इसके बाद तुलसीदासजी 'किष्किन्धाकांड' चौपाईओं में शुरू करते हैं तब 'किष्किन्धाकांड' की ये पहली पंक्ति जो हमने इस कथा की भूमिका में रखी-

आगें चले बहुरि रघुराया।
रिष्यमूक पर्बत निअराया।।

भगवान राम पंपा सरोवर से आगे बढ़े। 'अरण्यकांड' की कथा आप जानते हैं। पंपासरोवर के तट पर 'अरण्यकांड' पूरा कर दिया गया है। एक तो शबरी के पास जाने का संकेत भगवान राम को मिला था कि आप शबरी के पास जाओ और फिर शबरी ने संकेत दिया कि आप आगे बढ़ो और सुग्रीव से मैत्री करो। तो इस शबरी के वचन पर परमात्मा आगे यात्रा कर रहे हैं और ऋष्यमूक पर्वत के निकट आ गए राम। बड़ा सुंदर ऋष्यमूक पर्वत है। गोस्वामीजी कहते हैं, वहां कौन रहता है? 'तहँ रह सचिव

सहित सुग्रीवा।' अपने मंत्री परिषद के साथ सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। 'मानस' के आधार पर उसके पास एक ही सचिव है और वो सचिव का नाम है हनुमानजी। मेरे भाई-बहन, ओर सचिवों को तो पगार देना पड़ता है, छुट्टियां देनी पड़ती है, टी.ए.-डी.ए. देना पड़ता है, जो-जो लाभ मिलते हो ये सब देना पड़ता है और फिर भी सचिव सच्चा-झूठा स्वामी के कान में क्या डाले अल्लाह जाने! सचिव करो जीवन का तो हनुमान जैसा सचिव होना चाहिए। 'रामायण' में कुछ आध्यात्मिक सचिवों की ओर संकेत किया है। सच्चा सचिव हरि तक पहुंचा देता है। 'रामचरित मानस' में ऐसे दो सचिव जो आध्यात्मिक सचिव है उसकी बात आई है। मैं आप को केवल संकेत करके आगे बढ़ूं।

सचिव बिरागु बिबेकु नरेसु।
बिपिन सुहावन पावन देसू।।

कामदगिरि का वर्णन जब गोस्वामीजी करते हैं तो कहते हैं कि चित्रकूट के नरेश हैं उसका सचिव कौन है? 'बिराग', और इस प्रदेश कामदगिरि का राजा कौन है? विवेक उसका राजा है। राज्य क्या है? 'बिपिन सुहावन', सुंदरवन से उनका पावन राष्ट्र है। तो वैराग्य सचिव है। सुग्रीव का सचिव कौन है? हनुमान। हनुमान वैराग्य का घनीभूत स्वरूप है। उसके समान वैरागी कौन? और गोस्वामीजी तीरथराज प्रयाग की जब चर्चा करते हैं तब मेरे गोस्वामीजी ने एक दूसरे आध्यात्मिक सचिव की नियुक्ति की।

सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी।
माधव सरिस मीतु हितकारी।।

आध्यात्मिक एक सचिव का नाम गोस्वामीजी ने दिया है सत्य। सुग्रीव के पास जो सचिव है वो वैराग्य हे। विभीषण के पास जो है वो सत्य है। 'रामु सत्य संकल्प प्रभु।' उसका सत्य जितना भी है वो राम रूपी परम सत्य की ओर उसको खींचे जा रहा है।

मेरे भाई-बहन, ये तो कथा है। ये प्रसंग है। हमारे जीवन में भी यदि हम बहुत भयभीत रहते हैं। यदि हम किसी से प्रताड़ित है, क्योंकि जीवन है, कई प्रकार की उलझनें है। इसलिए गोस्वामीजी ने 'किष्किन्धाकांड' में विष का वर्णन किया, 'बिषम गरल जेहिं पान किय।' क्या मतलब था? 'बिषम गरल' का अर्थ साकेतवासी पंडित रामकिंकरजी महाराज कहते हैं कि 'बिषम गरल' बिषम विष-जहर शिव ने पीया। शिव के अंश के नाते हमें भी तो विषम गरल पीना पड़ता है। हम सब को अपनी-अपनी प्रोब्लेम होती हैं तब किंकरजी महाराज का अर्थ बड़ा सहायक होता है। आपने कहा कभी कि जीवन में आती विषम परिस्थिति ही विष है। वास्तविक अर्थ है। इसके बिना सूत्र ठीक से जीवन के लिए उपयोगी नहीं बन सकता। हम सब विष नहीं पीते हैं लेकिन विषम परिस्थिति का पान हम सब कर रहे हैं। किसी को कोई प्रोब्लेम, किसी को कोई प्रोब्लेम, किसी को ये, किसी को आर्थिक, किसी को फलां, किसी को कुछ। प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रोब्लेम्स होते हैं। और जीवन में आनेवाली विषम परिस्थितियां ही विषपान है। विष पीना ही पड़ेगा। और जीवन में विषम परिस्थिति ना आये ना तो भजन कितना पका इसका पता नहीं चलेगा। ये ईश्वर कसौटी डालता है कि तेरा भजन परिपक्व हुआ कि नहीं। इसमें से गुजरना पड़ता है। जैसे-जैसे भजन करो और विषम परिस्थिति आये तो नासीपास मत होना। समझना चाहिए कि फल पकने की तैयारी है। भजनानंदियों को विपत्ति आएगी। ये पक्का है। ये कसौटी है। उसका एक आनंद होता है।

कुछ विपत्तियां अपने स्वभाव के कारण आती है। विपत्तिओं को पैदा करने के चार केन्द्र बिंदु है। अब आप ठंड़े मुल्क में रहते हो ज़िदगीभर और गरम मुल्क में जाओ तो देश के कारण आप को विपत्ति आई है कि आप को गर्मी लग रही है; बहुत ताप लग रहा है। ये विपत्ति का कारण देश है। एक विपत्ति का कारण काल होता है, समय। हिमालय में आप गर्मी की ऋतु में जाओ तो तकलीफ़ नहीं, लेकिन ऐसा समय पसंद करके जाओ तो कष्ट होगा। वहां काल कारण बना है विपत्ति का। तीसरा कारण है गुण। अपना रजोगुण कभी विपत्ति का कारण बनता है। अपना क्रोध विपत्ति का कारण बनता है। आख़िरी आध्यात्मिक यात्रा में तो सत्त्वगुण विपत्ति का कारण बनता है। तुम जितने ज्यादा सरल होओगे, समाज ज्यादा सताएगा। तब तुम्हारा सतोगुण तुम्हारी विपत्ति का कारण बनता है। गुण का अर्थ संस्कृत में होता है बंधन, रस्सी। और रस्सी का काम है बंधन करना। साधु पुरुष को दुःख पड़े; तपस्वी को दुःख पड़े; कोई संत को, कोई बुद्धपुरुष को। बुद्ध ने क्या बिगाड़ा समाज का? महावीर ने क्या बिगाड़ा? गांधी ने क्या बिगाड़ा? जिसस ने क्या बिगाड़ा? जिसस जैसा सुकोमल और मासूम व्यक्ति मिलना मुश्किल है साहब! तो गुणों के कारण विपत्ति आती है। लड़का-लड़की की शादी करनी है तो कुंडली मिलाना बहुत बंद करो, स्वभाव मिलाना शुरू करो। कुंडली, कुंडली, कुंडली, कुंडली! हमारे दुःख का कारण गुण है। तुम ज्यादा सरल, ज्यादा सताए जाओगे, ये नियम है। बाप! एक शे'र मैं लाया था। शरफ़साहब का था-

किसी की राह में आंखों को कर लिया पत्थर।
अब इससे बढ़कर भला इन्तजार क्या करता?

किसी की राह में हमने आंखों को पत्थर की तरह जड़ दिया। इससे ज्यादा तो मैं इंतजार क्या करूं? मेरी आंखों फ़र्श पर मैंने जड़ दी। अब तू कहे कि तूने राह नहीं देखी। भक्त कहता है प्रभु, तेरी राह में मैंने मेरी आंखें बिछा दी। इससे बढ़कर मैं इंतजार क्या करता? दूसरा शे'र है-

मेरी तलाश थी यारों फ़क्त वो दो आंखें,
मैं इस जहान की दौलत का शुमार क्यों करता?

मैं इस दुनिया की दौलत गिनती क्यों करूं? मेरी तो तलाश केवल मेरे गुरु की दो आंख थी। मैं दुनिया की दौलत को क्यों गिनूं। आदमी एक दूसरे के स्वभाव को मिलाये अथवा तो स्वभाव न मिलाये तो सहन करे। मेरे पास लोग आते हैं कि बापू, सहन करें तो कब तक? ये कब तक मत पूछो। जब तक जीयो। सहन करने की कोई सीमा नहीं होती; करो, करो, करो! आज इकीसवीं सदी का तप है जानते हुए सहते जाना। तुम सच्चे हो तो भी सहते जाना, सहते जाना, सहते जाना, ये तपस्या है। तो काल के कारण विषम परिस्थिति आती हैं। देश के कारण विषम परिस्थिति आती है लेकिन सब से बड़ी विषम परिस्थिति है स्वभाव, आदमी का स्वभाव। कई लोगों का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है कि तुम लाख अपना सिर पीटो वो ऐसा ही रहेगा! तो विपत्ति के चार केन्द्रबिंदु हैं ये जहां से विपत्ति आती है। और ये विषम परिस्थिति ही विष है। मैं इतना ही कहकर आगे बढ़ूं कि विषम परिस्थिति का विष जब पीना पड़े तो शंकर ने जो विधा अपनाई वो ही अपनाओ। हम शिव के अंश है। शंकर ने राम मंत्र के साथ विष पीया था इसलिए संधि हो गई विष+राम=विश्राम। मेरा कहने का मतलब आपके जो इष्ट देव हो उसका नाम लेकर विषम परिस्थिति में आगे बढ़ो। मैंने इतनी स्तुति की, कुछ नहीं हुआ। नहीं, ये शिकायतें छोड़ो। करते जाओ, करते जाओ। तो विषम परिस्थिति विष है। ऐसे समय में वैराग्य हमारा सचिव हो अथवा सत्य हमारा सचिव हो तो शरणागति पक्की हो जाए।

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा।

यहां जो हम बातें कर रहे हैं वो सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर सचिव के साथ रहता हैं। अतुलित बलशाली दो व्यक्ति को अपने पहाड़ की ओर आते सुग्रीव ने देखा। खुद शिकार पर है दूर से राम-लक्ष्मण आ रहे हैं और देखते ही सुग्रीव को लग रहा है कि ये अतुल बल की सीमा रूप कोई आ रहा है और आदमी घबराने लगा, डरने लगा। अभी राम को पता ही नहीं कि ऊपर कोई रहनेवाला है, कोई है। राम तो जा रहे हैं लेकिन दूर से देखने के बाद सुग्रीव पर जो असर हुई है उसका जिक्र करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं, अत्यंत भयभीत हो गया सुग्रीव! हनुमान! मालिक! ये जो दो पुरुष आ रहे हैं, बल और रूप का भंडार लगता है। इतने दूर से आदमी पहचान लेता है कि इसमें बल बहुत है, उसमें रूप बहुत है।

अति सभीत कह सुनु हनुमाना।
पुरुष जुगल बल रूप निधाना।।

हे हनुमान, ये दो पुरुष कौन आ रहे हैं? जिसमें इतना बल मुझे यहां से दिखता है और रूप सहा नहीं जा रहा है। आप ब्रह्मचारी का रूप लेकर जल्दी जाओ। ये दो कौन हैं? और आप यदि उसको पहचान लो तो मेहरबानी करके मुझे कहने मत आना! कितना भयभीत है आप देखिये! आप जाइये, ये कौन है, संकेत में मुझे बताना। और हनुमानजी ने बराबर अपने मालिक की सूचना का निर्वहन किया है। वो कथा मैं कल सुनाऊंगा।

तुलसी संस्कृत के प्रकांड विद्वान रहते हुए लोक मंगल की यात्रा उसकी थी। लोगों तक जाना था। आख़िरी आदमी तक बात जानी चाहिए साहब! ये बहुत अद्भुत काम है! हर एक भाषा में परमात्मा का संदेश देनेवाला कोई न कोई पैगम्बर आता है। हमारी भाषा का पैगम्बर तुलसी है, जो 'मानस' का पैगाम लेकर आया है। तुलसी के काल में कई लोगों को तकलीफ़ थी! आज भी कई लोगों को तकलीफ़ है! और अब तुलसी नहीं है तो मेरे साथ लड़ते हैं! कोई तो चाहिए!

कथा इच्छा और सामर्थ्य को मिला देती है

बाप! इस भूमि पर आयोजित नवदिवसीय रामकथा के तृतीय दिवस की कथा के आरंभ में पुन: एक बार आप सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम! विशेषकर आज की कथा में हमारे अतिथि के रूप में आये बहनजी जो हमारे भारत की ओर से यहां पदभार संभाल रही हैं। हम सब अपना आदर व्यक्त करते हैं। आगे बढ़ें इससे पूर्व कल सायं काल को इसी सभागृह में एक मुशायरा का आयोजन हुआ। हमारे पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान के कुछ शायरगण आये थे। अपने खुद के उत्साह से उसने बहुत अपनी शायरियां प्रस्तुत की। मैं शुभकामना व्यक्त करता हूं, खुश रहो। हमारे आरिफ़साहब ने भी अपने कुछ अशआर पेश किये। और आख़िर में गिरनार से आये दातारी ने दो रचनाएं सुनाई। बहुत-बहुत खुशी हुई।

तो आइये, 'मानस-किष्किन्धाकांड'; पहला संवाद श्री हनुमानजी और भगवान राम के बीच। यद्यपि इससे पूर्व एक छोटा-सा संवाद सुग्रीव और हनुमान के बीच में भी हो जाता है। एक बात तो पहले आप अपने ढ़ंग से सोचे कि रामकथा के प्रत्येक प्रसंग में इतिहास भी है और अध्यात्म भी है। रामकथा के प्रत्येक प्रसंग में तथ्य है और सत्य भी है। इन बातों को हमारे दिलोदिमाग में रखकर भगवत्कथा का श्रवण किया जाए तो प्रसंग का रस भी मिलता है और सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा के कारण हमारी आध्यात्मिक ऊर्ध्वगति भी हो सकती है। एक ओर घटनाएं चलती है, दूसरी ओर कुछ विशेष बोध प्राप्त होता है। कल हमने देखा कि ऋष्यमूक पर्वत किष्किन्धा प्रदेश का, किष्किन्धा यानी जो नगरी है उसके बगल में, वहां सुग्रीव रहता है। सुग्रीव वालि से प्रताड़ित है। वालि ने सुग्रीव का सब कुछ करीब-करीब छिन लिया है। देश निकाला सुग्रीव को दिया था और कहा कि तू निकल जा मेरे राज्य से और अब मैं तेरे पीछे हूं! जब मेरे हाथ में आया तब तू नहीं बचेगा! तू उपाय कर ले। सकल भुवन में घूमता था बेहाल की तरह सुग्रीव और वालि उसका पीछा करता है। आख़िर में हारकर सुग्रीव ने एक स्थान पसंद किया वो था ऋष्यमूक पर्वत। ऋष्यमूक पर्वत का आश्रय लेने का सुग्रीव का कारण ये था कि इस पर्वत पर शाप के कारण वालि जा नहीं सकता था। इसलिए सुग्रीव सुरक्षित है फिर भी भयभीत है। क्या मतलब? मतलब साफ़ है। 'विनयपत्रिका' में गोस्वामीजी उसका आध्यात्मिक दर्शन देते हुए कहते हैं, 'करम-कपीस बालि-बलि।' वहां मेरे पूज्यपाद फरमाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्म जो है वो वालि है और सुग्रीव जीव है। और इतना सटीक दर्शन है गोस्वामीजी का कि हम जीव जो हैं, जहां भी भटके, घूमे, भागे जाएं लेकिन वालि उसका पीछा करता है। मतलब वालि कर्म है।

गोस्वामीजी का दृढ़ मानना है कि जीव कहीं भी जाए उसका कर्म उसका पीछा करता है। कर्म इस जीव को कुछ प्रताड़ित न कर सके इसलिए जीव का कर्तव्य है, ऋष्यमूक पर्वत पर चला जाए। ऋष्यमूक पर्वत का अर्थ है सत्संग। सत्संग की ऊंचाई साधुसंग। ऋष्यमूक पर्वत का अर्थ करो तो ऋषि का मुख। ऋषि का मुख मानी सद्वचन। जहां सद्वार्ता होती हो, सद्कथा होती हो, सद्चर्चा होती हो, सद्संवाद होता हो ऐसी मेहफ़िल में जाना कर्म से बचना है। और ये प्रवृत्तियां, हमारा कर्म, हमारी आधि-व्याधियां और उपाधियां; हम जीव है। हमारी कई प्रकार की प्रोब्लेम्स हमारे पीछे दौड़ रहे हैं लेकिन जब हम सत्संग में चले जाते हैं तो वहां कर्मरूपी वालि आ नहीं आ सकता। जब तक होल में हैं, कर्म नहीं आता। प्रश्न है एक या सवा बजे के बाद का! क्योंकि हम ऋष्यमूक से निकले ही और हमारे प्रर्वत्तिओं के वालि ने हम को पकड़ लिया! और निरंतर सत्संग में बैठे रहना वो भी हमारे लिए संभव नहीं है। क्योंकि हम सब की प्रवृत्तियां है। देश-काल आधीन हैं हम। लेकिन आदमी जितना सत्संग में जीये; और सत्संग का मतलब ये नहीं कि मोरारिबापू बोले, आप सुनो। सत्संग तो मरीज़साहब का एक गुजराती शे'र है-

बे जणां दिलथी मळे तो एक मजलिस छे मरीज़,
दिल विना लाखो मळे एने सभा कहेता नथी।

दिलवाले केवल दो मिल जाए तो एक मेहफ़िल है। दिल बगैर लाखो मिले उसको सभा नहीं कहते।

कुछ प्रश्न हैं। एक प्रश्न मेरे पासा आया, 'बापू, आप व्यासपीठ पर आते हैं, बैठते हैं तो आप कैसा फील करते हैं?' मेरा बहुत छोटा-सा जवाब और मेरे हृदय का जवाब है, मैं यहां बैठता हूं तो बहुत पवित्रता महसूस करता हूं। इससे बढ़िया मैं कोई पवित्रता मेहसूस नहीं कर पाता। काश! आप का भी ये अनुभव हो। क्योंकि ये सत्संग है। और सत्संग में बोलना, सुनना, बजाना, गाना ये तो 'रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां' ऋजु मानी कोमल, कुटिल मानी कठिन। क्योंकि ईश्वर को पाने के लिए कई कोमल मार्ग से गए और कई कठिन मार्ग से गए लेकिन जाती तो हैं हर नदियां समंदर के पास। प्रत्येक की रुचि भिन्न-भिन्न होने के कारण ईश्वर को पाने के भिन्न-भिन्न मार्ग है। कईयों के सरल मार्ग है, कईयों के बहुत कठिन मार्ग हैं। तो ये गाना, बजाना, बोलना, सुनना ये भी एक विधा है। लेकिन व्यासपीठ हो, आप बैठे हो, ये सत्संग है बड़ा प्यारा और उच्च कोटि का सत्संग है, नो डाउट, बट इसका मतलब ये नहीं कि सत्संग को हम संकीर्ण कर दें। सत्संग के लिए मोरारिबापू आवश्यक नहीं है, मुरारि आवश्यक है। मुरारि मीन्स परमतत्त्व आवश्यक है; परमचर्चा आवश्यक है।

कल मैं जब यहां सायंकालीन सभा में आ रहा था, यहां के एक मिनिस्टर से मिलना हुआ। एक बहन थी यहां की एक मिनिस्टर। उसने कहा कि मैं एक स्वतंत्र पोर्टफोलियो, एक स्वतंत्र विभाग यहां की सरकार का संभाल रही हूं। एक मिनिस्ट्री की मैं मिनिस्टर हूं। मेरी मिनिस्ट्री का नाम है मिनिस्ट्री ओफ हेपीनेस। मैं यहां की हेपीनेस मंत्री हूं। मैंने पहली बार सुना कि किसी सरकार में प्रसन्नता प्रधान हो। मैं बहुत खुश हुआ। मैंने कल कहा भी, आज मेरे लिए ये सत्संग है। उसने मुझे पूछा बापू, मुझे एडवाइस करो, मैं हेपीनेस की मिनिस्ट्री संभाल रही हूं तो मुझे कुछ आप सीख दो कि मैं उसको ओर कैसे-कैसे आगे बढ़ाऊं। बड़ी शालीनता मैंने देखी। नीचे बैठ गई! मैंने कहा, आप एक महत्त्व की प्रधान हैं, पूरी पी.एम. ओफिस आप संभाल रही हैं, आप उपर बैठो। तो उसने कहा, 'बुज़ुर्गों ने हमें ये नहीं सिखाया।' तेरी अदब को सलाम! और जो कुछ आधे घंटे बातचीत हुई; उसने कहा, मैंने सुना है, थोड़ा पढ़ा भी है कि आप Truth, Love, Compassion की बात करते हैं। मैं कोशिश करती हूं फोलो करने की। तो कह रही थी बापू, मैं एक दिन कथा में आऊंगी। और मुझे पता नहीं था, उसने ये भी कहा कि आप के हिन्दुस्तान में मध्यप्रदेश गवर्नमेन्ट में मिनिस्ट्री तो नहीं है हेपीनेस की, लेकिन उसकी मिनिस्ट्री में एक हेपीनेस डिपार्टमेन्ट है। तो मैं खुश हुआ कि चलो, 'आधा ही सही मेरी तरफ़ जाम तो आया!' आधी तो आधी खुशी हुई कि हमारे यहां भी कुछ है। लेकिन यहां तो पूरा विभाग है। मैंने कहा, मैं कथा में ज़िक्र करूंगा। शुभ तत्त्व मुझे कहीं से भी मिले, मैं हर खिड़कियां खुली रखता हूं। उसने कहा, हम हमारी जनता को इकोनोमी से अर्थ के बारे में सुदृढ़ करते हैं, आरोग्य के बारे में सुदृढ़ करते हैं, उम्रवालों के लिए हम सब सुविधा करते हैं। कोई तकलीफ़ न हो हमारी जनता को इसकी सब सुविधा। वो हेपी रहे इसके लिए हम सब कुछ करते हैं और आख़िर में हम अपनी प्रजा को कहते हैं कि हेपी होने के लिए हमने सब कुछ किया; अब इतना होने के बाद भी हेपी रहना कि नहीं रहना ये तुम्हारे हाथ की बात है। सवाल ये ही है। परमात्मा ने सब कुछ लुटाकर हमें भेजा है लेकिन हम हेपी नहीं रह पाते हैं! कम दिया है मालिक ने आपको! और कुछ भी न दिया हो तो भी कम नहीं दिया है। 'बड़े भाग मानुष तनु पावा।' लेकिन हम हेपी नहीं हैं! मैं खासकर के युवान भाई-बहन हमारे पास आते हैं, देखता हूं, आप हेपी क्यों नहीं है? क्या कमी छोड़ी है दाता ने? ये पृथ्वी कितनी प्यारी है! और ऐसी पृथ्वी में फिर सब का अपना-अपना मुल्क प्यारा होता है। उसी में हमारा जन्म, हमारे पास शास्त्र, सुंदर मानव शरीर, प्यारा परिवार, फिर भी हम हेपी क्यों नहीं है? यदि आपको दु:खी ही होना है तो जगत में ईश्वर भी आप को सुखी नहीं कर सकता और यदि आप को सुखी ही होना है तो ईश्वर भी आप को दु:खी नहीं कर सकता है।

मेरे पास बहुत-सी चिठ्ठियां आती है कि बापू, हमारी ईर्ष्या नहीं जा रही है! हमारा द्वेष नहीं जा रहा है! तुम व्यासपीठ को देखो, व्यासपीठ के अगल-बगल में मत देखो। तुम्हारी ईर्ष्या का कारण है अगल-बगल में देखने का और तुम्हें आदत हुई है अगल-बगल को देखने की! केन्द्र में देखने की आदत आप चुक गए हैं! ये जिम्मेवारी आप की है। कौन आरती कर रहा है? कौन साथ में फोटो खिंचवा रहा है? कौन ज्यादा लाभ ले रहा है? छोड़ो न यार! रेस में आये हो अबू धाबी? स्पर्धा में आये हो? और मेरी मांग मेरे श्रोताओं से इतनी है, सत्य-प्रेम-करुणा; आप उसका अनुसरण न कर सको चलो छोड़ो, लेकिन इतना तो करो

मेरी कथा सुननेवालों कि हम ईर्ष्या नहीं करेंगे, हम किसी की निंदा नहीं करेंगे, हम किसी का द्वेष नहीं करेंगे। कौन बड़ी मांग है मेरी? आपसे मैंने क्या चाहा? मैंने आप के पास कोई आश्रम की मांग नही की कि तुम कमरे बंधवा दो! मेरा कोई आश्रम नहीं है। मैं कोई मंदिर नहीं बनवाता। मेरी मांग क्या है आप के पास? आप क्यों ईर्ष्या करते हैं? छोड़ो। ईर्ष्या छोड़ना सत्य को पकड़ना है। निंदा छोड़ना प्रेम को पकड़ना है। द्वेष को छोड़ना करुणा को पकड़ना है। संयुक्त है, यूनाइटेड है, सापेक्ष हैं। आपमें यदि सत्य है, आप किसी की ईर्ष्या नहीं करेंगे। आप में और हम में यदि प्रेम है तो 'सकल लोकमां सौने वंदे।' किसकी निंदा करे? करुणा है तो द्वेष छूटेगा; हिंसा छूटेगी।

मेरे युवान भाई-बहन, मैं सतत कहता हूं कि क्या नहीं दिया? हम हेपी क्यों नहीं रह सकते? कम प्रयत्न व्यासपीठ ने नहीं किया है। एक इंजीनियर मुस्कुराता हो जाए तो उसका बांधकाम कमजोर नहीं होगा। एक डोक्टर मुस्कुराना सीख जाए तो उसका मरीज़ पचास प्रतिशत ऐसे ही ठीक हो जाएगा। लेकिन कोई डोक्टर ऐसे ठीक हो जाए ये चाहता नहीं है! एक टीचर अपने छात्रों के सामने मुस्कुरा दे तो उसका होमवर्क, ट्यूशन सब कुछ अपने आप हो जाता है। और एक धर्मगुरु अपने आश्रितों के सामने पवित्र मुस्कुराहट दे दे तो पवित्र मोक्ष का दरवाजा खुल जाता है। मैं कितने समय से कह रहा हूं कि मेरा कोई फोलोअर्स नहीं है। मेरे सब फ्लावर है।

केंद्र को देखो। रामकथा को देखो, मुझे भी छोड़ो। केन्द्र में व्यासपीठ है। व्यासपीठ के केन्द्र में 'रामचरित मानस' है। 'रामचरित मानस' के केन्द्र में इतिहास और आध्यात्मिकता है; तथ्य है और सत्य है। तो मैं इस मुल्क के इस विचार को सलाम करता हूं कि पूरा एक विभाग हेपीनेस के लिए है। उस बहनजी ने कहा कि हमारी जनता इकोनोमी में भी विकसित हो और प्रसन्नता में भी विकसित हो। मैंने कहा, ये तो हमारा सूत्र आ गया! हम कहते हैं, विकास भी हो और विश्राम भी हो। ये ट्रैक पर जीवन चले। एक ओर भौतिक विकास भी हो और आध्यात्मिक विश्राम भी। तो जब तक हम सत्संग में है तब तक कर्म हमें कुछ नहीं कर सकता। फिर भी हम जीव हैं। सुग्रीव की तरह डरे-डरे रहते हैं; भटकते रहते हैं।

मेरे युवान भाई-बहन, जीव के पास इच्छा है लेकिन सामर्थ्य नहीं है। हम जीव है। हमारे पास इच्छाएं बहुत है लेकिन सामर्थ्य नहीं है कि हरिइच्छा हम पूरी कर सके! परमात्मा के पास सामर्थ्य है लेकिन इच्छा नहीं है। परमात्मा उसको कहते हैं, जिसमें इच्छा का नितांत अभाव है; सामर्थ्य भरपूर है। और हम ऐसे हैं कि हमारे पास इच्छाएं बहुत है, सामर्थ्य बिलकुल नहीं! कथा इच्छा और सामर्थ्य को मिला देती है और तभी जीवन के रस में हम डूब जाते हैं। सुग्रीव में इच्छा बहुत है, सामर्थ्य नहीं है। राम में सामर्थ्य बहुत है लेकिन राम में कोई इच्छा नहीं है। यदि राम को ब्रह्म समझो तब और यहां ऋष्यमूक पर्वत पर जो मिलन होनेवाला है उसमें इच्छाग्रस्त जीव और सामर्थ्यमयी शिव का मिलन है लेकिन मिलन करानेवाला बीच में कोई हनुमान चाहिए। और हनुमान को मैं कहता हूं बुद्धपुरुष। और हनुमानतत्त्व को कहता हूं सद्गुरु। कई लोग कहते हैं, गुरु की जरूरत नहीं है। जिसको जरूरत न हो ठीक है। मैं तीन वस्तु आप को कहूं। तुम्हारी कोई भी इच्छा नहीं है तो तुम्हें गुरु की कोई जरूरत नहीं है। आपमें विषय की कोई कामना नहीं है, आप को गुरु की जरूरत नहीं है। और आप पूर्ण निर्भीक हैं तो आपको गुरु की जरूरत नहीं है। मैं बहुत जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं। सुग्रीव को हनुमान की जरूरत है क्योंकि सुग्रीव निर्भीक नहीं है, सुग्रीव निर्विषयी नहीं है और सुग्रीव इच्छामुक्त नहीं है। यदि जीव अभय है, निर्विषयी है, इच्छा से मुक्त है तो गुरु की जरूरत नहीं है।

मेरे भाई-बहन, हम भयभीत हैं, विषयी हैं। हमारी कमजोरियों की कोई सीमा नहीं है इसलिए हमें कोई बुद्धपुरुष की जरूरत है। प्यारा लगता है सुग्रीव। कमजोरियां होते हुए कुछ बिजलियां कोंध रही है काले मेघ में। वो बेचारा देखता है लेकिन निर्णय नहीं कर पाया तो सोचा, अब मैं मेरे गुरु की आंखों पर भरोसा करूं। हे हनुमानजी, आप ब्रह्मचारी का रूप लेकर जाओ और ये कौन है उसकी पहचान करो। मैं ईश्वर को नहीं पहचान पाता; मेरा गुरु मेरी पहचान करवा दे। गुरु तत्त्व बहुत जरूरी है। सुग्रीव राम में पहले शंका करता है कि ये कौन है? मनमैले आदमी हैं? जीवरूपी सुग्रीव को राम में पहले शंका हुई लेकिन हनुमानजीरूपी गुरु के कारण वो आख़िर में ईश्वर को पहचान गया। गुरु का उपयोग भी लोग अपने हितों के लिए करते हैं! मेरा एक सूत्र है याद रखना, साधु को कभी साधन न बनाना। साधु हमारा और आप का साध्य है, उसको साधन नहीं बनाना चाहिए। किसी साधु के नाम से प्राइवेट प्रेक्टिस नहीं करनी चाहिए। साधु से कुछ

छिपा नहीं रहता। कई लोग गुरु बनाते हैं तो गुरु को साधन बनाते हैं! उसके आड़ में अपने काम निकालते हैं!

तो बाप! हमारी चर्चा चल रही है, सुग्रीव में कई प्रकार की कमज़ोरियां हैं। ये विषयी हैं, ये भयभीत हैं, ये बहुत इच्छाएं लेकर घूम रहा है, पलायनवादी है लेकिन कुछ अच्छाइयां है तो ये है, वो हनुमानजी की आंखों पर भरोसा करता है, दाता तुम जाओ। मेरी आंखें भूल कर सकती है क्योंकि विषयी आंखें हैं। इच्छाग्रस्त मन समझ नहीं पायेगा, आप जाइये। भयभीत सुग्रीव श्री हनुमानजी को कहते हैं। दोनों पात्र यहां से प्रवेश करते हैं। सुग्रीव का प्रवेश भी यहां। और श्री हनुमानजी का भी प्रवेश 'मानस' में यहां से ही है, इससे पहले नहीं। देखो, 'रामचरित मानस' में हनुमानजी के जन्म की कोई कथा नहीं। उसके बचपन की कोई कथा नहीं। यहां सीधे सुग्रीव के सचिव के रूप में अथवा तो बुद्धपुरुष के रूप में हनुमानजी का प्रवेश है। इतना ही कहना है, सत्संग के ऋष्यमूक पर्वत पर हम बैठें ताकि कर्म हमारा पीछा न कर सके और वहां बैठने के बाद भी मन डामाडोल है तो किसी बुद्धपुरुष की निगाह पर भरोसा करें कि आप हमें निर्णय दो। जैसे मैं एक सूत्र कहता हूं, जो हमारे रमाबहन ने बराबर पकड़ा था कि या तो सद्गुरु पर सब छोड़ दो या तो सद्गुरु को ही छोड़ दो। तीसरा कोई विकल्प नहीं है। और रामनाम गुरु बन सकता है। जिस पर तुम्हारी पूरी निष्ठा हो उसके हाथ से दी हुई कोई भी चीज हमारा मार्गदर्शक बन सकती है। व्यक्ति ही चाहिए ऐसी कोई बात नहीं। लेकिन जब तक ये कमजोरियां हम में है तब किसी के मार्गदर्शन में चलना। कोई ऐसे बुद्धपुरुष की शरण में रहे जो हनुमान जैसा हो। जो हमें बता दे कि हरितत्त्व क्या है? सुग्रीव ने श्री हनुमानजी को कहा कि ब्रह्मचारी का रूप लेकर आप जाओ और मुझे वहीं से इशारा कर देना, यहां कहने मत आना वर्ना वो पीछे-पीछे आ जायेंगे तो मुझे पकड़ लेंगे! 'भागवद्गीता' कहती है, किसी से मार्गदर्शन लेना है तो मस्तक झुकाकर के, हाथ जोड़कर के लेना चाहिए। इसलिए मेरा हनुमान राम-लक्ष्मण के सामने आते हैं तो ब्राह्मण के रूप में आते हैं और मस्तक झुकाकर पूछने लगे, जिज्ञासा करने लगे-

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा।
छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।

एक श्याम, एक गौर शरीरधारी आप कौन हो? कितने प्रश्न पूछ रहे हैं श्री हनुमानजी! पहला प्रश्न, एक श्याम और एक गौर शरीरवाले आप कौन हैं? और आप का धनुष-बाण धारण करना, भुजाएं आदि देखकर आप क्षत्रिय लगते हो; वीर हो, वन में क्यों घूम रहे हो! और देखते-देखते हनुमानजी की दृष्टि भगवान राम के चरण पर गई तो तुरंत आगे का प्रश्न आया, ये अत्यंत कठोर भूमि पर आप इतने कोमल चरण लेकर क्यों चल रहे हैं? आप वन में किस कारण घूम रहे हैं? और सहज 'स्वामी' शब्द बोल गए! हे स्वामी, आप कौन हैं? साहब! सुग्रीव के जीवन-मरण का प्रश्न है और सुग्रीव ने हनुमान पर भरोसा किया है और जो आ रहे हैं वो कौन है उसका परिचय पाना बिलकुल जरूरी था। और किसी का अंतरंग परिचय प्राप्त करना हो तो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर ही पूछा जाए। एक वस्तु, श्री हनुमानजी ने मस्तक झुकाया, एक तो ब्राह्मणत्व का परिचय दिया। दूसरा ये वो तत्त्व है जहां चरणों में सिर झुकाना सलामती है, संकेत किया। तीसरा निरहंकार का परिचय दिया और चौथा 'बालकांड' में लिखा है हनुमंतवंदना में, हनुमानजी के हृदय में राम रहते हैं। हनुमानजी का हृदय मंदिर है, उसमें राम निवास करते हैं। तो हनुमानजी ने पक्का किया, हृदय में जो है वो ही है। राम अंतर्यामी भी है, बहिर्यामी भी है। राम अंतर्गामी भी है और राम बहिर्गामी भी है। अब आप कल्पना करे कि किसी के हृदय में जो बैठते हैं उसके चरण कितने कोमल होंगे! क्योंकि हृदय इतना कोमल है। उसमें रामजी बिराजते हैं तो कितने कोमल! और आज हनुमानजी देख रहे हैं कि राम तो वो ही हैं जो अंदर हैं। और इतने चरण कोमल हैं और यहां भूमि तो बहुत कठिन है! आप का शरीर कितना मृदु है, कितना मनोहर है, मन को हरनेवाला है और अत्यंत सुंदर विग्रह है आप का।

मृदुल मनोहर सुंदर गाता।
सहत दुसह बन आतप बाता।।

इतने कोमल, इतने मनोहर, इतना सुन्दर शरीर है और आप वन में ग्रीष्म की गर्मी, ताप, वर्षा, ठंड क्यों सहन करते हैं? जैसे-जैसे हनुमानजी निकट आ रहे हैं, बिलकुल विनम्रता से प्रभु की पहचान करने जा रहे हैं; ज्यादा से ज्यादा परिचय होने लगा। भीतरी अवस्था में प्रमाण मिलने लगे इसलिए आगे का प्रसंग आया-

कि तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ।

हे स्वामी! तुम मुझे बताइये, आप तीन देवताओं में से तो कोई दो नहीं हो? दुनिया जिसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश

कहते हैं ये तीन देव में से तो आप दो नहीं हो? फिर सोचने लगे कि तीन देवता तो तीन होते हैं लेकिन ये तो दो है! स्वामी, बताइये कि आप नर और नारायण तो नहीं है? आप कौन है? एक के बाद एक प्रश्न पूछे जा रहे हैं। आगे की जिज्ञासा, 'जग कारन', आप इस जगत का कारण तत्त्व तो नहीं हो? 'तारन भव', संसार को तारनेवाले तो आप नहीं हो? 'भंजनी धरनी भार', पृथ्वी के भार को तोड़नेवाले तो आप नहीं? या तो 'अखिल भुवन पति' समग्र ब्रह्मांड के मालिक, आपने मनुष्य का अवतार तो नहीं लिया? आप है कौन? इतने प्रश्न श्री हनुमानजी महाराज ने पूछे। अब भगवान की बारी है। ये हनुमंत-राम संवाद। हे विप्र! हनुमान तो नहीं जानते थे लेकिन राम तो जानते थे कि ये कौन है। लेकिन जीव जिस भाषा में बोल रहा है, ठाकुर भी उसी भाषा में बोल रहे हैं। गोस्वामीजी राम के मुख से जवाब देते हैं। हनुमानजी ने कहा, जगत का कारण, भंजन धरनी भार, ब्रह्मांड के पति, आप कौन है? और भगवान कहे कि ये कुछ नहीं है, हम तो कोशलेश राजा दशरथ के बेटे हैं। हनुमानजी सोचने लगे कि आप कोशलेश दशरथ के पुत्र है तो वन में क्यों? 'हमारे पिता के वचन को मानकर हम वन में आये हैं।' 'अच्छा, तो वन में आये तो आप एक जगह कुटिया बनाकर रहते। ठंडी-सर्दी-वर्षा में आप घूमते क्यों है?' 'बोले, हे भूदेव, यहां कोई राक्षस वैदेही का अपहरण कर गया है और हम उसे ढूंढने निकले हैं।' फिर भगवान कहते हैं, 'हमने हमारी कथा तो सुना दी लेकिन हे भूदेव, आप अपना परिचय तो दीजिए कि आप कौन है?' इतने वार्तालाप में -

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना।
सो सुख उमा जाइ नहिं बरना।।

इतनी ही बात! शब्द आदमी की जागृति कर देता है। इतने शब्द के उच्चारण में श्री हनुमानजी भगवान को पहचान गए कि ये तो यही ब्रह्म है, वो परमात्मा है। और हनुमानजी भगवान के पैर पकड़ लेते हैं। परमात्मा को पहचान गए हनुमानजी और चरण पकड़ लिए। मेरे युवान भाई-बहनों, मैंने कई बार कोई संदर्भ में ये बात कही, पूरा परिचय जब तक न हो तब तक मस्तक झुकाकर विनय से दूसरे को आदर देना लेकिन चरण तो तब पकड़ना जब पूरे का पूरा परिचय हो जाए। क्योंकि हम पूरा परिचय बिना जल्दी चरण पकड़ भी लेते हैं और वो ही चरण खींचकर उसको गिरा भी देते हैं! जल्दी-जल्दी बस चरण पकड़ो, चरणस्पर्श, चरणस्पर्श, चरणस्पर्श! कहने का मेरा तात्पर्य है, हम लोग चरणस्पर्श में बहुत पड़ापड़ी करते हैं फिर चरण खींच भी लेते हैं! हनुमानजी ने समाज को दिखाया कि एक बार किसी को पूरा का पूरा पहचान करके चरण पकड़ो तो वो चरण फिर छोड़ना नहीं।

श्री हनुमानजी ने परमात्मा को पहचानकर चरण पकड़ लिए। एक ही पात्र को चरण भी मिले हों, सिर पर भी हाथ हुआ हो, चरण पर भी हाथ गया हो, हृदय से भी लगाया हो, देखकर आंख में आंसू आये हो, बगल में बिठाये हो, ऐसा एकमात्र भाग्यवान महापुरुष हनुमानजी हैं। श्री हनुमानजी को भगवान राम जब चरणों में गिर जाते हैं तो उठाकर हृदय से लगाते हैं, निकट बिठाते हैं। राम उसको देखते हैं तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। नयन जल से उसको खींचकर के उसके ताप को मिटाते हैं। एक व्यक्ति को इतनी प्यार की विधाएं प्राप्त हुई हो तो वो हनुमान है। आज उसको चरण प्राप्त हुए हैं। उस सुख का वर्णन नहीं किया जाता। फिर हनुमानजी आगे बोले-

एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान।
पुनि प्रभु मोहि विसारेउ दीनबंधु भगवान।।

महाराज, मैं तो एक मंद हूं। मोहवश हूं। कुटिल हृदय और अज्ञानी हूं। हनुमानजी अपने बारे में कहते हैं, मैं मंद हूं। आश्रित की निराभिमानिता का परिचय है। मैं मंद हूं। मैं मोहवश हूं। मेरा हृदय कुटिल है, अज्ञान है। प्रभु, मुझे आप भूल गए! हनुमानजी कहते हैं, महाराज! आपकी माया में डूबा हुआ जीव घूमता रहता है इसलिए मैं आपको पहचान नहीं सका! और आपको पहचानने के लिए भजन चाहिए। हनुमानजी का सूत्र जरा गौर से सुनियेगा, मैं भजन का कोई उपाय नहीं जानता हूं। मेरे पास भजन का कोई उपाय नहीं है। वहां मुझे थोड़ा कहना है आपको। भजन का उपाय क्या? जो हनुमान कहते हैं कि कोई उपाय नहीं जानता।

भजन का कोई उपाय होता है? हां, भजन के तीन उपाय हैं। एक जानकारी, पूरी जानकारी। ये भजन का उपाय माना गया है। भजन क्या चीज है इसकी व्याख्या बाद में करेंगे लेकिन 'भजन' शब्द बड़ा प्यारा है। मेरे शब्दकोश में जितने पवित्रमय शब्द है इनमें एक भजन है। एक उपाय है भजन की जानकारी। भजन का दूसरा उपाय है भरोसा। भजन का तीसरा उपाय है प्रेम। हनुमानजी कहते हैं, मेरे मैं तीनों में से कुछ नहीं है। आपकी माया के आधीन होकर मैं आपको भुला हूं इसलिए प्रभु, मैं आपको

पहचान नहीं पाया। जानना, भरोसा रखना और प्रेम करना ये तीन का मिलना भजन का उपाय है 'मानस' की दृष्टि से। भजन माने माला जपे, अच्छी बात है। कथा कहे, अच्छी बात है। भजन की बहुत विधाएं हैं। भजन का छोटा अर्थ मत करना। आप तत्त्वत: किसी को जान ले, गुरु को, शास्त्र को या परमतत्त्व को। हमारा और आपका उसमें पूरा दृढ़ विश्वास हो जाए और प्रीत हो जाये। ये भजन प्राप्ति के उपाय हैं। यहां हनुमानजी कहते हैं, मेरे पास कोई भजन का उपाय नहीं है। अब रामजी को लगा कि हनुमानजी को थोड़ी ठेस लगी है। इसलिए अब प्रभु अपने आश्रित को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं-

सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।

हे कपि! हे हनुमाना! बाप! तू मुझे लक्ष्मण से भी दुगुना प्यारा है। अब परमात्मा की पहचान हो गई। अब हनुमानजी वार्तालाप आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि महाराज! पर्वत पर वानरों का राजा सुग्रीव रहता है। ये सुग्रीव आपका दास है। मेरी इच्छा है प्रभु कि आप उससे मैत्री करो। उसको दासपद से मित्रपद दे दो। हनुमानजी से भगवान ने कहा कि हनुमान, सुग्रीव से मैत्री करनी है तो चलो करे लेकिन उसको यहां ले आओ। बोले, महाराज, वो यहां नहीं आ सकता। आपको ही आना पड़ेगा। बोले, क्यों नहीं आ सकता? बोले, ये स्थान नहीं छोड़ सकता। बड़ा भयभीत है। महाराज, जो बीमार जो मरीज़ अस्पताल जा सकता हो वो तो ले जाय लेकिन जो जाने के काबिल नहीं उसके पास तो डोक्टर को ही जाना चाहिए। ये बीमार है। सुग्रीव विषयी है, कमजोर है, भयभीत है। उसके पास आपको ही आना चाहिए। श्री हनुमानजी महाराज राम-लक्ष्मण को लेकर सुग्रीव के पास ऋष्यमूक पर्वत पर आये। सत्संग में जीव बैठा हो तो कर्म नहीं आ सकता। लेकिन कोई सद्गुरु का आश्रय मिले तो परमात्मा कर्म करने के लिए स्वयं वहां पहुंच जाता है करुणा करने के लिए। सुग्रीव खड़ा हुआ। भगवान राम का स्वागत किया। श्री हनुमानजी महाराज ने दोनों पक्ष का परिचय करवाया। ये वालि का अनुज सुग्रीव है। उसकी ये स्थिति है। सुग्रीव को कहा, ये भगवान राम है। उभय की प्रीति दृढ़ करने के लिए श्री हनुमानजी महाराज ने अग्नि प्रज्वलित किया और अग्नि की साक्षी से राम और सुग्रीव की मैत्री कर दी। और जब किसी के मित्र हम बन जाते हैं तो मैत्री का एक नियम है कि अपने मित्र के सुख-दु:ख की जानकारी ली जाए वर्ना किसी का मित्र मत बनना। मित्र बनो तो एक-दूसरें के सुख-दु:ख की पहचान कर लेनी चाहिए। भगवान राम ने सुग्रीव से पूछा कि आप तो किष्किन्धा के हैं और यहां क्यों? अब सुग्रीव और राम की बातचीत में सुग्रीव अपने जीवन की गाथा सुनाते हैं।

भगवान ने प्रतिज्ञा की कि मैं एक ही बाण से वालि को मार दूंगा। लेकिन सुग्रीव ने कहा कि महाराज, वालि को मारना इतना आसान नहीं है। 'भगवद्गीता' में लिखा है; अर्जुन को कहा, 'सर्वधर्मान्परित्यज्य', सबकुछ छोड़कर मेरी शरण में आ जा। यहां भगवान ऐसा वाक्य बोलते हैं, सोच छोड़ दे सुग्रीव, मैं तेरा सब कर दूंगा। लेकिन जीव स्वभाव है। गदा उठाई। प्रभु ने भेजा कि मैदान में गर्जना कर। वालि को ललकारा और तिनके के समान सुग्रीव को मानकर वालि खड़ा हुआ। हाथ में गदा लेकर बिछाना छोड़कर, जब अपनी राजशैया छोड़कर वालि खड़ा हुआ गर्जना करता हुआ कि सुग्रीव की ये हिम्मत! अच्छा हुआ अपने आप आया शरण में। मैं मार दूंगा। जैसे वालि खड़ा हुआ और उसकी सती साध्वी स्त्री तारा ने वालि के पैर पकड़ लिए। तारा बोली, पतिदेव, मुझे क्षमा करियेगा। पतिदेव, सुग्रीव जिसको मिलकर आया है, जिसका सहारा लेकर सुग्रीव आपको ललकार रहा है वो दोनों बंधु तेज और बल की सीमा है। कोशलेश दशरथ के पुत्र हैं राम और

जीव के पास इच्छा है लेकिन सामर्थ्य नहीं है। हम जीव है। हमारे पास इच्छाएं बहुत है लेकिन सामर्थ्य नहीं है कि हरिइच्छा हम पूरी कर सके! परमात्मा के पास सामर्थ्य है लेकिन इच्छा नहीं है। परमात्मा उसको कहते हैं, जिसमें इच्छा का नितांत अभाव है; सामर्थ्य भरपूर है। और हम ऐसे हैं कि हमारे पास इच्छाएं बहुत है, सामर्थ्य बिलकुल नहीं! कथा इच्छा और सामर्थ्य को मिला देती है और तभी जीवन के रस में हम डूब जाते हैं।

लक्ष्मण और काल को भी संग्राम में जीत सकते हैं। इसलिए मेरा सिंदूर मिट न जाए! आप आज सुग्रीव के सामने युद्ध करने न जाए। वालि ने अपनी पत्नी को कहा, हे डरपोक स्त्री, मैंने सुना है कि राम तो समदर्शी है। उसको सुग्रीव प्यारा और मैं उसका दुश्मन, अप्रिय, ऐसी विषमता राम में नहीं हो सकती। और फिर भी राम मुझे मारे तो राम के हाथ मरने से सनाथ हो जाऊंगा।

राम समदर्शी है और वालि का समदर्शी का जो विवेक है राम के बारे में वो सच करने के लिए प्रथम मुकाबले में भगवान राम वालि को नहीं मारते हैं। युद्ध होता है। हृदय में तो प्रेम उभर रहा था फिर भी थोड़ी परमात्मा से ऐसी बातें की और भगवान राम जब वालि को विवेक जाग्रत हुआ तब कहते हैं, वालि मुझे तुझे नहीं मारना था, तेरी मूढ़ता को मारना था। तेरे अमुक प्रकार के व्यवहार को समाप्त करना था। मैं तुझे अमर कर दूं; अचल कर दूं। अब मरने की तैयारी में वालि थोड़ा करवट बदलकर राम का चरण पकड़ लेता है और कहते हैं, हे प्रभु, जन्म-जन्मांतर तक मुनि लोग यत्न करे फिर भी अंत समय राम के दर्शन तो क्या रामनाम मुख पर नहीं आता। आज मेरे नेत्र के सामने ये रूप खड़ा है। मैं नाम बोल रहा हूं। अब मैं देह क्यों रखूं? महाराज, मैं जीना नहीं चाहता। महाराज, ये मेरा बेटा युवान अंगद है। उसको राज्य का वारिस बनाने की मेरी कोई इच्छा नहीं। लेकिन महाराज, मेरी एक ही इच्छा है, मेरे बेटे का हाथ मैं सुग्रीव के हाथ में नहीं, आपके हाथ में सौंपता हूं। दुनिया में कन्या का दान करनेवाला तो बाप

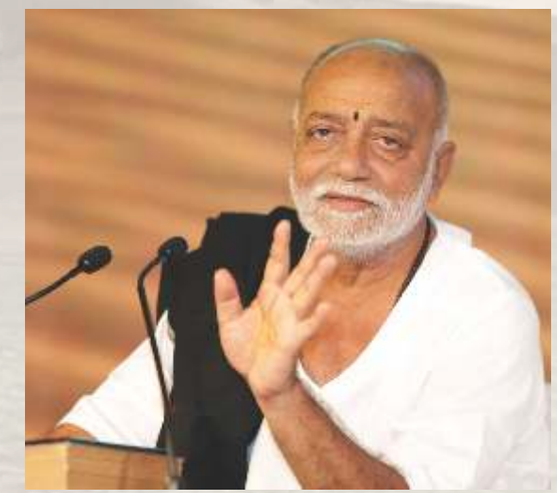

घर-घर होता है, लेकिन कुमार का दान करनेवाला बाप एकमात्र वालि निकलता है। आखिरी अध्याय बड़ा अच्छा कर गया ये आदमी! मेरे पुत्र को अपना दास बनाना। राम के चरणों में दृढ प्रीत करके वालि ने अपने शरीर का त्याग किया। कितना भाग्यशाली है! रामदर्शन करता-करता, राम को स्मरता-स्मरता, बेटे को रामपद दिलाते हुए फूल की माला जैसे गिर जाए ऐसे बालि ने शरीर का त्याग किया।

सुग्रीव का राजतिलक हुआ और अंगद को युवराजपद प्रदान किया। राजा बनकर सुग्रीव प्रभु के पास आया, ऋष्यमूक पर्वत के पास, जहां प्रभु है। भगवान, अब क्या करूं? बोले, बस अब मैंने तेरा काम किया। तूने वादा किया है कि सीता की खोज के लिए मैं मदद करूंगा। मैंने काम पूरा किया अब तू तेरा दायित्व निभा। लेकिन वर्षाऋतु है। वर्षाऋतु में एक जगह वनवासी को रहना होता है उदासीन को। तो यहां प्रवर्षण पर्वत में चातुर्मास करूंगा। तू राजवैभव भोग लेकिन चातुर्मास पूरा होने के बाद सीता की खोज का अभियान चलाना। परमात्मा बहुत कृपालु है। ये विषयी आदमी है।

भगवान प्रवर्षण पर्वत पर आये। चातुर्मास करते हैं और फिर वर्षा और शरद दोनों ऋतुओं का वर्णन राम के मुख से तुलसी करवाते हैं। मैंने संकेत किया था कि एक पंक्ति में ऋतुवर्णन, अर्धाली में ऋतवर्णन; पूरा बहुत स्वतंत्र विषय है, वर्षाऋतु का वर्णन। अब राम और लक्ष्मण का संवाद शुरू होता है। हे लक्ष्मण, वर्षाकाल है; आकाश में मेघ छा गए हैं। मीठी-मीठी गर्जना हो रही है। गृहस्थ हो लेकिन वैरागी गृहस्थ हो और उसके घर कोई वैष्णव आ जाये और वैष्णव गृहस्थ को देखकर विरक्त गृहस्थ को जो आनंद हो जाए ऐसा आनंद आज मेघ को देखकर मयूरों को हो रहा है। एक में ऋत, दूसरी पंक्ति में ऋतु।

घन घमंड नभ गरजत चोरा।
प्रिया हीन डरपत मन मोरा।।
दामिनि दमक रह नचन माहीं।
खल कै प्रीति जया थिर नाहीं।।

'श्रीमद् भागवतजी' में भी ऋतुवर्णन है; बहुत प्यारा वर्णन है। तुलसी ने वहीं से भी कुछ लिया; कुछ कालिदास से लिया; 'मेघदूत' से उठाया और संपादन करके बहुत प्यारा वर्णन, बड़ा सुन्दर वर्णन किया है वर्षा का।

जिसकी बुद्धि प्रलोभन से दूर रहेगी उसकी बुद्धि भटकाव से मुक्त रहती है

बाप! इस भूमि पर स्वान्तः सुखाय आयोजित इस नवदिवसीय रामकथा के चौथे दिन का कथारम्भ है। आप सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। कल सायंकाल एक युवान कव्वाल टीम ने मालकौंस में अपनी बंदगी शुरू की थी व्यासपीठ की छाया में और कच्छी भैरवी से सामत घराना ने उसको विराम दिया था। मैं मेरी अतीव प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। सब की संगीत साधना को सलाम करता हूं। खुश रहो बाप! जब-जब किसी रामकथा का सार पुस्तिका के रूप में तैयार होता है और जिस कथा में उसका लोकार्पण का योग होता है वैसे इस अबू धाबी की कथा में हमारे परम स्नेही नीतिनभाई वडगामा और उनके सभी साथी भाई-बहनों ने तीन कथा का सार संपादित किया-'मानस-परमारथ।' 'मानस-पुण्यपुंज' और 'मानस-धरमरथ।' उसको यहां लोकार्पित किया गया। और हर वक्त नीतिनभाई अपने हृदय के उद्गार भी व्यक्त करते हैं। नीतिनभाई, आप की हिंदी बहुत अच्छी हो गई! बहुत अच्छी हिंदी बोल रहे हैं! और इस पूरी यानी पूरी व्यासपीठ की अहेतु सेवा के लिए मैं नीतिनभाई और सभी सहयोगियों को साधुवाद देता हूं। खुश रहो। 'मानस-किष्किन्धाकांड', जो 'किष्किन्धाकांड' की चौपाइयों में प्रथम पंक्ति और चौपाइयों में आख़िरी पंक्ति के बीच में संग्रहित है; इस कथा में हम इन सभी घटनाओं को ऐतिहासिक दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से तथ्य और सत्य के ट्रैक पर हमारे जीवन के विकास और विश्राम के लिए गति दे रहे हैं। कुछ आगे चलें। क्योंकि रघुवीर यही किया करते थे, आगे चलें, आगे चलें, आगे चलें।

आज मेरे पास बहुत से प्रश्न भी हैं। कल के भी कुछ प्रश्न हैं। कल का एक प्रश्न था, पहले वो ले लूं। एक श्रोता ने कल पूछा था कि कुंआरी बुद्धि की व्याख्या क्या? भटकती बुद्धि किसको कहे? और ठहरी हुई प्रज्ञा किसको कहे? अच्छा प्रश्न है। मेरा जवाब इतना अच्छा होगा कि नहीं अल्लाह जाने लेकिन जिज्ञासा अच्छी है। बाप! मैं भगवान बुद्ध के हवाले से कहना चाहूंगा। बुद्ध के जीवनदर्शन में शील की बहुत महिमा की गई है। शील का सीधासादा अर्थ आप ये भी कर सकते हैं कि एक प्रकार का शुद्ध व्यवहार। बहुत सरल अर्थ, पवित्र चरित्र। बुज़ुर्गों और बुद्धपुरुषों की सेवा से मिला हुआ वरदान उसको शील कहते हैं। मेरा 'मानस' हस्ताक्षर करता है-

सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई।

बुज़ुर्गों और विचारवानों की सेवा के बिना शील की उपलब्धि नहीं होती। कवायत से, एक्सरसाइज़ से, अच्छी खुराक से, सम्यक् व्यायाम से बल की वृद्धि हम कर सकते हैं लेकिन शील की वृद्धि बिना बुज़ुर्गों की सेवा, बिना पहुंचे हुए फ़कीरों की सेवा करीब-करीब असंभव है। तो बाप! तथागत बुद्ध कहते हैं कि शील पांच है और इस पांच शीलयुक्त जीवन की बुद्धि को तथागत कन्यका कहते हैं। ये कन्यका है, ये कुंआरी है। ये पंचशील। बड़ा प्यारा शब्द है 'पंचशील।' बहुत सीधे-साधे शील है बाप! ये पांच शील जिसमें हो उसकी बुद्धि बिलकुल कुंआरी है। १. चोरी न करना शील है। बहुत सीधे-सादे सूत्र हैं। हम अपने आपको भीतर से थोड़ा मज़बूत करें तो ये शील का आचरण हम अवश्य कर सकते हैं। २. झूठ न बोलना शील है। ३. हिंसा न करना शील है। ४. दुराचारी न होना शील है। ५. व्यसन से मुक्त रहना शील है। मैं मेरे जीवन को पुछूं, आप अपने जीवन को पूछो कि हमारी बुद्धि इन पांचों से मुक्त हैं? तो आप भीतरी आकाश में गर्जना करके भीतर कह सकते हैं कि मेरी बुद्धि कुंआरी है। आप कहेंगे कि इसमें कुंआरी बुद्धि का हमारे लिए तो कोई चान्स ही नहीं है! यदि इनमें से अज्ञात अवस्था में कुछ हुआ तो क्षम्य है। मानो हम अज्ञात अवस्था में है और हमने कोई चोरी कर ली। प्रशंसनीय नहीं है यद्यपि क्षम्य जरूर है। मैंने वैसे ये इकरार मेरे एक इंटरव्यू में भी किया है। शायद मैंने 'मानस-मोरारि' में भी कहा है तलगाजरडा की कथा में कि तुम्हारे मोरारिबापू ने एक बार चोरी की लेकिन कोई हेतु चोरी का नहीं। एक ऐसी नादान अवस्था में और चोरी भी अच्छी की और मैंने दादाजी से कुबूल भी किया था।

आज मुझे एक प्रश्न ये भी पूछा लेकिन ऐसी बातों में जाने से फिर मेरे अपने पर मैं कंट्रोल नहीं कर पाता हूं इसलिए बचने की कोशिश करता हूं। मुझे पूछा गया, दंडवत् प्रणाम, बापू, I love to listen to you speaking about Tribhuvandas Dada. इंग्लिश में है ये और मेरा अंग्रेजी कच्छी अंग्रेजी है! आखा देशमां गुजराती पाछो न पड़े! दूसरे प्रान्तवाले मुझे माफ़ करें लेकिन गुजराती में भी काठियावाठी क्यांय पाछो न पड़े! सौराष्ट्रवासी कहीं और इनमें भी कच्छडो बारह मास। अंजार याद आता है। हमारा वेलजी गज्जर याद आता है। 'एय वालो असांजो वतन, मूज़ी मातृभूमि के नमन।'

'वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।' कश्मीर में भेजे गए आतंकियों के द्वारा हमारे आर्मियों के नौजवान सोये हुए थे और उस पर जो हमला किया गया था और मेरे देश के जितने वीर शहीद हुए हैं इन सब के लिए मेरी व्यासपीठ से मेरे अनगनित श्रोताओं को साथ लेकर मैं श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं और इनके परिवारजनों को मैं यहां से दिलसोजी प्रस्तुत करता हूं। हमारे आर्मी चीफ़ ने ऐसा कहा है कि इसका जवाब हमारी सेना देगी। स्थल और समय हमारी सेना निर्णय करेगी, सरकार नहीं। यद्यपि उसमें 'सरकार' शब्द का उपयोग नहीं किया है। लेकिन मतलब मैं समझ गया। और जन्मभूमि ग्रूप के एक अनुभवी एडिटर कुंदनभाई व्यास, उसने अपने तंत्रीलेख में भी लिखा कि केवल पत्रकार परिषदों में, ट्विट पर, या तो आज के जो-जो उपकरण है उसके द्वारा निवेदन या तो ए.सी. कमरे में दिये गये निवेदन की जरूरत नहीं है। अब सब के परम हित में ठोस कदम लेने की जहां जिस जगह जरूरत हो वहां अविलम्ब करने की जरूरत है। यद्यपि मैं हिंसा का विरोधी हूं। मैं शस्त्रमात्र का विरोधी हूं व्यक्तिगत रूप में लेकिन 'रामचरित मानस' में नारद के परम कल्याण के लिए अस्तित्व ने एक बिलग निर्णय किया था। और नारद गालियां भी बोलते हैं! जिम्मेवार लोग जो बैठे हैं उसको निर्णय लेने में मुश्किल भी पड़ती होगी। फ़िर भी नौजवान मरे जा रहे हैं और उसके छोटे-छोटे बच्चों का निवेदन आज अख़बार में है कि हम इंजीनीयर बनेंगे, हम डोक्टर बनेंगे और आर्मी में जाकर सेवा करेंगे। इन शहादत को मेरी व्यासपीठ बड़ी पीड़ा के साथ श्रद्धांजलि समर्पित करती है। सत्ता में जो हो उसकी जिम्मेवारी है। और भारत के नागरिक के नाते मेरा अधिकार है कि मैं ये बोलूं। मेरे अनगनित प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष श्रोताओं को साथ लिए हुए, मेरी व्यासपीठ को समर्पित सभी को लिए हुए मैं इन बहादुरों को नमन करता हूं; मेरी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं। इनके परिवारजनों के लिए हृदय की पूरी दिलसोजी व्यक्त करता हूं। अल्लाह करे, सबका परम कल्याण हो; सबका शुभ हो। कब तक हम अपने आप को फ़रेब में रखेंगे?

शर्त ये कहती है कि जुबां से कुछ नहीं बोलूं।
दिखावे के लिए हंस लूं तसल्ली के लिए रो लूं।
मेरी आंखों ने देखा है, मेरे कानों ने सुना है।
शराफ़त ये कहती है कि किसीका राज़ ना खोलूं।

-जमील हापुड़ी

वर्ना मेरी आंखों ने देखा है, मेरे कानों ने सुना है लेकिन ईमानदारी ये कहती है, वफ़ा ये कहती है, मोहब्बत ये कहती है कि किसीका राज़ ना खोलूं। जमील हापुड़ीदादा के शे'र है। किसीके प्रति दुर्भाव नहीं। पूरी पृथ्वी के प्रति, पूरे ब्रह्मांड के प्रति व्यासपीठ को हृदय की विशालता के साथ आदर है लेकिन हमारी नासमझी ने हमने कहीं भारत, कहीं ईरान बनाया! कब ये दीवारें टूटेगी? लेकिन जिन्होंने समर्पण किया है वो त्याग-बलिदान कभी विफ़ल नहीं जाएगा। लेकिन निवेदनों से समाज बाज़ आ गया है!

मैंने एक-एक ईंट का सदका निकाला है,
मेरे मकां की दीवार कभी गिर नहीं सकती।

-अंदाज़ देहलवी

बाकी पूरी सृष्टि अपनी है। पूरी मानवजात अपनी है। लेकिन लोग मरे जा रहे हैं मातृभूमि के लिए, ऐसे अवसर

पर ये तो सहज आया। मुझे कच्छी अंग्रेजी याद आया क्योंकि मुझे पूछा है अंग्रेजी में। ये भी मेरी परीक्षा है!

"Bapu, I love to listen to you speaking about Tribhuvandas Dada. Whenever you speak about you and Dada it brings tears to my eyes. It tears stiches me about true Guru+Shishya. If you can please speak about the samvad between you and Dada only if you have time. Jay Siyaram. आपका एक फ़लावर." तो मैंने दादा को बता दिया था कि आपके मोरारि ने एक चोरी की है। लेकिन नादान अवस्था में यदि चोरी की है जिसके पीछे कोई दुर्विचार ना हो और चोरी भी शुभ की की थी, अशुभ की नहीं। अमंगल की नहीं, मंगल मूर्ति की की थी हमारे तलगाजरडा के रामजी मंदिर में। तो वहां एक छोटे से गणेश की मूर्ति थी। ये गणेश मुझे बहुत प्रिय लगते थे। तो मैंने एक छोटे से गणेश ले लिए पूजा में रखने के लिए। ओर कोई काम न था। लेकिन कहीं चैन न आये! रात को नींद न आये! बहुत छोटी उम्र की ये बात है। फिर दादा को बताया कि दादा, ये हुआ। मेरी पूजा की बारी थी। मैं रामजी के मंदिर में पूजा करता और पूजारी भी चोरी करे ये तो हद हो गई! कोई और करे तो तो बात ओर है लेकिन पूजारी बनकर! मैं आरती करता। हमारे मणिमा, भीखाराम काका की माँ, उसकी बारी होती थी तो मुझे कहे कि बेटा, तू आरती कर ले ना! तो मैं सुबह-शाम आरती करता राम मंदिर में। तो उसी समय वो ले लिया था। पूरी रात तो ऐसे गई! दादाजी के सामने सुबह बता दिया कि दादा, ऐसा हुआ। अगर मैं आप को बता दूं तो फिर मेरे अंदर का वो निकल जाए और फिर आप क्षमा कर दे तो मैं मंदिर में उसको रख आऊँ। तो फिर मैं मंदिर में रखने गया तो मणिमा हाज़िर थी। मुझे कहे कि बेटा, क्या बात है? ड़रे क्यों हो? मैंने कहा, माँ, मैंने कल गणेश ले लिए थे और कहीं चैन नहीं पड़ा तो दादा को पूछा। दादा ने कहा कि कोई बात नहीं, जा वहीं रख दे। मैंने वहीं रख दिया। मणिमा ने लेकर के कहा, नहीं, बेटा, तुमको ये अच्छा लगता है तो ले, मैं तुझे देती हूं। तो ऐसी चोरी की। चोरी का एक अर्थ है कि किसी की चीज वस्तु चोर लो वो ही नहीं। चोरी का एक अर्थ है जो खोलने की बात है, जो निवेदन कर देना चाहिए उसको आप छिपाये जाए जिंदगी भर वो भी एक चोरी है। तो हम चर्चा कर रहे हैं, अज्ञानता और नादानता के वश होकर जिसके पीछे कोई अशुद्ध हेतु नहीं है ऐसी अवस्था में कोई चोरी कर ले तो प्रशंसनीय नहीं है, क्षम्य जरूर है।

तो पंचशील में तथागत बुद्ध कुंआरी बुद्धि के लिए कहते हैं, उसकी बुद्धि कुंआरी है, वर्जिन है, बिलकुल अनटच है, उसका पहला सूत्र है जिसने कभी चोरी न की हो। और मैं ये भी कह रहा था कि कुछ बातें लोकमंगल के लिए जाहिर करनी चाहिए ऐसी बातों को जाहिर न करना, छिपा रखना वो भी एक चोरी है। तो बाप! चोरी न करना। जिसकी बुद्धि में चोरी का सोच न आये वो कुंआरी बुद्धि है। दूसरा, झूठ न बोलना ये कुंआरी बुद्धि का लक्षण। बहुत मुश्किल है झूठ न बोलना। 'सत्यं वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि।' भारतीय उपनिषदों ने ये उद्घोषणा की है। कम से कम हम और आप वैचारिक सत्य, उच्चारित सत्य और आचरण में भी सत्य, इन तीनों के बारे में अत्यंत जागरूक रहें तो बुद्धि जागृत रह सकती है। मुश्किल है। तो झूठ न बोलना; चोरी न करना; तीसरा, व्यसन से दूर रहना। भगवान बुद्ध पंचशील में बुद्धि को कन्यका के रूप में रखने के लिए तीसरी बात रखते हैं कि व्यसन से दूर रहना। इनमें भी कोई साधारण व्यसन हो तो ठीक है। ये मैं कोई बचाव नहीं कर रहा हूं। व्यसन व्यसन है लेकिन कोई ऐसा साधासरण व्यसन है, जैसे आप चाय पीये। मैं तो अपनी रखूं ना यार! हम बार-बार चाय पीते रहते हैं! लेकिन व्यसन से दूर रहना। आप समझ गए कि जो व्यसन खुद को, परिवार को, समाज को और पूरे संसार को नुकसान करता है इन व्यसनों से दूर रहना बुद्धि को कुंआरी रखने का एक उपाय है।

कभी रोती कभी हंसती कभी लगती शराबी-सी।
महोब्बत करनेवालों की निगाहें ओर होती है।

- राज कौशिक

नशा करो तो मोहब्बत का करो, प्यार का करो। व्यसनी आदमी अपनी बुद्धि को कुंआरी नहीं रख सकता। ये भी निवेदन मैंने किया हुआ है 'मानस-मोरारि' में भी और इंटरव्यू में भी कि मैंने एक बार बीड़ी पी है। वो भी नादानियत में साहब! सात-आठ साल की उम्र रही होगी। उस उम्र में मैं अपनी गली में से आगे जाऊं तो दलितों का मोहल्ला आता था और जो भेड़-बकरियों को चरानेवाले हमारे भरवाड़ लोग वो रहते थे। तो पीछे के हिस्से में जाऊं तो जरा वीरान जगह थी। तो एक बार इच्छा हुई कि ये सब बीड़ियां पीते हैं तो एक बार तू भी जरा लगा ले! भीखाराम काका बीड़ी बनाते थे। उनका काम ही बीड़ी बनाना। ऐसी एक बीड़ी नेमचंद जैन बनिये थे हमारे गांव में उनकी दुकान थी। उसका एक भांजा था जो मेरी उम्र का था। तो नेमचंद काका भोजन करने गए तो उसका भांजा दुकान पर इतने समय बैठा तब मैं पहुंचा। बैठे। 'काका कब आएंगे?' बोले, 'तुझे क्या काम है?' 'बीड़ी तुमने कभी पी है?' बोले, 'इरादा क्या है बताओ न?' 'कुछ नहीं, बस ऐसे ही। तो एक जोड़ी में कितनी बीड़ी होती है?' 'पचीस होती है। पचीस बीड़ी की एक जोड़ी होती है।' तो मैंने कहा कि 'ये पचीस में से एक निकाल ले तो किसी को पता

चलता है?' मुझसे कहे, ये तूने क्या शुरू किया है? मैंने कहा, 'हम तो साधु बीड़ी नहीं पी सकते लेकिन हमको ज्ञान होना चाहिए!' तो मैंने ले ली बीड़ी! आधी बीड़ी पी और सर फ़टने लगा! ज़िंदगी में कभी छुआ ही नहीं! उसमें एक बावड़ी बहन भरवाड़ वो सावित्री माँ के पास आती थी और दूध-छाछ दे जाती। पता नहीं लेकिन जब टिकट नहीं लेते तभी ही चेकिंग होती है! कठिनाई ये है। उसमें पता नहीं, ये बावड़ी कहां से आई! 'बीड़ी?' 'नहीं, माताजी, आप मत कहना, मैं खुद ही कह दूंगा।' फिर तो वो बहन बड़ी उम्र की थी। हंस के चली गई। फिर कहीं चैन नहीं पड़ा तो माँ को बता दिया कि माँ, मेरी भूल हो गई। 'अच्छा, कोई बात नहीं बेटा, ध्यान रखना।'

मेरे भाई-बहन, व्यसन करनेवाले की बुद्धि कुंआरी नहीं रह सकती। न चोरी करना, न झूठ कहना, न व्यसनी होना। चौथा, दुराचार से जो दूर रहे उसकी बुद्धि कुंआरी रहती है। वहां तो एक ओर शब्द है लेकिन दुराचार में सब कुछ आ जाता है। इसलिए मैं 'दुराचार' शब्द एक सार्वभौम शब्द का प्रयोग करता हूं। दुराचार से मुक्त रहता है उसकी बुद्धि कुंआरी रहती है। और पांचवा सूत्र है बुद्ध का, हिंसा न करना। जो कभी किसी की हिंसा न करे उसकी बुद्धि कुंआरी है। भगवान पतंजलि ने एक सूत्र दिया है अहिंसा का 'अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्याग।' अहिंसा इतनी महान शक्ति है। विश्ववंद्य गांधी बापू ने सत्य और अहिंसा की साधना की। और आज दो अक्टूबर-गांधीजयंती को यूनो ने भी 'अहिंसा दिन' के रूप में घोषित किया है। हिंसा नहीं करना। तो जो मेरे पास प्रश्न आया है कि कुंआरी बुद्धि कैसे हो? बस, इन पांचों कुशील से हम बचें और तो बुद्धि कुंआरी रह सकती है। लेकिन नादान अवस्था में कोई चोरी हो जाए, कोई व्यसन हो जाए, कोई झूठ बोल लिया जाए, जो ये पांच शील की बात है उसमें कहीं शीलभंग हो जाए तो नादान अवस्था में हुआ ये शील भंग क्षम्य माना गया है।

दूसरी बात कि बुद्धि भटकती कैसे बंद हो? बुद्धि का ठहराव हो जाए, बुद्धि भटके ना, कहीं रुक जाए। जिसकी बुद्धि तमाम प्रलोभन से दूर रहेगी उसकी बुद्धि भटकाव से मुक्त रहती है।

रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई।

तुलसी ज्ञानदेव की चर्चा करते हुए 'उत्तरकांड' में लिखते हैं-

बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई।

अनेक प्रलोभन हमारे सामने आएंगे। उसी समय बुद्धि यदि जो भटकी हुई है तो प्रलोभन में लिप्त हो जाती है। प्रलोभन आया तो बुद्धि का भटकाव शुरू हो गया। और प्रलोभन सदैव बड़े खूबसूरत रूप लेकर आते हैं। बड़े अच्छे लिबास में प्रलोभन आते हैं। प्रलोभन धीरे-धीरे आदमी को पकड़ता है। प्रलोभन धीरे-धीरे हमारे मन में प्रवेश करता है और बुद्धि को भटकाव में डाल देता है। इसलिए मेरा एक वाक्य है, हर एक घटना से, हर एक व्यक्ति से, हर एक संबंध से एक डिस्टन्स बनाये रखो वर्ना बुद्धि प्रलोभन में फंस जाती है और बुद्धि भटकने लगती है। और तीसरी बात जो आपने पूछी है कि बुद्धि निर्णायक स्थिति में कैसे आये? स्थिर कैसे हो? याद रखना, जो वस्तु शुद्ध होती है वो कालांतर में स्थिर हो जाती है। हमारी बुद्धि प्रलोभन से और ये पांच जो कुशील है इससे दूर रहेगी तो शुद्धता के कारण बुद्धि अपने आप स्थिर होने लगेगी। स्थिर और शुद्ध मानसिकता पैदा होती है। मैं कह सकता हूं, जिम्मेवारी के साथ कह सकता हूं, शुद्धता आदमी की बुद्धि को स्थिर करती है; अवश्य स्थिर करती है।

तो मेरे भाई-बहन, आदमी जितना शुद्ध उतना स्थिर। तो बुद्धि को निर्णायक रखने के लिए, प्रज्ञा को प्रतिष्ठित करने के लिए 'तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठित।' यहां तो बहुत बड़ी लिस्ट है 'भगवद्गीता' में तो। लेकिन ये एक निचोड़ सूत्र है कि शुद्धता, जितनी हो सके। हम संसारी लोग है साहब! हमारे जयंतबापा पाठक, गुजराती के एक पहुंचे हुए कवि, अब तो नहीं रहे, कविता लिखी थी-

दडदड दडदड दडी पडे भै, माणस छे।
रमतां रमतां लडी पडे भै, माणस छे।

दीक्षित दनकौरी का शे'र याद आ रहा है-

या तो कुबूल कर मुझे मेरी कमज़ोरियों के साथ।
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाईओं के साथ।

या तो कुबूल कर मैं ऐसा हूं, मैं पापी हूं, मैं दीन हूं, मैं ये हूं। तुलसी ये ही तो कहते हैं 'विनयपत्रिका' में-

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी।।

जितनी शुद्धता इतनी स्थिरता। ये प्रयोग करना पड़ेगा। थोड़ा समय निकालना होगा। बड़ा मज़ा आएगा। बड़ा रस मिलेगा। तो ये आपकी एक जिज्ञासा थी। उसके बारे में बोल पड़ा। आज बहुत से कुछ प्रश्न है मेरे पास।

''जब तक हम रहते हैं रामकथा में परम सात्त्विक-तात्त्विक वचन सुनते हुए अहसास होने लगता है कि कितनी अपार इच्छाएं लिए हुए हम हैं! कितनी गहरी दबी हुई विषय वासनाएं, स्वभाव की छोटी-बड़ी विकृतियां तो गिनी नहीं जा सकती! लगता है सदियां लगेगी इनसे मुक्त होने में लेकिन भगवद्कथा में यहां भय बिलकुल नहीं लगता। पूर्ण सुरक्षित होने की अनुभूति सतत होने लगी है अक्षुण्ण रूप में। लेकिन बापू, हम फिर यहां से जाएंगे तो वो ही इच्छाएं, विकृति, वासनाएं ये सब हम को पकड़ लेगी! हम भूल जाते हैं। फिर वो ही के वो ही कुंजर स्नान जैसा हो जाता है। इसी स्थिति में कायम रहने के लिए कि हमारे सद्गुरु को हमारे लिए ज्यादा श्रम न करना पड़े इसलिए कोई कुंजी है कि हम सत्संग से दूर जाने के बाद भी इन छोटी-बड़ी विकृतियों से बच सके?'' मुझे लगता है कि आप की पीड़ा ही आप का मार्ग खोलेगी। क्योंकि कम से कम हम नहीं कर पाते उसकी पीड़ा भी होना अच्छी निशानी है। कई को तो पीड़ा ही नहीं होती! उसके लिए क्या करोगे? कोई असर ही नहीं! लेकिन सत्संग बेअसर नहीं होता। कथा तो पूरी हो जाएगी। लेकिन उसके बाद मानसिक रूप में उसको गुनगुनाओ। लंबा चलेगा ये प्रोसेस लेकिन फायदा जरूर होगा।

आइये, 'मानस-किष्किन्धाकांड' में चलें। कल राम-लक्ष्मण के संवाद में ऋतु वर्णन था जो 'किष्किन्धाकांड' के कुछ संवाद है उसमें प्रवर्षण पर्वत पर राम भगवान लक्ष्मणजी को ऋतु और ऋत दोनों की बातें करते हैं। शरद ऋतु चल रही है ओलरेडी। ये शारदीय दिन हैं। शरद ऋतु बड़ी प्यारी है। बड़ी प्यारी है शरद ऋतु। कभी स्वतंत्र वर्णन भी एक बार करेंगे हम। वर्षा ऋतु पूरी हुई। भगवान राम मुखर हुए और लक्ष्मणजी से कहते हैं कि-

बरषा बिगत सरद रितु आई।
लछिमन देखहु परम सुहाई।।

हे लक्ष्मण, तू देख, कितनी सुंदर ऋतु आई है शरद ऋतु! और उसके बाद एक-एक पंक्ति-

फूलें कास सकल महि छाई।
जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई।।

बर्षा ऋतु का वर्णन करते-करते मेरे ठाकुर रामभद्र लक्ष्मण को कहते हैं कि हे लक्ष्मण, ये पूरी पृथ्वी में ये जो फूल है, कुछ विशेष वनस्पतियों के सफ़ेद फूल से धरती छा गई है। रामजी कहते हैं, लक्ष्मण, मुझे लगता है, वर्षा ऋतु को बूढ़ापा आ गया है। भगवान राम कहते हैं, धीरे-धीरे वर्षा ऋतु की जवानी गई और शरद के रूप में बूढ़ापा आया।

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा।
जिमि लोभहि सोषइ संतोषा।।

शरद ऋतु में आकाश में अगस्त्य का तारा उदित होता है। और अगस्त्य का तारा जब उदित होता है तो रास्ते पर वर्षा ऋतु के कारण जो डाबर पानी, मैला पानी है वो पानी धीरे-धीरे सूखने लगता है। कैसे? जैसे संतोष उदित हो जाये और आदमी का लोभ सुख में बदले।

सरिता सर निर्मल जल सोहा।
संत हृदय जस गत मद मोहा।।

पहाड़ पर ठाकुर है। लक्ष्मण, तू देख, सरिता, नदियां और सरोवर में निर्मल जल दिखता है। जो डाबर पानी था वर्षा के कारण, शरद आते ही निर्मल हो गए। कैसा लगता है सरोवर और सरिता? जैसे साधु का हृदय मद और मोह से मुक्त होता है और जैसे साधु का अंत:करण निर्मल होता है वैसे ही सरोवर और नदियां निर्मल हैं। तो ये जल की कम होने की प्रक्रिया कैसी लगती है? 'ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी।' जैसे ज्ञानी, जैसे समझदार आदमी पता न लगे परिवार को, समाज को, संसार को ऐसे धीरे-धीरे अपनी ममता को कटाता है। शरद ऋतु आते ही एक ही दिन में नदी का प्रवाह बंद नहीं होता। धीरे-धीरे पानी कम होता है वैसे ज्ञानी धीरे, धीरे, धीरे, धीरे ममता को त्यागता है।

जानि सरद रितु खंजन आए।
पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।।

राघव ने लक्ष्मण को कहा कि शरद ऋतु के कारण खंजन पक्षी आ गए। नाम ही बड़ा प्यारा है खंजन। जो शब्द शृंगार रस में प्रयुक्त किया जाता है। बड़ा प्यारा पक्षी है। ये ऋतु में ही आते हैं फिर नहीं आते। कैसे? 'पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।' समय आता है तब आदमी के पुण्य का उदय होता है। कई लोग मेरे पास आते हैं, बापू, हमने इतना सत्कर्म

जिसकी बुद्धि तमाम प्रलोभन से दूर रहेगी उसकी बुद्धि भटकाव से मुक्त रहती है। अनेक प्रलोभन हमारे सामने आएंगे। उसी समय बुद्धि यदि जो भटकी हुई है तो प्रलोभन में लिप्त हो जाती है। प्रलोभन आया तो बुद्धि का भटकाव शुरू हो गया। और प्रलोभन सदैव बड़े खूबसूरत रूप लेकर आते हैं। बड़े अच्छे लिबास में प्रलोभन आते हैं। प्रलोभन धीरे-धीरे आदमी को पकड़ता है। प्रलोभन धीरे-धीरे हमारे मन में प्रवेश करता है और बुद्धि को भटकाव में डाल देता है। इसलिए मेरा एक वाक्य है, हर एक घटना से, हर एक व्यक्ति से, हर एक संबंध से एक डिस्टन्स बनाये रखो वर्ना बुद्धि प्रलोभन में फंस जाती है और बुद्धि भटकने लगती है।

किया, हमने फलां को इतनी मदद की फिर भी हमको यश-प्रतिष्ठा क्यों नहीं मिलती? तुम दे दो। अमुक वस्तु का समय आने पर फल मिलता है। और कोई भी आदमी को देर से यदि फल मिले कुछ अच्छे काम के तो समझना अब मेरे पुण्य का उदय हुआ है। फल पकता है और रामकथा की महिमा गाओ, भागवत की महिमा गाओ, जगदंबा की महिमा गाओ, अल्लाह की इबादत करो या तो नमाज अदा करो, कलमा पढ़ो, जो भी करो उसका पुण्य तो इतना है साहब! मैं यद्यपि पुण्य-पाप ये सब जोड़कर जानेवाला आदमी नहीं हूं। अभी नीतिनभाई ने भी कहा व्यासपीठ की व्याख्या कि प्रसन्नता ही पुण्य है, अप्रसन्नता ही पाप है। बस, मेरी तो यही व्याख्या है। आदमी जब प्रसन्न हो तब समझना पुण्य का उदय हुआ है और सब कुछ उसके पास हो लेकिन मुंह चढ़ाकर बैठा तो समझना उसको पुण्य मिलेगा ही नहीं! पुण्य प्रकट होता है समय के बाद। जैसे समय आने पर खंजन पक्षी आता है वैसे समय आने पर पुण्योदय होता है।

पंक न रेनु सोह असि धरनी।
नीति निपुन नृप कै जिस करनी।

धरती कीचड़ और पानी से मुक्त हो गई है। कोई मिट्टी और कादव-कीचड़ नहीं है क्योंकि शरद आ गई है। कैसा लगता है? नीति में निपुण राजा जैसे कीचड़ से मुक्त होता है; कषाय से मुक्त होता है; अनीति से मुक्त होता है; अप्रामाणिकता से मुक्त होता है। ऐसा नीति निपुण राजा जैसा दिखता है वैसे आज पूरी पृथ्वी दिख रही है।

जल संकोच बिकल भईं मीना।
अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना।।

क्या सुंदर दर्शन है मेरा ठाकुर का राजीवनैन से! हे लक्ष्मण, देख भाई, पानी कम होने लगा तो मछलियां विकल होने लगी। दर्शन तो देखिये ठाकुर का! जल संकोच, वर्षा ऋतु में अगाध जल में मछलियां आनंद में थी तो विकल, मर तो नहीं गई लेकिन कम होने पानी में मछली तड़पती है, विकल हो जाती है। कैसे? 'अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना।' जैसे अनपढ़ कुटुम्ब; ऐसा कुटुम्ब जब संकोच अनुभव करता है बड़े लोगों के साथ कैसे बैठे? हमारे घर बड़ों को कैसे बुलाए? धनहीन है, अशिक्षित है उसको जो संकोच होता है वैसे जल कम होने के कारण मछलियां एकदम विकल हो गई। एक बिलकुल वंचित लोगों, साधनहीन लोगों तक तुलसी जा रहे हैं। और पढ़ना चाहिए, शिक्षा लेनी चाहिए ये तुलसी इतने साल पहले कह रहे हैं कि अबुध रहोगे तो संकोच में जिओगे, सभ्य समाज तुम्हारा आदर नहीं करेगा। लेकिन ग्राम्य जीवन में एक फायदा होता है कि भले पढ़े-लिखे न हो, भले पैसे न हो लेकिन खानदानी होती है साहब!

बिनु धन निर्मल सोह अकासा।
हरिजन इव परिहरि सब आसा।।

लक्ष्मण, आकाश शरद ऋतु के कारण बिना बादल का हो गया है। अब कोई बादल नहीं है। आसमां खुला दिखता है। और जैसे भजनानंदी, हरि का भगत, हरिजन अपने अंत:करण से सब आशाएं छोड़ देता है और चिदाकाश अपने भीतर का अंत:करण जैसे निर्मल दिखता है, वैसे आज बिना मेघ मुझे आकाश निर्मल दिखता है।

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी।
कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी।।

लक्ष्मण, वर्षा ऋतु में तो व्यापक वर्षा होती है चारों ओर मबलक बारिश होती है लेकिन शरद ऋतु के कारण कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी।' जैसे कोई कोई मेरी भक्ति प्राप्त कर लेता है। कोई-कोई मेरी कृपा का पात्र हो जाता है ऐसे 'कहुँ कहुँ बृष्टि' होने लगी ऐसा दिखता है।

चले हरसि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरिभगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि।।

हमारे यहां नियम है, वर्षा ऋतु होती है तो राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी ये चार एक जगह बैठ जाते हैं उसको चातुर्मास कहते हैं। चार व्यक्ति चातुर्मास करते हैं। अब केवल संन्यासी लोग चातुर्मास करते हैं। और संन्यासी ने भी चार महीने के बाद बंद कर दिया। दो महीने का कर दिया। देश-काल के लिए बराबर भी है। मुझे उसके लिए कोई आपत्ति नहीं। राजा विजय के लिए, तपस्वी अपने ज्ञान प्रचार के लिए, भिक्षुक अपनी भिक्षा के लिए, व्यापारी अपने वाणिज्य के लिए गति करता है। जैसे हरिभक्ति प्राप्त होने के बाद चारों आश्रमवासी साधन का श्रम छोड़ देते हैं। हरिभक्ति मिल गई, अब कोई साधन नहीं। भक्ति मिल जाये तो कोई साधन की जरूरत नहीं साहब! फिर तिलक करो, माला रखो ये आप की मौज। लेकिन प्रेम मिल गया। भक्ति मानी प्रेम, भक्ति मानी भरोसा। समय मिले तब 'रामायण' पढ़ो-सुनो; 'भगवद्गीता' पढ़ो-सुनो; कुरान का पाठ करो; बंदगी करो; धम्मपद का पाठ करो; बाइबल का पाठ करो। और सद्ग्रंथ की आज इक्कीसवीं सदी में तो बहुत जरूरत है। सद्ग्रंथ को सेवो, हां साहब! समझ में ना आये तो जिसने गुरुकृपा से समझा हो उनके पास बैठकर उनके पास समझने की प्रामाणिक कोशिश करो। बहुत बड़ा फायदा होता है। तुम दीक्षा लो, दान दो, तीर्थ-तप करो, यज्ञ-योग-क्रिया करो, उसके सामने केवल परमात्मा की महिमा का गायन

मन की शुद्धि अपने गुरु की चरणरज से होती है

बाप! इस सुंदर भूमि पर आयोजित नव दिवसीय रामकथा के आज के दिन की कथा के आरंभ में यहां की सरकार का एक विभाग मिनिस्ट्री ओफ हेपीनेस, उसके मिनिस्टर आदरणीया बहनजी आई। आपने व्यासपीठ के प्रति अपना आदर-अदब पेश किया। मैं स्वागत करता हूं और मेरे हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि ये हनुमान आपको रेहमान रहमत मुबारक कर दे। यहां के आदरणीय शेखसाहब, आपकी सरकार और बहनजी आप सबका हम दिल से आदर करते हैं। आपकी सरलता और शालीनता को हम सलाम करते हैं। बहुत-बहुत शुक्रिया। और आप सभी मेरे भाई-बहन, आप सबको भी मेरा व्यासपीठ से प्रणाम। 'मानस-किष्किन्धाकांड', जिसको केन्द्र में रखते हुए हम इस कथा में कुछ विशेष रूप में सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा कर रहे हैं। मेरे श्रोताओं की बहुत-सी जिज्ञासाएं हैं। उसमें से मैं आपसे थोड़ी बात करूं, फिर आगे बढ़ूं।

''बापू, मैं कृष्ण उपासक हूं। मैं बहुत समय से तृषातुर थी लेकिन इस कथा में मेरे पुण्य का उदय हुआ है। मेरे पति निर्गुण-निराकार की उपासना करते हैं। वे सिर्फ़ सतनाम की उपासना करते हैं। पर वे देवी-देवताओं के बारे में ठीक नहीं बोलते। वे कहते हैं कि भगवान सिर्फ़ एक है और वो है सत्। ये तैंतीस करोड देवी-देवता ये सब क्या है? तो निर्गुण की उपासना करनी चाहिए, ऐसा मेरे पतिदेव कहते हैं। और मेरा कन्हैया, मेरा कृष्ण मुझे कथा में खींच लाता है। बापू, तुलसी ने कहा है, 'जाके प्रिय न राम-बैदेही। तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।' तो क्या मुझे अपने पति से नाता नहीं रखना चाहिए? मुझे बहुत पीड़ा होती है जब ये किसी देवी-देवता के बारे में गलत बोलते हैं। मैं बोलती हूं कि भगवान राम और कृष्ण बाकी देवी-देवता भी पूजनीय हैं पर वे बोलते हैं कि भगवान तो एक ही होता है। बापू, मुझे बताओ कि उन्हें कैसे समझाऊं?''

समझाने की कोशिश मत करो। वो कहते हैं कि भगवान एक है तो उसके साथ सहमत हो जाओ। तकरार मत करो। तुम्हारी निष्ठा तुम्हारे दिल में रखो। इक्कीसवीं सदी है और इसमें लड़ाई! तुलसीदासजी ने जो लिखा है कि 'जाके प्रिय न राम-बैदेही।' ये एक ऊंचाई पर पहुंचे हुए साधक के बारे में लिखा है। हमें संसार संभालना है। आपको यदि कृष्ण भजन में आपके इष्ट के प्रेम में यदि वो बाधा न डालते हो तो उसको निराकार मुबारक! आप साकार की भक्ति करें। तकरार न करें। एक दूसरे को सहयोग करें। सहमत हो जाओ। बाकी रिश्ता तोड़ना ऐसा नहीं करना। संवाद करो। कोशिश ही मत करो समझाने की। क्योंकि वो भी सच कह रहे हैं कि परमात्मा एक है, अल्लाह एक है। गुरुनानक देव ने कहा, एक ओंकार सतनामा। तो वो जिसको एक ब्रह्म कहते हैं उसको तुम राम रूप में देखो, कृष्ण रूप में देखो। और प्रेम, भक्ति, अपनी निष्ठा उसको बाजार में रखने की जरूरत नहीं है। ये निजी संपदा है। उसको गुप्त रखो। तो पति ऐसा कहे कि मेरा एक ही परमात्मा है तो राजी हो, उसको सहयोग दो। मेरी तो यही राय है।

एक ने लिखा है, 'Bapu, you talk about fearless but practically speaking how do you become fearless ? What are the steps one can take to became trully?' fearless होने के लिए मेरा एकमात्र सूत्र है, सत्य का आश्रय हो। जो आदमी जितनी मात्रा में truth के आश्रय में, सत्य के आश्रय में, सत्य की पनाह में जीयेगा वो निर्भय होगा। कोई भी आदमी दुनिया में सत्य के बिना अयभ नहीं हो सकता। ये निर्विवाद सत्य है, जहां तक मेरी जानकारी और मेरा अनुभव है। और कोशिश मत करो fearless होने की। सत्य की मात्रा बढ़ाओ। एकमात्र मेरी समझ में उपाय है।

एक ओर जिज्ञासा, 'कल कथा में एक सूत्र आया कि जितनी शुद्धता उतनी स्थिरता। लेकिन बापू, हमें तो ठीक से पता ही नहीं तत्त्वत: मन की शुद्धि क्या होती है? बुद्धि की शुद्धि कैसे हो? चित्त की शुद्धि कैसे होती है?' बाप! आपने पूछा तो मैं कोशिश करूं, संकल्प-विकल्प की मुक्ति वो ही मन की शुद्धि है कि जिसमें कोई तरंग न उठे। लेकिन वो कैसे होती है, उसका आप रोज पाठ सुनते हैं, 'हनुमानचालीसा' सुनते हैं और हम कथा का आरंभ भी 'अयोध्याकांड' के इस प्रथम दोहे से करते हैं-

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायक फल चारि।।

मन की शुद्धि अपने बुद्धपुरुष, अपने मुर्शिद, अपने गुरु उनकी चरणरज से होती है। बस, एकमात्र उपाय। मैंने खुद ने ये अनुभव किया है। मैं अनुभव से बोल रहा हूं। मेरे यदि जितनी मात्रा में संकल्प-विकल्प कम हुए हैं, केवल दादा की चरणधूल का प्रताप है। तुम्हारे मोरारिबापू का अनुभव है। इससे हो सकता है। हम जीव है। हम संसारी हैं। मन उछल-कूद करता है। इस मन की उछल-कूद को शांत करने का, शुद्ध करने का मेरा अनुभव है गुरुचरणरज। मैं बहुत समय तक एक छोटी-सी डिब्बी में, ये काजल की जो डिब्बियां होती है, ऐसी एक डिब्बी में मैं दादाजी की चरणधूल रखता था और मैं स्कूल पढ़ने जाऊं, कहीं भी जाऊं ये डिब्बी मेरे पास साथ रहती थी। कभी भी मुझे लगे कि मन में उत्पात है, मन में संताप है, मन में कुछ गडबड है तब मैंने इस औषधि का उपयोग किया है और मैंने इससे शुद्धि का अनुभव किया है। आप भी करके देखो। हो सकता है।

तो गुरु की चरणरज मन की शुद्धि करती है। बुद्धि की शुद्धि का भी उपाय 'मानस' ने बताया। ये तो मोबाईल आरोग्यालय है, औषधालय है। 'बिबुध वैद भव भीम रोग के।' तुलसी कहते हैं, समस्त रोगों का इलाज पवित्र ग्रंथ करता है। तो बुद्धि की शुद्धि यदि करनी है मेरे भाई-बहन, तो एक मार्ग ओर बताया 'मानस' ने-

जनक सुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।

पराम्बा शक्ति दुर्गा जानकी भवानी आदि अम्बा; ये जो जगदम्बा है इनके चरणों को मनाने से साधक की बुद्धि शुद्ध होती है, ऐसा 'मानस' का अभिप्राय है। बच्चे बनकर पराम्बा के चरण को मनाओ। माँ की कृपा से ये बुद्धि निर्मल होती है। और ये पर्वत पर बैठी कोई दुर्गा, कोई अंबा ये तो है ही लेकिन घर में अपनी अम्मा बैठी हो उनके चरण को मनाओ, बुद्धि शुद्ध होगी। आध्यात्मिक यात्रा ठीक करनी हो तो माँ से शुरू करो। मुझे इस बार नवरात्रि की कथा करनी है यदि सब ठीक रहे तो 'मानस-मातृदेवो भव।' मैंने ओलरेडी निर्णित कर लिया है। अल्लाह करे सब ठीक रहे। जिस रूप में कश्मीर डिस्टर्ब है, जो-जो जिस रूप में सबकुछ चल रहा है। लेकिन कहीं भी हो, जो भी हो लेकिन मेरा मन ये कह रहा है कि इस बार की नवरात्रि की कथा होगी 'मानस-मातृदेवो भव।' माँ से शुरू करो। अपनी अम्मा से शुरू करो। माँ से बड़ा कौन देव है? इसलिए ठीक भारतीय दार्शनिकों ने, उपनिषद के प्रवक्ताओं ने, रचयिताओं ने 'मातृदेवो भव' कहकर सबसे पहले माँ की प्रस्थापना की है।

आध्यात्मिक साधना में माँ की दुआ बहुत बल देती है। मुझे पूछा गया कि बापू, कल आप कह रहे थे वो बीडीवाली बात, तो मैंने तुरंत माँ को बता दिया फिर दादा को बताया। ये जो इकरार मैंने आपके सामने रखा तो मुझे अच्छा प्रश्न पूछा गया कल कि बापू, दादा को आपने बताया था तो दादा कुछ बोले थे? दादा इतना ही बोले कि मेरी माँ को बता दिया, बात खत्म हो गई। गुरु तक जाने की जरूरत नहीं है। माँ से शुरू करो। एक लब्ज नहीं बोले थे। माँ के चरणों में निवेदन हो गया, बात खत्म हो गई। अब माँ की दुआ लो।

सुकामां सुवाडे भीने पोढी पोते,
पीडा पामु पंडे, तजे स्वाद तो ते;
मने कोण पोतातणुं दूध पातुं
महा हेतवाळी दयाळी ज मा तुं।

'माँ', एकाक्षर मंत्र है, हे माँ, हे माँ, हे माँ। हमारी चर्चा चल रही है, मन की शुद्धि गुरुचरण धूलि से। बुद्धि की शुद्धि माँ के चरणों को मनाने से। चित्त शुद्धि, 'जाकर चित्त अह गति सम भाई।' चित्त की गति भी सर्पाकार होती है। चित्त सर्पाकार है लेकिन उसके दर में जाए तो उसमें सीधा हो जाता है। तो चित्त सर्पाकार है। उसकी शुद्धि, उसके सीधापन के लिए किसी दर पर सिर झुकाना है। चित्त को सुन्दर बनाना है, चित्त को एकरूप बनाना है, तो कोई दर पर रहना चाहिए; कोई एक स्थान निश्चित करना चाहिए; कोई एक जगह ऐसी हो कि हम वहां सिर रखकर रो सके। एक स्थान निश्चित होना चाहिए आदमी का। या तो मंदिर या मस्जिद; काबा या काशी। कोई फ़र्क नहीं पड़ता। कहीं भी जाओ। ये भेद पैदा किया है नासमझ लोगों ने जिसको धर्म का अता-पता कोई नहीं! और तथाकथित लोगों का सब ये खेल है!

तो बाप! कोई ऐसा दर जहां चित्तवृत्ति सीधी हो जाए। तो चित्तशुद्धि का उपाय है कोई आस्था, कोई दर, जहां चित्त सीधा हो जाये। अहंकार की शुद्धि कैसे? अहंकार की शुद्धि एक विशेष रूप में अभिमान स्वीकार कर होती है। 'मानस' ने सब रहस्यों के जवाब दिए हैं। अहंकार बहुत खराब है। तुलसीदासजी ने 'मानस' में लिखा है, 'अहंकार अति दुःखद डमरुआ।' बहुत बड़ा दुःख है

अहंकार। एक गांठ का रोग है। मानो केन्सर का रोग है। मान लो, यहां से काटो तो यहां प्रसर जाता है। इधर से काटो तो यहां निकल जाता है। प्रसरता रहता है अहंकार। धन का छूटा तो प्रतिष्ठा का आ गया। प्रतिष्ठा का छूटा तो तीसरी वस्तु का आ गया। विकसित होता जा रहा है अहंकार। कैसे शुद्ध किया जाये? तुलसी ने एक औषधि दी है। 'अस अभिमान जाइ जनि मोरे।' मेरे में से ऐसा अभिमान कभी जाए ना कि 'मैं सेवक रघुपति पति मोरे।' मेरा प्रभु पति है और मैं उसका सेवक हूं ऐसा अभिमान मुझमें से कभी हटे ना। अहंकार मलिन है लेकिन मैं परमात्मा का हूं, मैं अल्लाह की औलाद हूं, मैं ईश्वर का अंश हूं, ऐसा एक सात्त्विक अभिमान आदमी के अहंकार से उसको शुद्ध कर देता है।

तो आगे चलें। राम और लक्ष्मण का संवाद चल रहा है 'किष्किन्धाकांड' में और वहां रामजी शरद ऋतु का वर्णन करते हैं।

सुखी मीन जे नीज अगाधा।
जिमि हरि सरन न एकउ बाधा।।
फूलें कमल सोह सर कैसा।
निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा।।

हे भाई, जहां पानी कम है वहां तो मछली विकल है लेकिन कहीं-कहीं पानी अगाध है तो वहां मछली प्रसन्न है, सुखी है। अगाध पानी में मछलियां बहुत शरदऋतु में सुखी है। कम पानी में दुःखी और जैसे परमात्मा की शरण में जीव चला जाए तो उसको जगत में कोई बाधा, कोई चिंता नहीं। कितना प्यारा सूत्र है! बिल्कुल सूत्रात्मक चर्चा ठाकुर कर रहे हैं। जहां अगाध जलराशि वहां मछलियां सुखी है, वैसे एकमात्र हरि की शरण वहां जीव सुखी है। वहां जीव को प्रसन्नता है। बाकी जहां भी जाए कोई न कोई बाधाएं है। लक्ष्मण, देख भैया, इस सरोवर में कमल खिले हैं शरदऋतु के शारदीय कमल। तो कैसा लगता है? जैसे निराकार-निर्गुण व्यापक ब्रह्म राम-कृष्ण बनकर आ जाते हैं और सुन्दर लगने लगते हैं वैसे कमल शरद ऋतु के कारण खिलने लगे तो मानो निराकार साकार हुआ।

गुंजत मधुकर मुखर अनूपा।
सुंदर खग रव नाना रूपा।।
चक्रबाक मन दुख निसि पेखी।
जिमि दुर्जन पर संपित देखी।।

हे लखन, देख, चक्रवाक पक्षी। चक्रवाक का मतलब है चकवा। चकवा और चकवी हम जानते हैं, ये रात्रि के वियोगी पक्षी हैं। तो चकवा शरद ऋतु में रात्रि को देखकर दुःखी होता है। कैसे? जैसे दुर्जन दूसरों की संपत्ति देखकर दुःखी होता है। संपत्ति पांच है। एक तो धनसंपदा। हमारा चकवा मन किसी के धन की वृद्धि देखकर दुःखी होता है कि उसको इतने पैसे कैसे मिल जाए! दूसरा, किसी को समाज में प्रतिष्ठा मिल जाती है तो दुर्जन को अच्छा नहीं लगता। तीसरी संपत्ति शांति है। कोई आदमी किसी भी विषम परिस्थिति में शांत रह सकता हो तो दुर्जन को जी जलता है कि ये आदमी शांत कैसे रह सकता है? चौथी वस्तु विश्राम आदमी की संपदा है। आदमी विश्राम में जीता हो तो दुर्जनों को चिंता होती है! शांति में जीता है तो चिंता होती है! और पांचवा है रूप। रूप संपदा है। दुर्जन किसी की रूप संपदा देखकर दुःखी होता है। क्यों दुःखी होता है? कि दुर्जन सोचता है, ये दूसरे का है। रूप अपना हो तो राजी होता है। रूपया अपना हो तो राजी होता है। प्रतिष्ठा अपनी हो तो राजी होता है। शांति खुद को मिले तो खुश है। कितने भी बीझी हो तो भी राजी है। इस पीड़ा से मुक्त होने का एक ही उपाय है कि रात केवल किसी की ही नहीं है, मेरी भी है। चांदनी अपनी है। चांद अपना है। सितारे अपने हैं। रात की शांति का लाभ हम भी ले सकते हैं। रात को विश्राम हम कर सकते हैं लेकिन उसको अपना समझें। चार भाई का परिवार हो उसमें एक भाई ज्यादा श्रीमंत है, उसके पास ज्यादा अर्थ संपदा है तो ये मेरे भाई की अर्थ संपदा है; ये मेरा है, पराया नहीं है, ऐसा समझें तो दुर्जन भी इसका लाभ ले सकता है। मेरे परिवार में एक व्यक्ति कोई सुंदर है तो ये हमारे घर की सुंदरता है, ये हमारी खानदानी का सौन्दर्य है, तो हम एन्जोय कर सकते हैं। लेकिन हमारी दुर्जनता उसको पर समझकर के हमें पीड़ा पैदा करती है। परिवार में एक व्यक्ति का शांत स्वभाव है। उसका हम लाभ ले सकते हैं कि अपना है, अपने परिवार का आदमी इतना शांति से सब समस्याओं का समाधान करता है, इसका हम लाभ ले सकते हैं लेकिन हमारी दुर्जनता हमें दुःखी करती है। और दुर्जनता दुःख तब देती है जब निज-पर का हम भेद पैदा करते हैं। तो गोस्वामीजी ये शरद ऋतु का वर्णन कर रहे हैं।

चातक रटत तृषा अति ओही।
जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही।।

शरदऋतु आ गई। चातक तड़पता है। तृषातुर रहता है। उसको एक प्रकार का दु:ख है, असुख है। शरद में तो सबकुछ है लेकिन अपनी एक चाह के कारण, अपनी एक कामना के कारण इतनी प्यारी शरद ऋतु का वैभव फ़ैल रहा है लेकिन चातक तृषा में पीड़ित है। कैसे? कि सब तरह की सुविधा हो लेकिन कोई शंकर का द्रोह करे तो कभी सुख नहीं प्राप्त कर सकता। क्या अद्‌भुत सूत्रपात करते हैं! शिवद्रोही कभी सुख नहीं पाता। इतनी प्यारी ऋतु हो तो भी शिवद्रोही चुक जाएगा।

सरदातप निसि सिस अपहरई।
संत दरस जिमि पातक टरई।।

शरदऋतु में अपना एक विशिष्ट ताप होता है। शरद ऋतु एक अर्थ में, वैदकीय अर्थ में रोगों की माता मानी गई है। शरद रोगजननी है। शरद और आसो में रोग बहुत होते हैं। और जिसके अंदर की प्रतिकारक शक्ति कम हो जाती है उसको ये रोग ज्यादा पकड़ लेता है। ये रोग की माँ है। हमारे यहां ऋतु के अनुसार व्रत का बंधारण हुआ। शरदऋतु में ताप बहुत होता है। इस ऋतु का जो ताप होता है ये वैशाख के ताप से इसकी तासीर अलग होती है। वैशाख का जो ग्रीष्म का ताप है उसकी अलग तासीर होती है। शरद ऋतु में ताप होता है। एक जुदी तासीर की गर्मी होती है। रात होती है तब वही शरद ऋतु की रात आदमी के ताप को हर लेती है। रात्रि में शरदऋतु का चांद आदमी के दिवस के दरमियान को ताप था उसको हर लेता है, चांदनी में डूबो देता है। कैसे? जैसे किसी साधु का दर्शन हो जाए और जन्म-जन्म के पाप मिट जाए। अवश्य! यदि साधु साधु है तो उसके दर्शन से एक जन्म के नहीं, जन्म-जन्म के पाप खत्म हो जाते हैं। प्रमाण एक कि किसी साधु को देखकर हमें खुशी क्यों होती है? प्रसन्नता क्यों होती है? हमारी आंख में आंसू क्यों आते हैं? इसका मतलब ये कि प्रसन्नता तभी आती है जब पाप खत्म होते हैं। यदि हम प्रसन्न नहीं है तो समझना पाप अभी है। और साधु के दर्शन से-

मुख दिखत पातक हरै परसत करम बिलाहिं।
बचन सुनत मन मोहगत, पूरब भाग मिलाहिं।।

तुलसी कहते हैं, जिसका चेहरा देखने से पाप कटे। साधु का चेहरा देखने से हमारे पाप कट जाए। लेकिन मैं तो इसका दूसरा भी अर्थ करता हूं कि हम देखें न देखें, हम साधु को पहचान सकें न सकें लेकिन इसका अर्थ ये करना कि कोई साधु हमें देख ले, हमारा पाप जाए। कोई साधु हमें देख ले, कोई फ़कीर देख ले। इससे पाप कटते हैं। क्योंकि साधु के चेहरे की बात ही बिलग होती है। कुछ चेहरे ऐसे परमात्मा ने रूहानी बनाये होते हैं उसमें साधना का सौन्दर्य होता है; भजन के आभूषण होते हैं; हरिनाम की लालिमा होती है और वेदांत और वैराग्य के कुंडल पहने हुए होते हैं। ये बिलग रूप है। ये बिलग छबि है। एक बिलग-सी आभा, शोभा उसके अगल-बगल घूमती रहती है। मैं तो इसी पक्ष में हूं, साधु को हम देखें तो भी पहचान नहीं पाते। अल्लाह को प्रार्थना करे कि कोई साधु हमें देख लें। दूसरा, साधु का स्पर्श। कोई वृद्ध साधु हो तो पैर छूने ना दे तो उसका नियम मत तोड़ना। 'परसत करम बिलाहिं।' चरणस्पर्श से कर्म खत्म हो जाए, कर्मजाल कट जाए, लेकिन मैं वहां परसत का दूसरा अर्थ भी करूं कि तुम प्रतीक्षा करो कि साधु स्वयं तुमको छू ले। कोई फ़कीर तुम्हारे सिर पर हाथ रख दे। कोई कंधे पर हाथ रखे कि बेटा, कैसे हो? पाप गए। साधु का हाथ कंधे पर आना जन्म-जन्म का बोझ उठा लेना। जो हमारे कंधे पर बोझ होता है उसको हटाना। वो कुछ वचन बोले तो हमारे मोह का अंधेरा मिट जाता है लेकिन तुलसी कहते हैं, 'पूरब भाग मिलाहिं।' हमारे 'रामचरित मानस' में दो विधा हैं संत मिलन की। एक 'पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।' पुण्य इकठ्ठे हो जाये तो संत मिलता है। लेकिन दूसरी विधा है-

अब मोहि भा भरोस हनुमंता;
बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता।।

विभीषण कहते हैं, हनुमानजी, मुझे यकीन हो गया कि मुझ पर परमात्मा की कृपा हो गई क्योंकि कृपा के बिना संत नहीं मिलता। तो एक असमंजसता है, एक भ्रम पैदा हो जाता है कि संत कृपा से मिलता है कि पुण्य से मिलता है? दोनों से मिलता है। बाकी हमारे जन्म-जन्म का कचरा निकल जाए तो समझना किसी की दुआ से प्राप्त हुआ है।

देखिहु चकोर समुदाई।
चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई।।

चकोर पक्षी के झुंड के झुंड चांद को देखने में डूब गए हैं। कैसे? वो आंखें मिला रहे हैं जैसे हरिजन-भगवद्‌भक्त हरि की प्राप्ति के बाद परमात्मा के दर्शन में लगा रहता है। उसको एक ही छबि दिखने लगती है चारों ओर ऐसे चकोर को चांद ही दिखता है।

मसक दंस बीते हिम त्रासा।
जिमि द्विज द्रोह किएं कुल नासा।।

अब तो कलियुग है तो मच्छर भी वर्णसंकर निकले! डेंगू और ना जाने क्या-क्या! वर्षा में बहुत मच्छर होते हैं। क्योंकि कीचड़ है, पानी भरा है। हर जगह मच्छर गुनगुनाते हैं लेकिन जैसे-जैसे शरद आगे बढ़ती है, मच्छर का काटना कम हो जाता है। कलियुग है! हमने जमीन में इतने रसायन ज़हर डाला है कि सोच न पाए ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार की जाति जीवाणु की पैदा हो गई! ये हमने किया है। बाकी परमात्मा की सृष्टि में कुछ भी अकारण नहीं है। मच्छर जरूरी है पर मत्सर जरूरी नहीं है। मत्सर माने अहंकार, द्वेष, द्रोह; उसको मत्सर कहते हैं। मच्छर क्या काटता है? लेकिन मत्सर बहुत काटता है। मच्छर काटे तो उसका बुखार दो-तीन दिन में ऊतर जाए पर मत्सर-द्वेषी लोग काटते हैं इसकी दवा ही नहीं है। तो मच्छर के दंश कम हो गए। मच्छर धीरे-धीरे खत्म होने लगे इस ऋतु में। कैसे? कोई द्विज, ब्राह्मण, विप्र का द्रोह करे तो जैसे कुल का नाश हो जाए वैसे शरद में मच्छरों के कुल का नाश हो गया। द्विजद्रोह, लेकिन यहां वर्णपरक अर्थ नहीं है, सावधान! शब्द 'द्विज' है। 'विप्र' शब्द का अर्थ भी वर्णपरक नहीं है। मेरी व्यासपीठ ने कई बार कहा, विप्र माने जिसमें विशेष प्रकार की प्रसन्नता है, विशेष प्रकार की दीनता है उनको विप्र कहते हैं। जो व्यक्ति विवेक प्रधान है वो विप्र है। 'ब्राह्मण' बहुत पवित्र शब्द है लेकिन उसको वर्णवाचक मत बनाये। ब्रह्म को जाने उसको ब्राह्मण कहते हैं। द्विज का अर्थ है जिसका दूसरी बार जन्म हो गया है। तो यहां द्विज का अर्थ केवल वर्णवाचक नहीं। कोई भी हो। तो जाग गया है। जिसका दूसरा जन्म एक बार माँ के गर्भ में और दूसरा गुरुगृह है; जिसका जीवन बदल गया, वो सब द्विज है। सोच बदल जाए वो द्विज है। ऐसे द्विज कुल का द्रोह करना कुल नाश है।

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ।
सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाई।।

हे लक्ष्मण, भूमि जीव संकुल रहे वर्षा में पूरी पृथ्वी में इतने कीड़े-मकोड़े निकले कि पूरी पृथ्वी संकुल हो गई थी वर्षा के कारण। लेकिन शरद ऋतु प्राप्त होने से ये सब जीव दिखने बंद हो गए। कैसे? जैसे सद्‌गुरु मिल जाए तो हमारे संशय और भ्रमरूपी कीड़े-मकोड़े भाग जाए। और ध्यान देना, तुलसी कहते हैं, हमारा जो संशय है ना एक-दूसरे पर, किसी घटना पर, किसी व्यक्ति पर, किसी प्रसंग पर, किसी भी क्षेत्र में ये कोई मूल्यवान जीव नहीं है, कीड़े-मकोड़े हैं। ऋतु बदल दो, अपनेआप खत्म! कोई बुद्धपुरुष को मिलने दो, अपनेआप संशय-भ्रम का पूरा समुदाय खत्म हो जायेगा। गुरु मिले तो संशय मिटे। 'मानस' में संशय की बड़ी कहानियां है। किसको कहां संशय हुआ, किसको कहां संशय हुआ और इस संशय की निवृत्ति कब कैसे? जितनी स्मृति में आये बताकर रामजन्म की कथा कहनी है।

एक, संशय कोई सद्‌गुरु मिले तो जाए। सद्‌गुरु के लिए दो वस्तु याद रखना। ऐसे सद्‌गुरु का आश्रय करना जो दुर्गम ना हो और कमजोर ना हो। किसी को शंकर को गुरु करना है लेकिन दुर्गम है, कैलास में बैठा है। है तो त्रिभुवन गुरु अवश्य। तो शिव तो परमगुरु है लेकिन दुर्गम है, दुराराध्य है। मेरा 'मानस' कहता है, शंकर की आराधना बहुत करने के बाद भी दुर्लभ है। गुरु ऐसा बनाना जो सुगम हो, दुर्गम हो वो नहीं। और दूसरा, कमजोर को गुरु मत बनाना। समर्थ का आश्रय करें। और जो सही में बुद्धपुरुष होता है, सद्‌गुरु होता है वो कभी दुर्गम नहीं होता। कोई शिष्य गुरु को नहीं खोज सकता। गुरु ही शिष्य को खोजता है। और कभी तुम्हें तुम्हारा गुरु कहेगा कि हमको सही समय पर तुम मिल आये हो। ये निश्चित तत्त्व है। मुझे तो बिलकुल सुगम और समर्थ दोनों मिल गए। लेकिन मैं भी सोचता हूं कि मुझे त्रिभुवनदास दादा न मिलते, यद्यपि सद्‌गुरु के रूप में ना मिलते, वैसे तो जो संसारी वंश में तो है दादा, पिता के पिता लेकिन एक बुद्धपुरुष के रूप में नहीं

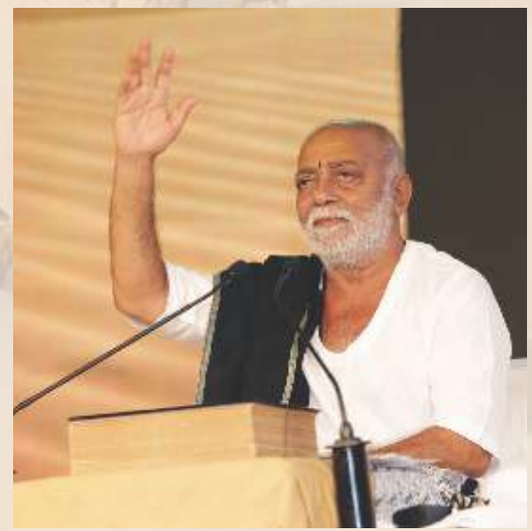

मिलते तो मोरारिबापू किस खेत की मूली है? मैं बहुत सोचता हूं। हम क्या है साहब! ये तो पोथी का प्रताप है कि कहां-कहां पहुंचे! ये मेरी खोखली नम्रता नहीं है, मेरी अनुभूति है। ये क्या है? मैं देखता हूं, ये गुरुकृपा है। ये केवल सद्गुरु की कृपा है। बोलनेवाले तो बहुत हैं। ये जानकारी ये अनुभूति साधक की बनी रहनी चाहिए। सद्गुरु के दर्शन न हो अभी लेकिन सद्गुरु के स्थान को देखकर संशय चला जाए। साहब! समर्पित शिष्य को गुरु की माला देखकर संशय चला जाए। गुरु की पादुका देखकर संशय चला जाए।

संशय के नाश का दूसरा सूत्र है, हम ना मिले, गुरु हमको मिल जाए। सद्गुरु मिल जाए। कोई भी बुद्धपुरुष तुमको मिले तो रोटी नहीं मांगता, तुम्हारे संदेह मांग लेता है। ला, तेरे संशय के समिध मेरे धुनें में डालकर भस्म कर दे। गुरुदर्शन से संशय जाते हैं। गुरु गुरु होना चाहिए। कोई किसी को 'गुरु' शब्द से नवाजिस कर दे तो बात और है लेकिन गुरुओं को भी सोचना चाहिए कि हम गुरु हैं कि नहीं? शिष्य बनने में बहुत आनंद है। गुरु बनने में बड़ी जिम्मेवारी है साहब! तो गुरु मिल जाए तो संशय जाए। गुरु के आश्रम में पैर जाए तो संशय जाए। गुरु के वचन सुने तो संशय जाए। गुरु के दीक्षित किये हुए शास्त्र को स्पर्श करने से संशय चला जाए।

परमतत्त्व के चरित्र न समझने से संशय पैदा होता है। परम लोगों का चरित्र समझ में नहीं आता। भगवान राम जानकी की शोध में रो रहे हैं दंडकारण्य में। शिव और सती दोनों कुंभज के आश्रम से कथा सुनकर कैलास जा रहे हैं और राम के इस ना समझ में आये ऐसे चरित्र को देखकर पार्वती को संशय हो गया, ये काहे का ब्रह्म है? ब्रह्म ऐसे रोता है क्या? और परम के चरित्र को न समझने से जो संशय पैदा होता है वो प्रमाण के बाद मिटता है। भगवान राम ने अपना ईश्वरत्व दिखा दिया सती को तब पक्का हो गया कि मेरा संशय गया। तब वो जाग्रत हो गई। शास्त्र स्वयं सद्गुरु है। 'सद्गुरु ग्यान बिराग जोग के।' शास्त्ररूपी सद्गुरु मिल जाए तो हमारे संशय मिट जाए। तो संशय के उद्गमस्थान की बातें भी 'मानस' में उठाई और उसके निवृत्ति की बातें भी 'मानस' ने उठाई। कोई सद्गुरु मिल जाए। जैसे शिवाजी को रामदास मिल गया। विवेक को ठाकुर मिल गया। वैसे कोई मिल जाये उसके संशय दूर। तो दर्शन से संशय जाए। उसके स्थान में पैर रखने से संशय जाए। उसके मुख से शास्त्र सुनने से संशय जाए। बहुत तरीके हैं।

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाई।
सदगुर मिलें जाहि जिमि संशय भ्रम समुदाई।।

ईश्वर तो मिला हुआ है। पहचान बाकी है। ईश्वर तो सबके घट में बैठा है। मिल जाए कोई सद्गुरु पर्दा खोल दे और मुखातिब कर दे, आमने-सामने कर दे। तुलसी कहते हैं, लक्ष्मण, वर्षा गई और निर्मल ऋतु आई और अभी तक सीता की कोई खबर नहीं मिली! तो लक्ष्मण-राम संवाद जो है इसमें शरदऋतु चल रही है। तो आइए, रामजन्म की कथा जो शेष समय हमारे पास है उसमें गा लें।

कथा के क्रम में हनुमानजी की वंदना के बाद नामवंदना की। उसके बाद तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' के प्रागट्य की कथा सुनाई। चार घाट बनाये। चार आचार्यों की बात की और तुलसी ने शरणागति के घाट से कथा का आरंभ किया और कर्म के घाट तीर्थराज प्रयाग में याज्ञवल्क्य-भरद्वाजजी का मिलन करवाया। भरद्वाजजी कहते हैं कि मुझे संशय है कि रामतत्त्व क्या है? रामतत्त्व की चर्चा रामकथा सुनाकर मुझे बताओ। तब याज्ञवल्क्यजी मुस्कुराये और रामकथा कहने से पहले उसने शिवकथा सुना दी। इसमें शिव और पार्वती के विवाह की कथा भी आ जाती है। उसके बाद शंकर कैलास पर बैठकर पार्वती को कथा सुनाते हैं और कैलास से कथा का आरंभ होता है।

भगवान शिव पार्वती के सामने रामजन्म के कारणों की चर्चा करते हैं। कुल मिलाकर पांच कारण हैं। रामजन्म से पूर्व रावण के जन्म की कथा तुलसी ने लिखी है। रावण, कुंभकर्ण और विभीषण ने बहुत तप किया। बहुत बड़े-बड़े वरदान प्राप्त किये और रावण बहुत अत्याचार और भ्रष्टाचार फैलाने लगा। पूरी धरती अकुला उठी। गाय का रूप लिया पृथ्वी ने और ऋषि-मुनियों के पास जाकर पृथ्वी रो पड़ी कि हे ऋषि-मुनि! रावण के त्रास से हमें बचाओ। ऋषि-मुनि कहते हैं, हमारे बस की बात नहीं। देवताओं के पास गए। देवताओं ने कहा कि हमारे पुण्य शायद खत्म होने पर है; हम कुछ नहीं कर पाते। ब्रह्मा ने कहा कि अब मेरे बस की बात नहीं है। अब तो एक ही उपाय है कि हम सब जिसके सेवक हैं वो परमतत्त्व ही इसमें से हमें उबार सकते हैं। समूह में देवस्तुति हुई। आकाशवाणी के द्वारा

समाधान मिला। प्रभु ने कहा कि मैं अंश के साथ प्रकट होऊंगा।

अब गोस्वामीजी हमें लिए चलते हैं अयोध्या जहां प्रभु का प्रागट्य होनेवाला है। रघुकुल का वो वर्तमान सम्राट महाराजाधिराज दशरथ। उसका परिचय दिया गोस्वामीजी ने। कौशल्यादि प्रिय रानियां राजा को आदर देती हैं। राजा अपनी रानियों को प्रेम देता है। और मिलकर परमतत्त्व की आराधना करते हैं। गोस्वामीजी कहते हैं, सब प्रकार का सुख था लेकिन एक बार धर्मधुरंधर अवधेश को ग्लानि हुई कि मुझे पुत्र नहीं है! मेरा रघुवंश मेरे से खत्म हो जायेगा? लेकिन मैं मेरी पीड़ा किससे कहूं? और दशरथजी का बड़ा प्यारा निर्णय अपने गुरुद्वार वशिष्ठजी के द्वार पर जाते हैं। जब कहीं से भी कोई जवाब न मिले, समाधान न मिले तो हमारी भारतीय परंपरा कहती है, अपने गुरु के पास चले जाओ। गुरु के पास जाकर अपने सुख-दुःख व्यक्त किये। शृंगि को बुलाया। पुत्रकाम यज्ञ हुआ। भगतिसहित आहुतियां यज्ञकुंड में डाली। यज्ञपुरुष अग्नि के रूप में प्रसाद का चरु लेकर प्रकट होते हैं। खीर का प्रसाद वशिष्ठ को दिया कि राजा को कहियों अपनी रानियों को बांट दे, पुत्रों की प्राप्ति होगी। राजा अपनी रानियों को जथाजोग बांट देते हैं। तीनों रानियों ने यज्ञप्रसाद प्राप्त किया। तीनों रानियां सगर्भा स्थिति का अनुभव कर रही हैं।

कुछ काल बीता। हरि को प्रगट होने की बेला आई। जोग, लगन, ग्रह, बार, तिथि, पंचांग अनुकूल हो गया। त्रेतायुग, चैत्रमास, शुक्लपक्ष, नौमी तिथि, मध्याह्न का सूर्य, अभिजित सोह रहा है। देवताओं को लेकर ब्रह्माजी आकाश में विमानों से परमात्मा की गर्भस्तुति करने लगे। प्रभु का प्राकट्य हुआ। चतुर्भुज विग्रह है। अलौकिक रूप को देखकर माँ कह रही है कि मैं किन शब्दों में बखान करूं? फिर माँ कहने लगी कि ठाकुर, आप आये, स्वागत लेकिन हमें तो मनुष्य के रूप में ईश्वर चाहिए। मानव के दो हाथ होते हैं। भगवान ने दो कर दिया फिर बोले कि अब? अब मनुष्य लगते हो। लेकिन बाप लगते हो, बेटे नहीं लगते हो। हमें पुत्र चाहिए। बच्चा जन्म लेनेवाला बिलकुल छोटा होता है, आप तो कितने बड़े हो! भगवान इतने छोटे हो गए कि मानो नवजात शिशु। कौशल्याजी से पूछा कि माँ, अब तो मैं बच्चा हो गया? बोले, बालक दिखते हो लेकिन बोलते हो बड़ों की तरह! बच्चा तो रोयेगा। आप रोओ। भगवान ने कहा, मुझ पर कौन आपत्ति आई कि मैं रोऊं? तब कौशल्या ने कहा, हे हरि! तुझ पर आपत्ति नहीं, तेरे बनाई दुनिया पर आपत्ति आई है। इसलिए आप रोओ कि आंसू और पीड़ा क्या होती है! हमारा नाज़िर कहता था कि-

गगनवासी! धरा पर बे घडी श्वासो भरी तो जो।
जीवनदाता! जीवन केरो अनुभव तुं करी तो जो।

बालक के रूप में माँ की गोद में ठाकुर रोने लगे और शिशुरुदन सुनते ही संभ्रम रानियां दौड़ आई कि माँ कौशल्या ने प्रसव की पीड़ा की कोई शिकायत नहीं की और सीधा बच्चा रो रहा है! दास-दासियां आई और खबर मिली प्रासाद से कि माँ कौशल्या ने पुत्र को जन्म दिया है। महाराज दशरथजी को खबर सुनकर के ब्रह्मानंद का अनुभव हुआ है, जिसका नाम सुनने से शुभ हो वो स्वयं मेरे पास आया! कौन मानेगा? गुरु को जल्दी बुलाइये। वो निर्णय कर दे कि वो भ्रम तो नहीं कि साक्षात् ब्रह्म है। गुरु आये। कहा, ब्रह्म है बालक के रूप में। और पूरी अयोध्या में परमानंद छा गया। और अयोध्या में रामप्राकट्य की बधाई और उत्सव का आरंभ होता है। अबू धाबी में नव दिवस के लिए स्थित इस व्यासपीठ की ओर से श्राद्ध पक्ष में आप सभी को रामजन्म की बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो।

मन की शुद्धि अपने बुद्धपुरुष, अपने मुर्शिद, अपने गुरु उनकी चरणरज से होती है। मैंने खुद ने ये अनुभव किया है। मेरे यदि जितनी मात्रा में संकल्प-विकल्प कम हुए हैं, केवल दादा की चरणधूल का प्रताप है। तुम्हारे मोरारिबापू का अनुभव है। हम जीव है। मन उछल-कूद करता है। इस मन की उछल-कूद को शांत करने का, शुद्ध करने का मेरा अनुभव है गुरुचरणरज। मैं बहुत समय तक ये काजल की जो डिब्बियां होती है, ऐसी एक डिब्बी में दादाजी की चरणधूल रखता था और कभी भी मुझे लगे कि मन में उत्पात है, मन में संताप है, मन में कुछ गड़बड़ है तब मैंने इस औषधि का उपयोग किया है और मैंने इससे शुद्धि का अनुभव किया है।

कथा–दर्शन

- त्याग की चरम सीमा है रामकथा। समर्पण का गौरीशंकर शिखर है रामकथा। परस्पर परम प्रेम की एक उत्तुंग ऊंचाई है रामकथा।
- रामकथा के प्रत्येक प्रसंग में इतिहास भी है और अध्यात्म भी है।
- राम अंतर्यामी भी है, बहिर्‌यामी भी है। राम अंतर्गामी भी है और राम बहिर्‌गामी भी है।
- जिसने इस जगत को बनाया है उस परमात्मा की करुणा चौबीस घंटे रहती है।
- वैश्विक चेतना को तुम बांध नहीं सकते।
- परम लोगों का चरित्र समझ में नहीं आता।
- शास्त्ररूपी सद्‌गुरु मिल जाए तो हमारे संशय मिट जाए।
- ग्रंथ यदि सद्‌ग्रंथ नहीं है तो कई ग्रंथों ने दुनिया में कई ग्रंथियां पैदा की है।
- आध्यात्मिकता कोई वस्त्र बदलने की घटना नहीं है।
- कोई भी बुद्धपुरुष तुमको मिले तो रोटी नहीं मांगता, तुम्हारे संदेह मांग लेता है।
- ऐसे सद्‌गुरु का आश्रय करना जो दुर्गम ना हो और कमजोर ना हो।
- विश्व में जो सेतुबंध का प्रस्ताव रखे ये आज के युग का प्रासंगिक गुरु है।
- समष्टि के अहंकार वो ही तोड़ सकता है जिसमें जरा भी अहंकार न हो।
- जीवन में आनेवाली विषम परिस्थितियां ही विषपान है।
- जीवन रेल्वे लाईन नहीं कि समान्तर चलता रहे।
- कोई भी वस्तु शुभकारक हो उसके लिए हमारा चिंतन होना चाहिए।
- सुख अच्छा है लेकिन सुख मिलता है साधन से और सुख मिलता है अनुकूल संबंध से।
- प्रसन्नता ही परमपद है। प्रसन्नता परमात्मा का पर्याय है।
- मंदिरों की महिमा है, अवश्य। लेकिन घर को मंदिर बनाओ।
- इन्फ़र्मेशन गंदी भी हो सकती है ; ज्ञान सदैव पवित्र ही होता है।
- शब्द आदमी की जागृति कर देता है।

इन्फ़र्मेशन मार्ग है, ज्ञान मंज़िल है

बाप! इस भूमि पर आयोजित नवदिवसीय रामकथा के आज के दिन के कथारम्भ में आप सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम! और इस कथा का जो मुख्य विषय है उसमें प्रवेश करें उससे पूर्व कल सांयकाल को यहां इस प्रेमयज्ञ में सभी विध-विध विद्या के उपासकों ने अपनी आहुतियां डाली। सबसे पहले तो दाणीभाई के संचालन में इस कथा का जो परिवार है बृहद् परिवार उसके सभी भाइयों ने यहां के लिबास में अपना एक कार्यक्रम पेश किया। इसमें बुज़ुर्गों ने भी साथ दिया। खुश रहो। उसके बाद मायाभाई के संचालन में एक दूसरा आनंद शुरू हुआ। इसमें सबसे पहले भाई अनवर मीर ने अपनी बात रखी। 'कुर्रान' और 'हरिरस' का समन्वय करते हुए दोनों ग्रंथो के मन्त्रों का पाठ भी किया उसने अपने ढंग से; बीच-बीच में अपनी बातें रखी। उसके बाद भाई गिरीश ने अपना एक अच्छा गीत अच्छे कंठ से गाया। फिर मायाभाई जो बात रखते हैं अपने ढंग से; उसका जो अपना विचार और अनुभव है उसके मुताबिक हर वक्त वो अपनी बात रखते हैं। हम सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर ओसमान का अपना तरीका है। हर वक्त कुछ न कुछ नया देते जाना। बहुत आनंद दिया। और कच्छडो बारे मास, भाई देवराज ने अपने ढंग से हम सबको विशेष प्रसन्नता प्रदान की। ओसमान के बेटे ने भी बड़ी तबियत से गीत गाया। फिर भैरवी। सब हमने एन्जोय किया। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि हम सब मिलकर के व्यासपीठ की छाया में कितना सुन्दर समन्वय कर रहे हैं, जिसकी आज सारे विश्व को जरूरत हैं। पाकिस्तान से आये एक कव्वाल ग्रूप भी आश्चर्यचकित था कि एक मीर का लड़का 'अल्लाहु' भी गाता है और 'नमामीशमीशान' भी गाता हैं! एक बहुत बड़ा मेसेज हैं, आवश्यक मेसेज है। अब 'आगे चले बहुरि रघुराया।' आगे चलें।

आज प्रश्न भी तो हैं। प्रश्नों से तो ज़िन्दगी भरी हैं बाप! 'We have come to katha after a very long time with my Sasu. But when you start manglacharan she goes to sleep. What is the reason?' कथा में कोई सो जाए उसका क्या कारण है वो मैं कैसे बता सकता हूं? जागने के बाद सोनेवाला ही बता सकता है। लेकिन जो सोये उसको डिस्टर्ब मत करना। कम से कम सोये भी है तो संसार में नहीं, सत्संग में सोये हैं। और ये सत्संग कभी न कभी जगाएगा। एक समय रहता था कि कथा में करीब-करीब बहुत लोग सो जाते थे लेकिन आज बहुत सुधार हुआ है कि बहुत चंद लोग सोते हैं। बहनजी, बहुत समय के बाद आप कथा में आई है और सास के साथ आई है तो कम से कम ये सास का उपकार मानो कि आप उसके साथ कथा में आई है। सो जाए तो सो जाए! और सास लोग सो जाए ये बहुत अच्छा है। क्योंकि कुछ लोगों का सोना अच्छा है, कुछ लोगों का जागना अच्छा है। आपको तो सुनने देती है! रिझन मत खोजो और उसमें सुधार कैसे हो उसका प्रयास भी मत करो। मेरे देखने में कई लोग हैं जो अपनी मीटिंग में जाते हैं तो जागते हैं, पैसे गिनते हैं तो जागते हैं, एक दूसरे की निंदा करते हैं तो विशेष जागते रहते हैं! तो ये कोई शिकायत की बात नहीं। सुधार की भी कोशिश मत करें। सोये हैं, सोये हैं। मेरे तुलसीदासजी ने एक ग्रंन्थ लिखा है 'दोहावली रामायण', जिसमें तुलसीजी ने बहुत से दोहे लिखे हैं। कुछ सोरठे लिखे हैं। कुछ तो 'रामचरितमानस' से सीधे उठाकर के 'दोहावली' में रख दिए हैं। उसमें एक दोहा आपने ये बात कही तो मुझे स्मरण में आ रहा है।

खल प्रबोध जग सोध मन को निरोध कुल सोध।
करहिं ते फोटक पचि मरहिं सपनेहुँ मुख न सुबोध।

ठीक से सुनियेगा और तुलसी का अनुभूत दर्शन हृदयस्थ करें। चार वस्तु में सुधारने की कोशिश मत करना, स्वीकारने की कोशिश करना। मैं तो हर वस्तु स्वीकारने का आदमी हूं, सुधारने का आदमी हूं ही नहीं। खल प्रबोध; जो खल है, मूढ़ है, उसको प्रबोध करना, कोई परिणाम नहीं आयेगा। 'मानस' के 'बालकांड' में भी लिखा है, 'खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू।।' जिसमें खलता है, दुष्टता है, मूढ़ता है उसको बोध करना फ़ोगट परिश्रम है। उसको सुधारने की कोशिश न करें। उसको स्वीकारने की कोशिश करें। खल को बोध क्या दे? और खल की परिभाषा करूं तो चार

वस्तु कहनी है मुझे आपको। एक, द्वेष के कारण हर एक वस्तु को, हर एक बात को जो ऊल्टा अर्थ करे वो खल है। दूसरा, जो निरंतर शिकायत ही करता है वो खल है। तीसरी बात, जो व्यक्ति अत्यंत क्रोध करता है और बदले की आग में जल रहा है वो खल है। चौथा, जो खुद के सुख का भी बलिदान करता है और दूसरे के सुख को भी नष्ट कर देता है वो खल है। और ये शास्त्रों में से नहीं मिलेगा। ये हमारे परिवार में, हमारे समाज में, हमारी सोसायटी में, हमारी कंपनी में, हमारे अगल-बगल में ये घटनाएं घटती है। शास्त्र तो केवल एक संकेत करता है।

दो दिन पहले हम बैठे थे तो ये सरयू ने शायद पूछा मुझे कि बापू, इन्फ़र्मेशन और नोलेज में क्या अंतर है? अथवा तो हम गूगल पर से इन्फ़र्मेशन प्राप्त करते हैं। मैंने कहा, बेटा, इन्फ़र्मेशन मार्ग है, ज्ञान मंज़िल है। शास्त्र मार्ग है, इसके संकेत पर हमें ज्ञान तक पहुंचना है। और ध्यान देना मेरे श्रावक भाई-बहन, इन्फ़र्मेशन गंदी भी हो सकती है; ज्ञान सदैव पवित्र ही होता है। 'न हि ज्ञानेन सदृशं।' योगेश्वर कृष्ण का 'भगवद्गीता' में वाक्य है, अर्जुन, ज्ञान के समान इस विश्व में कुछ पवित्र नहीं है। इन्फ़र्मेशन अपवित्र हो सकती है। तुम्हारे कान में कोई गंदी वस्तु डाल दे। तुम्हारी सोच में कोई इधर की उधर, उधर की इधर कर दे, गलत हो सकता है। मैंने आपको एक दिन अंदाज़साहब का या हापुडीसाहब किसका शे'र है खबर नहीं, क्वोट किया था-

मेरी आंखों ने देखा है मेरे कानों ने सुना है।
मेरी फ़ितरत ये कहती है किसी का राज़ क्यों खोलूं?

मेरी इन्सानियत, मेरी खानदानी, मेरी कुलीनता, मेरी शराफ़त मुझे मना करती है कि किसी का राज़ क्यों खोलूं? इन्फ़र्मेशन गंदी हो सकती है। इन्फ़र्मेशन शब्दों में, वाक्यों में होती है। ज्ञान मुद्रा में होता है। ज्ञान के लिए शब्दों की जरूरत नहीं होती। ज्ञान शब्द पार है। तो मेरे भाई-बहन, शास्त्र पढ़ने चाहिए। मैं शास्त्र को तो लिए बैठा हूं। लेकिन मंज़िल कुछ ओर है। शास्त्र तो गड़बड़ भी कर सकते हैं। और ग्रंथ यदि सद्ग्रंथ नहीं है तो कई ग्रंथों ने दुनिया में कई ग्रंथियां पैदा की है। कई प्रकार की गांठे मजबूत बना दी है ग्रंथों के कारण, ग्रंथों गलत अर्थ के कारण। तो मेरे भाई-बहन, ये जो खलता है कुछ, वो बीमार है, नादुरस्त है, अस्वस्थ है, उसको प्यार करो। सुधारने की कोशिश मत करो। असफल हो जाओगे आप फिर डिप्रेस हो जाओगे।

खल प्रबोध फोगट परिश्रम है। दूसरा, 'जग सोध', जगत को सुधारने की चेष्टा मत करना, तुलसी कहते हैं। जगत को सुधारो नहीं, जगत को स्वीकारो। ये मिथ्या है, सपना है, छोड़ो यार! सपना-मिथ्या समझ में आये तब बात ओर है बाकी ये जगत एन्जोय करने जैसा है। जो जाग गए हैं उसकी बात ओर है। जगत को स्वीकार करो। ये झरने, ये नदियां, ये पर्वत, ये सागर, ये पक्षियों की आवाज़ और अस्तित्व की करुणा। सूरज बारह घंटे दिखता है, चौबीस घंटे नहीं दिखता। वसंत ऋतु साल में दो-तीन महीने रहती है। बारह महीने नहीं रहती। वर्षाऋतु दो-तीन महीने रहती है, नौ महीने गायब। लेकिन याद रखो, जिसने इस जगत को बनाया है उस परमात्मा की करुणा चौबीस घंटे रहती है। और उसकी करुणा महसूस करके हम अपने जीवन की करुणता का अंत कर सकते हैं। स्वामी रामतीर्थ कहते थे, परमात्मा को प्रार्थना करो तो इतनी करो कि चौबीस घंटो बरसनेवाली तेरी कृपा तू मुझे दे दे तो तुझे कम नहीं होगा और मुझे दूसरी जगह मांगना नहीं पड़ेगा। चौबीस घंटों अस्तित्व बरस रहा है, उसको स्वीकार कर लो।

तीसरी बड़ी प्यारी बात है, मन निरोध; जो मन को निरोध करने में लगे हैं उसको बड़ी चोट है। तुलसी कहते हैं, मन का निरोध करने की कोशिश कर रहे हैं वो फोगट परिश्रम कर रहे हैं। मन के साथ बातचीत करो। मन के साथ संवाद करो। उसको दोस्त बनाओ। वो विभु की विभूति है। मैंने कई बार ये बातें कहीं कि मैं मन के निरोध के पक्ष में नहीं हूं, क्योंकि मैं कर नहीं पाता। व्याख्या करूं तो अच्छी कर सकता हूं। मन के निरोध पर तुम्हारी दुआ से एक कथा कर सकता हूं नौ दिन। लेकिन फोगट! मन से गुफ़्तगू हो सकती है। कौन-सी गुफ़्तगू? 'श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन।' तुलसी अपने मन से राम के सौन्दर्य की चर्चा करते हैं। मैं तो पूरा तुलसी को आधार मानकर बोल रहा हूं और कुछ मेरी अनुभव की बातें भी कर रहा हूं। तुलसी क्या कहते हैं?

भाषाबद्ध करबि मैं सोई।
मोरें मन प्रबोध जेहिं होई।।

मैं परमात्मा के गुणों को संकलित करके इस शास्त्र को भाषाबद्ध करूंगा। क्यों? मेरे मन को बोध हो। निरोध नहीं, बोध, गुफ़्तगू, संवाद। जैसे सुर ने किया, तुलसी ने किया, रसखान ने किया, इवन मीरां ने किया। अंत:करण परमात्मा

ने दिया है। परमात्मा की दी हुई ये सौगात है। उसके साथ तकरार मत करो, स्वीकार करो। मन निरोध तुलसी की दृष्टि में और मैं इसको पक्का मानता हूं इसलिए मैं मेरे व्यक्तिगत विचार में मन निरोध का फोगट परिश्रम है। और अब बहुत निकट पडे ऐसी बात, नहीं कुल सोध; अपने कुल को सुधारने की चेष्टा फोगट है। भगवान कृष्ण विफल हुए हैं; यदुकुल को सुधार नहीं पाये हैं। महात्मा विदुर कुरुकुल को सुधार नहीं पाया। न कृष्ण सुधार पाया, न विदुर सुधार पाया। एक विभीषण साधुचरित आदमी न रावण कुल को सुधार पाया। मीरां अपने कुल को सुधार नहीं पाई। चलो द्वारिका। रमेश पारेख याद आता है-

हवे तारो मेवाड मीरां छोडशे.
मीरां विनानुं सुख घेरी वळशे ने राज,
रूंवेरूंवेथी तने तोडशे.
गढने होंकारो तो कांगराय देशे,
पण गढमां होंकारो कोण देशे?

कुल को सुधार नहीं पाई मीरां, हट गई। द्वारिका का मार्ग निकला। नरसिंह मेहता कुल को सुधार पाया? जिसस क्राइस्ट उनके कुल को, उनके समाज को सुधार पाया? पैगम्बर, आई सोनल, भगतबापू काग सफल हुए? मुश्किल है कुलशोध। अब कुल को सुधारा नहीं जाता तो क्या इन्कार कर दें? नहीं, कुल को स्वीकार कर लो। कोई-कोई कुल अपवाद भी होता है। कोई-कोई कुल ऐसा होता है जहां कुछ फायदा भी होता है, बाकी कुल शोध मुश्किल है। स्वीकार करो। बहनजी, सास सो जाए, सुधारने की कोशिश न करो। तुम्हारी सास ने मुझे 'दोहावली' की यात्रा करवा दी! सत्संग में सोया है ना! संसार में तो नहीं सोया। कभी न कभी जागेगा। और कम से कम ये सास की जागृति होती तभी तो आपको आने दिया होगा। इतनी तो जागृति है। छोड़ो।

बहुत से प्रश्न है, 'बापू, गुरु और आश्रित के बीच मैत्री-संवाद होना चाहिए कि आध्यात्मिक?' ये मैत्री आध्यात्मिक विशेषण छोड़ दो। संवाद होना चाहिए। ये छोड़ो न विशेषण। और संवाद भी तो आपने पूछा इसलिए शब्द का प्रयोग करूं। गुरु के पास बैठे रहो। क्या बोलना, क्या सुनना, क्या करना? केवल बैठो और महसूस करो। रूह से महसूस करो। कोई बुद्धपुरुष के पास बैठे रहो। तो गुरु के साथ मैत्री का संवाद हो या आध्यात्मिक संवाद हो; कोई नाम न दो इस रिश्ते को। ये संबंधमुक्त संबंध है। 'तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावे।' और बुद्धपुरुष से तुम नाता निर्णीत भी मत करो, उसको करने दो। तुम पेश हो जाओ और कह दो, निर्णय तू कर दाता कि तुझे बाप बनना है, बेटा बनना है, भाई बनना है, बहन बनना है, गुरु बनना है, शिष्य होना है? छोड़ो उनपे। हम कोई भी निर्णय करेंगे तो भूल हो सकती है। और वो भूल भी करेगा तो भी हमारा कल्याण हो सकता है। सावधान।

एक बहुत महत्त्व का बड़ा प्यारा प्रश्न, जो मुझे मिला है, 'बापू, कथा का रूप क्या होता है?' 'अनेकरूपरूपाय', भगवान विष्णु का एक नाम है, 'अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे।' कथा का कभी एक रूप नहीं होता। कथा का रूप बदलता है, बदलना चाहिए। अच्छा है ये आपने पूछा है। मुझे स्मृति आ रही है। मेरे सद्गुरु भगवान कथाकार भी है और अच्छे श्रोता भी। हनुमानजी बिलकुल छोटे से छोटे भी हैं और जब जरूरत पड़ती है तो भीमरूप है। सूक्ष्मरूप भी है, भीमरूप भी है। हनुमानजी जब भी कथा कहते हैं, बहुत अच्छे वक्ता हैं हनुमानजी। कथाकारों के आचार्य है शंकर और शंकर ही हनुमान है। हमारे परम आचार्य तो शिव हैं। कथाकारों के मूल पुरुष तो शिव हैं और कई चुस्त वैष्णव कथाकार शिव का नाम ही नहीं लेते! आचार्य का ही अतिक्रमण कर जाते हैं!

तीन वस्तु याद रखना जब आप कथा के बारे में पूछ रहे हैं तो। कथा किसको सुनानी चाहिए? वक्ता को कैसे किसको सुनानी चाहिए। ये पहली बात। अब ये लोग इतने कथा सुनते हैं। देश में तो कथाएं होती है तो ओर ज्यादा भीड़ होती है। तो कैसै नक्की करें कि किसको कथा सुनानी चाहिए। सार्वभौम चलना पड़ता है लेकिन सूत्र तो है, कथा किसको सुननी चाहिए। 'मानस' के 'उत्तरकांड' में इसके कुछ सूत्र हैं। कथा के समापन में भगवान महादेव पार्वती को कहते हैं, हे पार्वती, ये कथा जो शीलवान नहीं है, जो दुराग्रही है, हठाग्रही हैं, दुष्ट तर्की हैं उसको ऐसी कथा नहीं सुननी चाहिए जो ध्यान से हरिलीला नहीं सुनते। 'दोहावली' का एक दोहा ओर याद आ रहा है।

रामहि सुमिरत रन भिरत देत परत गुर पायँ।
तुलसी जिन्हहि न पुलक तनु ते जग जीवत जायँ।।

चार वस्तु में जिसको रोमांच न हो उसकी ज़िंदगी बेकार गई। चार वस्तु में आदमी पुलकित होना चाहिए। एक, 'रामहि सुमिरत', अपने इष्टदेव का सुमिरन करने से जिसके शरीर में एक पुलकित भाव ना आये तो गया! हे हरि! हे गोविंद! हे राम! अपने इष्ट को याद करते हुए एक क्षण भर भी जो रोमांच हो जाए, पुलकितता आ जाये। 'रन भिरत', धर्म के मार्ग पर चलते-चलते, सत्य के, प्रेम के, करुणा के मार्ग पर चलते-चलते जब आदमी को संघर्ष करना पड़ता है और कभी-कभी धर्मसंकट अथवा तो प्राणसंकट तक की नौबत आ जाती है लेकिन ऐसे समय मैं सत्य के मार्ग पर हूं, मैं प्रेम के मार्ग पर हूं, मैं करुणा के मार्ग पर हूं, जो भी मैं सही मार्ग पर हूं, इस सोच के साथ शरीर पुलकित होना चाहिए। देत; दूसरों को कुछ देने की बात आये तो रोमरोम प्रसन्न हो जाय। न हो तो देना बेकार। और देने में जो आनंद है ये कुछ अनोखा आनंद है; दो, दो, दो। और देना सीख जाओ तो मेरा अनुभव कहता है, कभी खुटे नहीं।

प्लीज़, माफ़ करियेगा, आप मेरे हैं इसलिए मैं कह रहा हूं कि शायद मेरा अनुभव आपके काम में आ जाये। चित्रकूट में हम बैठे हो और मुझे पता नहीं होता, मैं सबको कहता हूं, ये बहन आये उसको साडी दो। ये बच्चे को टीशर्ट दो। उसको कंबल दो। देते ही रहते हैं! अभी तक मुझे ऐसा जवाब नहीं मिला कि आप जो कह रहे हो वो खत्म हो गया है। तुम देने पर डटे रहो, कभी खत्म नहीं होगा। अक्षयपात्र

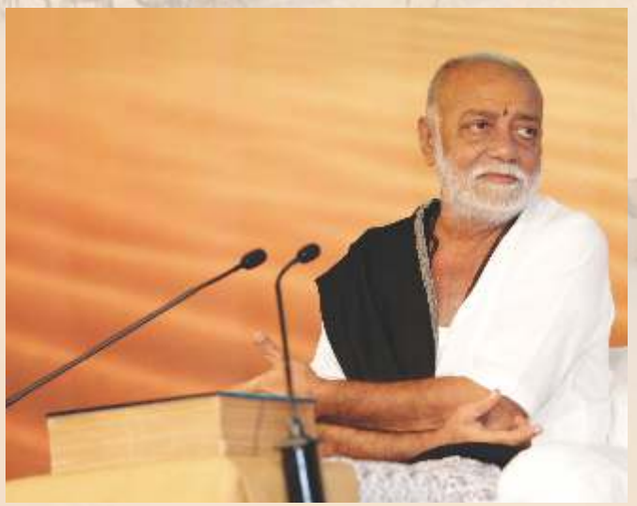

उसको कहते हैं। अक्षयपात्र कोई पात्र नहीं है। मैंने बचपन से ये सब देखा है। हमारी माँ सावित्री माँ, हमारे घर में उस समय में सुदर्शन चूर्ण रोज माँ पिलाती सुबह में हमको। ये सुदर्शन का डिब्बा खाली हो जाए ऐसे दो-तीन डिब्बे बस। इसमें एक में राई होती थी। एक में मैथी होती थी। एक में धाना। एक में जीरा। एक में हींग। मेहमान तो आते रहते थे। कोई न आये तो कोई साधु मंदिर पर आता था उसके लिए सब्जी बनाना। इतने छोटे डिब्बे में से जादू करता था! मुझे कभी कहा नहीं कि धाना-जीरा नहीं है, खत्म हो गया। मैं सोचता हूं, यही तो अक्षयपात्र था। आज हैरान हूं कि कैसे? लेकिन दो। देना शुरू करो। वेंटिलेशन होना चाहिए। यहां से आये और यहां से जाए। सब बंद कर दो तो यहां से आना ही बंद हो जाएगा। देने का बहुत आनंद है।

तो कथा किसको सुनानी चाहिए, इसके कुछ सूत्र शिव ने बताये। जो मन लगाकर हरिकथा न सुने उसको कथा नहीं सुनानी चाहिए। भले कितना बड़ा सम्राट क्यों न हो। क्राइसिस क्या है? पात्र है तो देने की वस्तु नहीं और वस्तु है तो सामने पात्र नहीं! क्राइसिस ये है। कई बुद्धपुरुष लबालब भरे हैं लेकिन पात्र नहीं मिलते! और कहीं पात्र ही पात्र है तो तथाकथित लोगों के पास मूड़ी नहीं है! बाप! कथा किससे सुननी चाहिए? कुछ संकेत; जो वक्ता पोथीपरायण हो उससे सुननी चाहिए। अपने शास्त्र को न्याय दे उससे सुननी चाहिए। जो वक्ता परमार्थ परायण हो, स्वार्थी न हो, उससे सुननी चाहिए। जो वक्ता प्रेम परायण हो उससे सुननी चाहिए। जो वक्ता परमात्मा परायण हो, भजनानंदी हो उससे सुननी चाहिए। कथा किसको सुनानी चाहिए? कथा किससे सुननी चाहिए? और देश-काल के अनुसार कथा कैसी होनी चाहिए? ये भी आवश्यक है। दादाजी बताते थे, हनुमानजी ऐसे हैं कि उसके समान कोई श्रोता नहीं। हनुमानजी बहुत बड़े कथाकार हैं। राम और सुग्रीव का जब मिलन होता है तब हनुमानजी कथा कहते हैं। एक कथा हनुमानजी ने की तो सुग्रीव को निर्भय कर दिया; राम के साथ जोड़ दिया।

एक कथा ऐसी होती है कि आदमी को भय से मुक्त कर दे। लेकिन जब हनुमानजी को लगा कि अब ये ज्यादा निर्भय हो गया इसलिए अब उसको भय हो ऐसी कथा सुनानी चाहिए। सुग्रीव राम का कार्य चुक गया और

हनुमानजी फिर सुग्रीव के पास जाकर ऐसी कथा सुनाते हैं। साम-दाम-दंड-भेद की कथा सुनाकर भेद पैदा किया क्योंकि इतना निर्भय होना ठीक नहीं जो हमें भगवता से दूर कर दे। वो ही हनुमानजी 'सुन्दरकांड' में माँ जानकी के पास जाते हैं सीता अन्वेषण के लिए तो वहां जानकी को हनुमानजी कथा सुनाते हैं तो दु:ख मिटा देते हैं। वो ही हनुमानजी जानकी की खबर लेकर चूड़ामणि लेकर भगवान राम के पास आये और भगवान के पास जानकी के दु:ख की बात की महाराज, आपके विरह में एक-एक पल युग के समान मेरी माँ का बीतता है। यहां जानकी को कथा सुनाते आंसू पोंछ लिए और राम को ऐसी कथा सुनाई कि राम रो पड़े! यहां सीता को दु:खमुक्त किया, यहां राम को पीड़ित कर दिया कि जानकी तुम्हारे विरह में इतनी दु:खी है। हनुमानजी कभी भयमुक्त करते हैं। हनुमान की वो ही कथा कभी भय का सृजन करती है। दु:ख निवारण करती है। कभी वो ही कथा दु:ख पैदा भी करती है। जो जरूरी है।

थोड़ा आगे बढ़ें 'मानस-किष्किन्धाकांड' में। भगवान ने ऋतुवर्णन किया लक्ष्मण के साथ संवाद में। लक्ष्मण, वर्षा ऋतु खत्म हुई; निर्मल ऋतु आई और शरद ऋतु भी पूरी हुई। और स्मृति आई जानकी की प्रभु को कि हे लक्ष्मण, ये शरद ऋतु भी बीती। अभी तक सीता की कोई खबर नहीं। कोई जगह पर जानकी यदि जीवित है तो उसको यत्न करके हमको पाना है। और प्रभु की पीड़ा देखिये-

सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी।
पावा राज कोस पुर नारी।।

प्रभु कहते हैं, लक्ष्मण, सीता की कोई खबर नहीं मिल रही है। और सुग्रीव मुझे दिया हुआ वचन भूल गया है! क्योंकि उसको खजाना मिल गया और उसको नारी मिल गई। ध्यान देना मेरे श्रावक भाई-बहन, ईश्वर को दिया हुआ वचन जीवरूपी सुग्रीव तब चुक जाता है जब उसके जीवन में तीन वस्तु आ जाती है। एक तो राज मिल जाता है। राज माने सत्ता, प्रतिष्ठा, कीर्ति, पद। मैंने मेरी इस कथायात्रा में देखा, जिन लोगों को पद नहीं मिला था वो सब लोग साधु-संतों के अंगूठे पर हाथ रखकर पैर छूते थे। वो ही पद मिले, नमस्कार! पद भुला देता है! इसमें किसी की आलोचना नहीं है। ये जीव प्रकृति है। स्वार्थ होते हैं तो सब खबर नहीं, क्या-क्या करते हैं! राम का निर्णय, राम का निरीक्षण, राम का जो दर्शन है ये साफ़ है। ये दोष नहीं निकाल रहे लेकिन कहते हैं, जीव है, उसको कोश-भंडार मिल गया और नारी, भोग मिल गए। लेकिन लक्ष्मण, सुग्रीव भूल गया! जिस बाण से मैंने बालि को मारा है उसी बाण से मूढ़ सुग्रीव को कल मार दूंगा। लक्ष्मणजी ने तो तुरंत कहा कि कल पर निर्णय क्यों छोड़ रहे हो? कल क्यों? अभी करो। मैं भी कहता हूं कि ज्यादा सोचो मत, कुछ करो। विवेक से करो। सबके परम हित में करो। राष्ट्र नाराज हो जाये और आर्मी के लोग थोड़े हतोत्साह हो जाए इससे पूर्व कुछ करो। एक नागरिक के रूप में मेरा अधिकार है ये बोलने का। मैंने श्रद्धांजलि के समय भी कहा। हां, विवेक से कदम उठाये। सभी के परमहित में उठाया जाए। लक्ष्मणजी ने कहा, महाराज, अब मारना ही है तो कल पर क्यों छोड़े? लेकिन प्रभु की करुणा देखिए। भगवान किसी को डांटते हैं ना तो भी करुणा से डांटते हैं। हम किसी को डांटते हैं तो क्रोध से डांटते हैं। यही जीव-शिव का एक आध्यात्मिक अंतर है।

मेरे युवान भाई-बहन, कभी हम भूल करें और परमात्मा दंड देने की बात करे तो भी याद रखना, एक खिड़की भगवान खुली रखते हैं। ये खिड़की समझ ली जाए तो भरोसा टूटेगा नहीं। भगवान ने ये जो कहा, मैं कल मारूंगा। इसका एक दरवाजा खोल दिया कि कल हो इससे पहले सुग्रीव जो मेरे पास आ जाये तो मुझे मारना नहीं है। तो सुग्रीव शाम तक तो आ गया शरण में इसलिए कलवाला तो प्रश्न ही नहीं उठता। लक्ष्मणजी सुग्रीव और सबको लेकर प्रभु के पास प्रवर्षण के पास आये। सुग्रीव इतना चतुर है और निर्भय है कि भगवान के पास आते ही कहा कि महाराज, माफ़ करना, मैं आपका काम भूल गया इसमें मेरा कोई कसूर नहीं। आपकी माया अत्यंत प्रबल है। दुनिया में कौन मोहित नहीं होता? और फिर हमें बहुत प्रेरणा देनेवाली कुछ चौपाईयां सुग्रीव के मुख से बुलवाते हैं-

नारि नयन सर जाहि न लागा।
चोर क्रोध तम निसि जो जागा।।
लोभ पांस जेहिं गर न बंधाया।
सो नर तुम्ह समान रघुराया।।

सुग्रीव भगवान से कहता है कि प्रभु, तीन जो वस्तु है- काम, क्रोध और लोभ। महाराज, नारी के नेत्रबाण किसको नहीं लगते? मैं तो बंदर हूं, अत्यंत कामी हूं। इस सृष्टि में बड़े-बड़े मुनियों के मन को भी सुन्दर नारी के नेत्र बाण व्यथित कर देते हैं! और क्रोधरूपी रात्रि में कौन नहीं सोता? बेहोश कौन नहीं होता? क्रोध आता है तब कौन विवेक रख सकता है और लोभ का फंदा किसके गले में नहीं जाता? और महाराज, नारी के नेत्र बाण से जो विचलित नहीं होता, क्रोध की रात्रि में जो अपने होश को संभाले रहता है और लोभ के फंदे को अपने गले में नहीं आने देता ये तो दूसरा राम है, ये तो दूसरा परमात्मा है। ये तीन से मुक्त ये राम है। मैं तो जीव हूं। भगवान ने कहा कि इतना जानकार होने के बाद तू क्यों सावधान नहीं होता? सुग्रीव अपना खुद का बचाव, हम जीवों की ओर से बोल रहा है-

यह गुन साधन ते नहिं होई।
तुम्हरी कृपा पाव कोई कोई।।

महाराज, ये गुण साधन से नहीं होते। ये तो आपकी कृपा हो तो कोई प्राप्त करता है। बिलकुल कुछ बातें ऐसी हैं, वहां साधना और साधन से सफलता नहीं मिलती; केवल कृपा आदमी को बचाती है। बड़े-बड़े महापुरुष फंसे। बड़े-बड़े शांत मुनि क्रोधी हो गए, शाप देने लगे। और बड़े-बड़े त्यागियों ने बड़े-बड़े महल खड़े कर दिए! ये तीन जो दोष मानो, शूल कहो, वैरी कहो। यद्यपि इन सूत्रों से मैं राजी नहीं हूं। मेरी कुछ अपनी नीति हैं। इससे सावधान रहना चाहिए। ये वात, पित्त, कफ है। शरीर में तीनों की जरूरत है सम्यक् रूप में। बाकी तीनों रहने चाहिए। जीवन में काम रहना चाहिए सम्यक् रूप में, ध्यान देना। भगवान कृष्ण 'गीता' में कहते हैं, धर्म से अविरुद्ध काम मैं हूं। वहां काम की स्थापना की। किसी में क्रोध न हो तो अच्छा है, लेकिन अगर थोड़ा क्रोध है तो चलेगा। और लोभ भी जरूरी है। संसारी लोगों को एफ.डी. करना जरूरी है भविष्य की पीढ़ियों के लिए। बड़े-बड़े महात्मा भी बहुत बड़ी-बड़ी एफ.डी. रखते हैं तो हमारा क्या कसूर है? ये मेरे बोल नहीं है। मैं तो व्याख्या कर रहा हूं। 'मानस' में लिखा है-

तपसी धनवंत दरिद्र गृही।
कलि कौतुक तात न जात कही।।

कलियुग में बड़े-बड़े तपस्वी धनवंत होंगे, ऐसा तुलसी ने लिखा। और गृहस्थ जो होगा जिसको जरूरत है ये बेचारे गरीब होंगे! कलिप्रभाव है। लेकिन मेरा कहना ये है कि संसारियों को थोड़ा इकठ्ठा करना चाहिए। कोई बुरी बात नहीं है। थोड़ा इकठ्ठा किया तो दसवां भाग निकालो। मेरे पूरे विश्व के पास ये मेरी बात हर वक्त मैं कहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का दसवां हिस्सा निकालना चाहिए। जब राष्ट्र को जरूरत हो, जब पीड़ितों को जरूरत हो अपनी आय का दसवां भाग निकालकर के जो लोग शहीद हुए हैं उनके परिवारों के बच्चों की पढ़ाई के लिए निकालो। और अस्तित्व का नियम है आप और हम दसवां हिस्सा न निकाले न तो कुदरत तो ले ही लेता है! कुछ न कुछ व्याधि बनकर ले जाए, रोग आ जाये! तुम्हारा दसवां हिस्सा तो निकालना पड़ेगा तुमको। और मुझे खुशी है कि मेरी व्यासपीठ के श्रोता जल्दी या देर से ऐसा निर्णय करने लगे हैं कि बापू, हमारी आय से हम दसवां हिस्सा निकालते हैं। मेरे पास चित्रकूट में बहुत लोग आते हैं पूरे साल की कमाई इतनी है दसवां हिस्सा देने। मैं इतना ही कहता हूं, तुम्हारे अगल-बगल में कोई स्कूल के कमरे की जरूरत हो, कोई स्कूल में कम्प्यूटर की जरूरत हो, कोई मरीज़ को दवा की जरूरत हो, किसी विधवा माँ को एक साल के राशन की जरूरत हो। मैंने छू दिया अब तेरे हाथ तू बांट दे।

बहुत बड़ा काम हो सकता है साहब! हमारी दशा ही ये है कि हम जानते हैं सब कुछ करने को तैयार

इन्फ़र्मेशन मार्ग है, ज्ञान मंज़िल है। शास्त्र मार्ग है, इसके संकेत पर हमें ज्ञान तक पहुंचना है। इन्फ़र्मेशन गंदी भी हो सकती है; ज्ञान सदैव पवित्र ही होता है। 'न हि ज्ञानेन सदृशं।' योगेश्वर कृष्ण का 'भगवद्गीता' में वाक्य है, अर्जुन, ज्ञान के समान इस विश्व में कुछ पवित्र नहीं है। इन्फ़र्मेशन अपवित्र हो सकती है। तुम्हारे कान में कोई गंदी वस्तु डाल दे। तुम्हारी सोच में कोई इधर की उधर, उधर की इधर कर दे, गलत हो सकता है। इन्फ़र्मेशन गंदी हो सकती है। इन्फ़र्मेशन शब्दों में, वाक्यों में होती है। ज्ञान मुद्रा में होता है। ज्ञान के लिए शब्दों की जरूरत नहीं होती। ज्ञान शब्द पार है।

नहीं! मेरे दसवें हिस्से की बात सबको अच्छी लगती है लेकिन जब करने की बात आती है तो छटक जाते हैं! लेकिन बहुत लोग करने लगे हैं ये अच्छा है। विदेश से भी कई बच्चें जो कथा के प्रेमी हैं, मेरे पास आते हैं तो कहते हैं बापू, हमारी पोकेट मनी जो हमने इकठ्ठी की है वो हम आपको देते हैं। ये हमारा दशांश है, दसवां भाग है। मैं इन बालकों को नमन करता हूं, मन ही मन कि ये बड़ा प्यारा निर्णय है। माफ़ करना, मुझे बीच में दूसरी बात करनी है। शायद तुम्हें दसवें हिस्सेवाला कुछ ज्यादा बैठ नहीं रहा तो जिसके लिए हो न उसके दे दो! हफ्ता भरकर सप्ताह भी नहीं करवाना चाहिए। हफ्ता भरो और सप्ताह करो, कोई जरूरत नहीं। मेरे पास जब कथा लेने आते थे मैं पूरा पूछता था कि तुम्हारी अर्थव्यवस्था बराबर है? तुम्हारे बच्चे को पढ़ाना? मेरे कोई भी कथा लेनेवाले के साथ ये संवाद होता है कि तुम खींच के तान करके लूटा मत देना। ऐसा धर्म कर्म करने की जरूरत नहीं है। तुम्हारे बच्चों का विचार करो। तुम्हारी बेटियों का विचार करो। तुमने जिस-जिस से पैसे लिए हैं उसको नहलाकर कथा मत करो! ऐसी कथाओं की जरूरत नहीं है यार!

थोड़ा कथा का क्रम। कल रामजन्म हमने जल्दी-जल्दी गा लिया। कैकेयी ने पुत्र को जन्म दिया। सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। समय जाने के बाद चारों भाईयों का नामकरण संस्कार भगवान वशिष्ठजी ने अंत:करण की प्रवृत्ति के अनुरूप किया। आराम दे वो राम। सबको भर दे, तृप्त कर दे वो भरत। जिसके सुमिरन से किसी के प्रति शत्रुता नहीं रहती वो शत्रुघ्न। और सभी सद्गुणों का भंडार और सकल जगत का जो आधार है वो लक्ष्मण है। भगवान की सुन्दर बाललीला, कुमारलीला 'मानस' में चलती है। वशिष्ठजी के आश्रम-गुरुगृह भगवान विद्या प्राप्त करने के लिए जाते हैं। अल्पकाल में विद्या प्राप्त कर लेते हैं। जो विद्या गुरु के पास से प्राप्त हुई है अपने जीवन में चरितार्थ करते हैं।

तुलसी कहते हैं, अब आगे की कथा सुनते हैं। अयोध्या से जनकपुर के मार्ग में बीच में सिद्धाश्रम, आज का बक्सर गंगा के तट पर विश्वामित्र की साधना स्थली, वहां जप, यज्ञ, जोग, तप, साधना विश्वामित्रजी करते हैं। लेकिन मारीच और सुबाहु उसके यज्ञभंजक है, बाधक है। भगवान विश्वामित्र पदयात्रा करते अयोध्या आये। महाराज दशरथजी ने अपने आसन पर विराजमान किये। पूजा की। सम्मान किया। महाराज को भोजन करवाया और उनके बाद राम-लक्ष्मण आये और विश्वामित्रजी के चरण में प्रणाम किये। राम को देखकर विश्वामित्रजी स्तंभित हो गए! मैंने संतो से सुना कि विश्वामित्रजी भोजन करके बैठे और उसके बाद राम का दर्शन हुआ और महाराज मनु और शतरूपा वर्षो तक भूखे रहे, हाडपिंजर बन गए, उसके बाद जाके भगवान का दर्शन हुआ और राम का रूप तो दूसरे जन्म में मिला। इसका मतलब सब भ्रांतियां तोड़ती है 'रामायण' कि कोई ये ना माने कि उपवास करने से ही हरि मिलते है। यहां स्पष्ट लिखा है कि विश्वामित्रजी ने अयोध्या का राजभोग प्रसाद पाया उसके बाद राम मिले हैं। इसलिए ये छोटी भ्रांतियों को छोड़ दे कि उपवास करेंगे तो ही हरि मिलेंगे। इसका मतलब ये नहीं कि उपवास ठीक नहीं है। लेकिन केवल भूखे रहने से परमात्मा मिले ये सूत्र ठीक नहीं है।

आदमी को ठीक से भोजन करना चाहिए। भोजन करने योग्य सम्यक् मात्रा में आहार लेना चाहिए ये नियम है। सुबह नास्ता करो, फिर कथा में आओ। फिर दोपहर को जो भोजन। कल मैंने देखा, भोजन की बहुत अच्छी व्यवस्था है। सब सेवन स्टार व्यवस्था है साहब! और रामकथा के सोपान सात है। सात कांड की कथा में तो सेवन स्टार ही होना चाहिए। सब सेवन स्टार है साहब! सब प्रेम से भोजन करते हैं। हमारी देहातों की, स्थानों की कथाओं में हजारों लोग लाखों लोग भोजन करते हैं। और कहीं अकस्मात नहीं होता। किसी के पेट खराब नहीं होते। फिर ऊपर से निश्चित होता है कि कोई चेतना ही ये सब कर देती है। 'रामायण' में कथा है कि भरद्वाजऋषि तो त्यागी विरक्त हैं। लेकिन भरतजी पूरी अयोध्या लेकर आये तो एक क्षण के लिए भरद्वाजजी को हुआ कि जैसा देवता हो ऐसी पूजा होनी चाहिए और हम तो विरक्त साधु! ऐसा मन में एक क्षण के लिए संकल्प आया भरद्वाजजी के मन में, इतने में रिद्धि-सिद्धि प्रकट हो गई कि महाराज, हुकम करो कि भरतजी की मेहमानी करो। ये तो कथा में आता है। हमने देखा नहीं, पढ़ा है, सुनाते हैं, लेकिन मेरी सत्तर साल की आयु में जबसे कथा कर रहा हूं, मैंने तो अपने हाथों से देखा है कि रिद्धि-सिद्धियां हाथ जोड़कर खड़ी रहती है!

जीवन की प्रस्थानत्रयी है सत्य, प्रेम, करुणा

'मानस-किष्किन्धाकांड', उसकी कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा करें इससे पूर्व कल सायंकाल वैसे कोई घोषणा नहीं की गई थी लेकिन ऐसे ही हम बैठे थे एक होल में; आप भी सब आ गए जो आप आये और वैसे ही एक गोष्ठी, एक सत्संग चला उसके लिए मैं पहले प्रसन्नता व्यक्त करना चाहता हूं कि हमारे परम स्नेही नीतिनभाई वडगामा ने अपने शीलवान शब्दों में कहा कि बापू धर्म की कविता गा रहे हैं। मैं आधा घंटा कविता के धर्म की बातें करूंगा। और आपने कविता के धर्म के बारे में अपना विचार प्रस्तुत किया; कविता की तीन विधा आपने बताई। कविता का धर्म क्या है? कविता का कर्तव्य क्या है? एक वस्तु हमारे स्मरण में रहे बाप कि हमारी परंपरा में कवि ईश्वर का नाम है। और उर्दू में, अरबी में अथवा तो इस्लाम परंपरा में खुदा-ए-सुखन कहते हैं उसको; काव्यजगत का ईश्वर है कवि। तो एक सर्जक अपने कविता का धर्म, कविता का कर्तव्य कह रहे थे। तीन विधा बताइ आपने कि एक तो कविता का धर्म है स्वबोध अथवा तो जिस काल और समाज के साथ कविता जुड़ जाती है उसका समाजबोध, समयबोध, स्वबोध। दूसरी बात आपने कही तत्त्वबोध। और तीसरा सौन्दर्यबोध। बड़ी प्यारी बातें सुनने को मिली। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। खुश रहो। फिर हमारे कविराज पधारे व्हीलचेयर में! हमने रिक्वेस्ट की कविराज, अब 'आ ही गए तो थोड़ी पी लीजिए। बिन पीये लौट जाना बुरी बात है।' अब आ ही गए तो थोड़ा कुछ जो आपको मौज आये कुछ बताये। तो जो-जो मोती हाथ में आये वो अपनी जो विचारधारा है, उसमें ये सूत्र में पिरोते गए। जो मोती हाथ में आया, ये आया, ये आया, ये आया; इधर से आया, इधर से आया; और अपनी विचारधारा के सूत्रों में आपने पिरो दिए। जय माता दी। फिर आदरणीय और हमारे परम स्नेही वसंतभाई गढवी, हमने तो कई बार आपको सुना है। आपकी बातें यादगार हो जाती है। उसकी मुझे खुशी है। एक अभ्यास और अनुभव के ट्रेक पर चलता है प्रवचन। और कितना प्यारा 'रामायण' के मूल्यों के बारे में सुन्दर बातें आपने सुनाई। साधुवाद, मेरी प्रसन्नता। और उसके बाद बेटी ईशानी अच्छा गाती है, अभ्यास करती है, सीखती है, रियाज करती है, साधना करती है। उसने माँ पर एक कविता सुनाई और हमारे पिंगलशी बापू भावनगर, उसकी बड़ी प्रसिद्ध कविता, 'गुजारे जे शिरे तारे गजब हाथे गुजारीने', सुन्दर गाया बेटा। खुश रहो।

आइए, अब आगे बढ़ें। आज मेरे पास आपके बहुत प्रश्न आये हैं और इतने लंबे-लंबे प्रश्न हैं, दो-दो पन्ने में, डेढ़-डेढ़ पन्ने में! इस पन्ने को देखकर मुझे लगता है कि आपकी समस्या कितनी बड़ी होगी! और मैं आपसे हर वक्त निवेदन करता हूं कथा में कि जो आप श्रद्धा से आदर से व्यासपीठ के पास अपनी बातें रखते हैं, प्लीज़, इस बात को ध्यान में रखियेगा कि आप जो पूछते हैं उसके सब उत्तर मुझे आते हैं ऐसा कभी मानना मत। मेरी भी अपनी मर्यादा है। हां, मुझे तुलसी जवाब दें, मेरे गुरु की कृपा मुझे दस्तक दे और मैं बोलने लगूं तो बात ओर है। बाकी मुझे सब जवाब आते हों ऐसी अपेक्षा भी आप मत करियेगा। बहुत बड़े-बड़े प्रश्न थे और कुछ तो घरेलू समस्याएं है! तो उसमें तो मैं क्या कर सकता हूं? एक समस्या तो ये भी पूछी, अच्छी समस्या है कि बापू, यहां हमारे मुल्क में महीने-देढ़ महिने से आस्था चैनल बंद है। ऐसा है कुछ? इसलिए खूब मौज कराइयेगा। बापू, बड़ी मुश्किल से मौका मिला है।

पूनमनी रात गोरी पूनम नी रात।
तालियों ना ताले गोरी गरबे घूमी जाय रे ...

कुछ बहुत विशिष्ट जिज्ञासाएं भी है जो जीवनपरक है। उसको मैंने रख लिया है। हां, एक बात मुझे कल भी पेश करनी थी, ये बात रह गई। प्रवाह में छूट जाती है। आज मैं ये कहना चाहता हूं कि भारत में हमारे फौजी जवानों पर अक्सर जो कुछ हो जाता है पडोश से और पूरा देश राष्ट्रीय सन्मान में बहुत एकदम भाव में है अखबारी रिपोर्ट के अनुसार और अपने आर्मी के

जो-जो शहीद होते हैं-हुए हैं उनके परिवारजनों के लिए और जो भी सेवा हो सके राष्ट्र की ओर से, उसके लिए देश बहुत आगे आ रहा है अपने-अपने तरीके से। कई लोगों ने अच्छी-अच्छी उद्घोषणा की है। मैं इसका स्वागत करता हूं और मेरी प्रसन्नता भी व्यक्त करता हूं। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री ने भी ऐसा कुछ कहा हो या तो बैंक अकाउन्ट सरकार ने दिया, जिसको सेवा समर्पित करनी हो। मैं चित्रकूट धाम तलगाजरडा के हनुमानजी की प्रसादी के रूप में एक लाख रूपया और ये सात लोग जो यहां बैठे हैं मेरे साथ और नीलेश आठवां, नरेश नौवां और आस्थावाले दसवां, सब अच्छी प्रसादी प्राप्त करते हैं; एक लाख रूपया ये दस लोग मिलकर दस-दस हजार देंगे। दो लाख हुए। और हमारा यजमान परिवार और रमाबहन का समग्र परिवार नव लाख देंगे, कुल ग्यारह लाख रूपये हम इस कथा की प्रसादी के रूप में हम वहां जो व्यवस्था होगी उसके बैंक अकाउंट में जितना हो सके हम शीघ्र पहुंचा देंगे। मैं दिल्हि में ही किसी को सेवा सौंप दूंगा कि ये चेक या ड्राफ्ट जो होता हो उसको वो ही सही अकाउन्ट में दे दे और ये सेवा दो-चार दिनों में पूरी हो जाए। तो इतना मुझे कल कहना था। बाकी सब कुछ न कुछ संकेत कर रहे हैं। मैं कोई जिम्मेवारी लेना नहीं चाहता। क्योंकि बेकर्सफिल्ड की कथा के समय आपने इतने पैसे दिए सेवा के लिए उसकी व्यवस्था करने में हमें दो साल लग गए थे! क्योंकि मैं व्यवस्था का आदमी नहीं हूं। फिर तो मैं खुद जाकर बांटकर आया जो हिमालय की उत्तराखंड की जो व्यवस्था हुई थी और एक-एक पैसा जरूरतमंदों तक हमने चेक से पहुंचा दिया। लेकिन व्यवस्था मुझे आती नहीं इसलिए इतनी बड़ी जिम्मेवारी मैं नहीं ले पाता। मैं ग्यारह लाख की जिम्मेवारी लेता हूं और ये हम जल्दी से जल्दी सही बैंक अकाउन्ट में भेज देंगे। किसी के दिल में ऐसा हो कि हमें भी हमारे राष्ट्र के लिए कुछ भेजना है तो आप अपने ढंग से भेजिए।

कुछ जो जिज्ञासाएं है, प्रसंग के अनुकूल जिज्ञासा है इसलिए मैं लेता हूं-

सरदातप निसि सिस अपहरई।
संत दरस जिमि पातक टरई।।

जो पंक्ति हमने आपके सामने रख दी कि शरद ऋतु का एक ताप होता है, एक विशेष प्रकार की गर्मी होती है उसी ताप को रात्रि के चंद्र की शीतलता हर लेती है शरद के चांद के द्वारा। इस ताप को हर लिया जाता है। कैसे? कि संत के दर्शन से जैसे पातक मिट जाते हैं। इसकी चर्चा संक्षेप में हो गई। फिर भगवान की कथा सुनकर के ये प्रतिभाव आया कि हे प्रभु, चन्द्रमाँ के किरण के समान आपकी बानी सुनकर मेरे मन में शरद का ताप मिट गया। संतदर्शन से ताप मिटा और संत की, भगवंत की वाणी से ताप मिटा। तो पूछा गया ये है कि बापू, माँ भवानी को भी शरदातप से गुजरना होता है? शरदातप का क्या अर्थ होता है? बापू, तुलसीदासजी ने शरदऋतु को परम सुहाई कहा है, निर्मल ऋतु कहा है, जीवन की इस उच्च अवस्था में ये कौन-सा ताप है जिसका निराकरण आवश्यक है।

मैंने आपको संकेत किया था कि हमारे उपनिषदों ने सौ शरद तक जीने का आशीर्वाद दिया है। लेकिन ये तो ऋषि-मुनियों की उदारता है। सौ साल तक कोई-कोई पहुंचता है। लेकिन जिजीविषा तो बनी रहती है कि हम सौ साल जीए। शताधिक साल जीयें और मैं भी कहता हूं कि आदमी को जीना चाहिए। लेकिन जिजीविषा एक ताप है। शरद का ताप है जिजीविषा। जीना चाहेंगे लेकिन जीना जब हमारे लिए और परिवार के लिए बोझ बन जाए तब एक खूबसूरत मोड़ पर उसे छोड़ना अच्छा। इतना खींचो मत, जो जीवन नरक बन जाए। मुझे समझने की कोशिश करना। मैं जीवनधर्मी आदमी हूं। भले ही शास्त्रों ने कहा, हम मरणधर्मी है। लेकिन हम जीवनधर्मी है। 'वयं अमृतस्य पुत्रा:।' जीना चाहिए। आपने सोचा है कभी कि जीने के बारे में हमारे देश में और दुनिया में बहुत-बहुत दृष्टिकोण प्राप्त हुए हैं। जीवन और ज़िन्दगी को देखने के सबके रवैये बिलग-बिलग हैं। तथागत बुद्ध ने कहा कि जीवन दु:ख ही है। ये उनका रवैया, जिसमें मैं सहमत नहीं हूं। ये तो बुद्ध हैं, हम तो बुद्धु ठहरे! लेकिन बुद्धु हम हैं। छुं शून्य; 'शून्य' पालनपुरीसाहब का एक गुजराती शे'र है-

छुं शून्य ए न भूल ओ अस्तित्वना खुदा।
तुं तो हशे के केम पण हुं तो जरूर छुं।

तेरे लिए हमें बहुत-सी खबर नहीं, क्या-क्या सपनें देखे! लेकिन हम तो हैं। एक वस्तु याद रखना, आप किसी के बारे में निंदा करो न तब ये सोचना कि ये कर रहा है या

नहीं, पता नहीं लेकिन मैं तो कर रहा हूं। किसी के बारे में आपके मन में ईर्ष्या पैदा हो जाए तो तुरंत हो जाए कि ये बेचारे को खबर हो कि न हो लेकिन मैं तो ईर्ष्या कर रहा हूं। वो मेरा द्वेष कर रहा है कि नहीं लेकिन मैं जरूर द्वेष से भरा हुआ हूं। कई बौद्ध विचारक मेरे से नाराज भी हुए जो मेरे स्नेही हैं। जब मैंने कहा कि बुद्ध कहते हैं, दु:ख है, दु:ख का कारण है, दु:ख का उपाय भी है और दु:ख से निवृत्ति भी है। तो मेरी व्यासपीठ ने कहा कि मुझे तो ये लगता है कि सुख है, सुख के कारण भी है, सुख के उपाय भी हैं और समझ आ जाये तो सुख से निवृत्ति भी है। तो बुद्धदर्शन कहता है, जीवन दु:ख है। ये तथागत भगवान का निर्णय है। सुख प्राप्त करो यार! पूरा पाश्चात्य जगत कहता है कि कैसे भी सुख प्राप्त करो, सुख भोगो। हमारे यहां नास्तिकवाद आया उसमें कहा, 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।' कर्जा करो लेकिन घी पीयो। लेकिन याद रखना मेरे भारतीय भाई-बहन और मेरी पृथ्वी के भाई-बहन, मेरी इस प्यारी पृथ्वी, इस प्यारी वसुधा के हम सब फूल हैं, लेकिन जरा सोचना जरूर। सुख अच्छा है लेकिन सुख मिलता है साधन से और सुख मिलता है अनुकूल संबंध से।

याद रखना, अब दो दिन बचे हैं। आपको मेरी बात दिल तक पहुंचे तो गांठ बांधकर ले जाना। सुख मिलता है साधनों से। घर में कलर टी.वी. न हो और आ जाये तो सुख। इन्कार नहीं सुविधा का। देखो, ए.सी. की सुविधा न होती, लाइट की सुविधा न होती, ये माइक सिस्टम की सुविधा न होती, ये लाइव टेलिकास्ट की सुविधा न होती तो शायद हम इतना सुखी नहीं हो पाते। लेकिन याद रखना, सुख सुविधा पर आधारित है। सुविधा मिलती है, सगवडें मिलती है नयी-नयी खोज से। आज विज्ञान ने क्या-क्या खोज दिया है! कान में ठीक से सुनाई न देता हो तो मशीन लगा देते हैं। विज्ञान ने जो खोज की है इससे आदमी सुखी होता है। कुछ बातों में तो इन्सान सुखी है ही विज्ञान की खोज के कारण। और विज्ञान के लिए वैज्ञानिक चाहिए। इसलिए हम वैज्ञानिक पैदा कर रहे हैं। सुख नए-नए अर्जित होता जा रहा है। स्वागत है। पर कल नीतिनभाई एक चिंता जो पेश कर रहे थे अपने वक्तव्य में कि ये फ्रीज होने की वजह से पानियारा भूल गए!

क्यां गयां चकचकतां बेडां पाणियारां क्यां गयां?
फ्रीज़वासीओ तरसना ए सहारा क्यां गया?
- राजेश व्यास 'मिस्कीन'

पानियारा पर जो ठंडे मटके थे। माँ-बहन या बेटी या घर के जो समझदार पात्र हो वो पानी भर कर लाये, समझदार हो वो। वो ठंडा पानी पीने का जो था वो फ्रीज़वासी भूल गए! हम सब भूल गए लेकिन विज्ञान ने सुविधा कर दी। सुख सुविधा पर डिपेन्ड है। सुख-सुविधा के लिए नयी-नयी खोज, नयी-नयी खोज के लिए नये-नये प्रयोग। प्रयोग के लिए वैज्ञानिक। और होता जा रहा है दुनिया में। ये सब हो एक-एक बात हो गई कि सुविधा मिल गई चलो। लेकिन संबंधों की अनुकूलता न हो तो हर सुविधा तुम्हें दु:खी-दु:खी कर देती है। संबंध की अनुकूलता है? पास में बैठे वो भी पसंद नहीं है ना अपने यहां! एक वहां दूर होता है तो भी अपनी आंखों से आंसू आ जाते हैं कि कब मिलेंगे उसको! और एक एकदम निकट बैठा है, अच्छा नहीं लगता! संबंध की अनुकूलता। आज पति-पत्नी के संबंध में क्या हो गया? अनुकूलता नहीं बची है। सुविधा तो बहुत है। सगवड विपुल मात्रा में है। अनुकूलता नहीं है। भाई-भाई के संबंध में अनुकूलता नहीं रही।

संबंध चार प्रकार के होते हैं मेरे भाई-बहन। आपको सब मान लेने की जरूरत नहीं। पूछा है तो मैं कुछ न कुछ कहूंगा। चार प्रकार के संबंध होते हैं। एक सामाजिक संबंध। दूसरा पारिवारिक संबंध। तीसरा धार्मिक संबंध। चौथा राजकीय संबंध। ये अनुकूल हो तो ही सुखी। बाप बेटे को अनुकूल नहीं! बेटा बाप को अनुकूल नहीं! हत्याएं करते हैं बाप बेटे की, बेटे बाप की! पति-पत्नी का तो कहना ही क्या! सोचो। पारिवारिक संबंध की अनुकूलता झोंपडी में भी सुख की खुश्बू फैलाती है और पारिवारिक संबंध नहीं रहा तो प्रतिकूलता के कारण आदमी दु:खी है। दूसरा सामाजिक संबंध। समाज के साथ आपकी बने, ज्यादातर लोगों की किसी के साथ बनती नहीं है। ये मेरा दर्शन है। घूमता रहता हूं इतने सालों से। मैं पुस्तक कम पढ़ता हूं, मस्तक बहुत पढ़ रहा हूं। बहुत मस्तक मैंने पढ़े हैं। चुप रहूं ये मेरी साधुता है। लेकिन मैं पढ़

लेता हूं। सामाजिक संबंध अनुकूल हो तो आदमी खुश है। अनुकूल ना हो तो नाराज है। राजकीय संबंध; कई लोगों को राजकीय संबंध होते हैं। ये राजकीय संबंध तो बहुत तकलादी होते हैं। दोनों ओर से तकलादी होता है। बहुत तकलादी है राजकीय संबंध। मजा छे दूर रहेवामां। अमारो त्रापजकर कहे छे-

समीप संताप छे झाझा मजा छे दूर रहेवामां।

डिस्टन्स जरूरी है, हां। लेकिन सब ऐसा नहीं होता। पारिवारिक संबंध की अनुकूलता-प्रतिकूलता पर सुविधा होते हुए सुख का आधार है। अनुकूलता नहीं तो कितनी ही सुविधा मिले, आदमी दु:खी है। पारिवारिक संबंध अनुकूल है तो कुछ नहीं तो भी सुख है। प्रतिकूल है तो पीड़ा है। धार्मिक संबंध; शिव को माननेवालों को कृष्ण को माननेवाला अनुकूल नहीं है इसलिए लड़े जा रहे हैं! हिन्दु-मुस्लिम लड़े जा रहे हैं! धर्म के नाम पर धार्मिक संबंध बिगड़े। आज एक प्रश्न मेरे पास आया, 'बापू, शत-शत प्रणाम। मेरे पति शनिवार का उपवास रखते हैं। हनुमानजी की सेवा करते हैं लेकिन उनको शनिवार को इतना गुस्सा आता है और मुझसे कहते भी है कि देख, मेरा शनिवार का उपवास है। मेरे साथ मगजमारी करना मत! बापू, ऐसा क्यों?' कोम्प्रोमाइझ करो। 'क्या हनुमानजी गुस्सेवाले हैं?' मेरा हनुमान गुस्सावाला नहीं है, तेरा हनुमान गुस्सावाला है। मेरा हनुमान तो बहुत खूबसूरत है। तेरा हनुमान बंदर। मेरा हनुमान सुंदर। कुछ के बंदर होते हैं, कुछ के सुंदर होते हैं।

बाप! एक बहन ने पूछा है कि हमारे दुबई में राममंदिर, कृष्णमंदिर और शिवमंदिर पास-पास है तो ऐसा

बराबर है? किसी ने मुझे पूछा है कि वहां कृष्णमंदिरवाले लोग जो है वो शंकर का प्रसाद भी नहीं लेते! शंकर की तरफ़ देखते भी नहीं और वो हमारे ऊपर भी गुस्सा करते हैं कि इसमें क्या है? और वो शंकरवाले लोग जो है वो त्रिशूल लेकर ही खड़े होते हैं! ऐसे ही खड़े होते हैं! इसका मतलब है धार्मिक संबंध अनुकूल नहीं हुए। ये नासमझी है। ऐसा भेद तत्त्वत: धर्म नहीं है, अधर्म है। जहां भेद है वहां धर्म टिक नहीं सकता। अब ये जो बात आपकी समझ में ना आये तो तो फिर क्या करें? जहां भी आपकी निष्ठा हो, अन्याश्रय ना करो लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि तुम्हारी हठधर्मिता इतनी दुराग्रही हो जाए कि तुम दूसरों की श्रद्धा को काटो। वो वहां जाए तो मुबारक। तो बोले, कृष्णमंदिरवाले शिवमंदिर में आते ही नहीं! बापू, कुछ करो। करना कुछ नहीं है। भीड़ कम होगी। इतनी ही सोचो ना। करने की कुछ जरूरत नहीं। मैं तो परसो निकल जाऊंगा। अब आप होमवर्क करो।

धार्मिक संबंधों की अनुकूलता और प्रतिकूलता आदमी के सुख-दुख का कारण बनती है। साहब! घर में कुछ ना हो, झोंपड़े में देखो, एक दूसरों की जो अनुकूलता होती है साहब! मेरे कहने का मतलब ये है मेरे भाई बहन कि लम्बा जीना चाहिए। आनंद करो लेकिन जीवन जब बोझ बन जाए ऐसे समय में 'संत दरस जिमि पातक टरई।' कोई साधु का दर्शन अथवा तो कोई साधु की वाणी इस ताप को हर लेते हैं। तो बुद्ध कहते हैं, जीवन दु:ख है। पाश्चात्य जगत नास्तिकवाद कहते हैं, मौज करो कुछ भी हो। कबीरसाहब तो कहते हैं-

कबीरा जग अंधा है जैसी अंधी गाय।
बछड़ा तो मर गया उभी चांद चटाय।

बछड़ा तो मरा हुआ है लेकिन गाय अंध है इसलिए खड़ी-खड़ी पूरा दिन दो-तीन दिन तक मरे हुए बछड़े को चाटती रहती है। मैं और आप कबीर के इस दर्शन के मुताबिक इतने अंध हैं कि मृतक वस्तु को चाटे जा रहे हैं और अंध बना देता है! 'मोह न अंध कीन्ह केहि केहि।' मेरे गोस्वामीजी ने कहा, मोह आदमी को अंध कर देता है। तो कबीरसाहब कभी ये कहते हैं कि दुनिया अंधी है। भगवान शंकराचार्य का जीवन के प्रति का जो दृष्टिकोण है वो

मिथ्या का है, 'जगन्मिथ्या।' मेरे शंकर कहते हैं, 'उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत हरि भजनु जगत सब अपना।।' जगत के प्रति उसका दृष्टिकोण है स्वप्न। ये स्वप्न है। कागभुशुंडि का अनुभव है, 'निज अनुभव अब कहउँ खगेसा। बिनु हरिभजन न जाहिं कलेसा।' उसने दुनिया को स्वप्न भी नहीं कही। थोड़ा-थोड़ा कागभुशुंडि आगे निकल गए। सपना भी नहीं है। हरि का भजन सत्य है बस। सब क्लेश मिटेगा। बाकी सपना है, मिथ्या है, कुछ नहीं कहा। तू भजन कर। जो होगा, ठीक हो जाएगा। लेकिन राम का दृष्टिबिंदु क्या है जीवन के बारे में?

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद् ग्रंन्थन्हि गावा।।
कबहुँक करि करुना नर देही।
देत राम बिनु हेतु सनेही।।

'मानस' का दृष्टिबिंदु है ये जीवन में कि बहुत पुण्य के बाद ये शरीर मिला है। साधन धाम, ये साधन का धाम है शरीर। जीयो, हरि भजो, परमार्थ करो; जितनी मात्रा में जिया जाए सत्य, प्रेम, करुणा के साथ संलग्न रहो और द्वेष, ईर्ष्या और निंदा से दूरी रखो। जीवन जीने जैसा है और जीने के बाद भी जिजीविषा मत रखो। हरि जब बुला ले, मैं तैयार हूं, ऐसा करना है। तो ही आदमी जी पायेगा। याद रखना, व्यासपीठ जीवनधर्मी है, मरणधर्मी नहीं। वसंतभाई ने कल एक शब्द यूझ किया 'शाश्वती', हमको चाहिए तो सब कुछ चाहिए। छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है, 'नाल्पे सुखमस्ति' न अल्पे सुखं अस्ति। हमें पूरा का पूरा चाहिए। कबीर कहता है, 'कह कबीर मैं पूरा पाया।' कोई-कोई शास्त्र जीवन को सुख और दु:ख मिश्रित समझते हैं कि यहां सुख भी है, यहां दु:ख भी है।

तो जीवन के बारे में बिलग-बिलग दृष्टिकोण है। मेरा तो इतना ही मानना है; कोशिश कर रहा हूं गुरुकृपा से कि मैं उसको ज्यादा निभा पाऊं। जितनी मात्रा में सत्य के करीब रहोगे, निर्भयता से जीवन जी पाओगे। जितनी मात्रा में प्रेम के करीब रहोगे, जीवन में त्याग और बलिदान तुम्हारा स्वभाव हो जाऐगा। और जितनी मात्रा में करुणा के करीब जीयोगे, आपकी वृतियां हिंसा से मुक्त हो जाएगी। मेरे भाई-बहन, आदमी जब बच्चा होता है, छोटा होता है तब उसमें सत्य की प्रधानता होती हैं। बालक असत्य नहीं है। इसलिए जिसस कहते हैं कि जो बालक जैसा होगा वो मेरे पिता के द्वार में प्रवेश कर पाएगा। क्राइस्ट का वचन। बचपन सबका सत्य है। युवानी सबकी प्रेम होनी चाहिए। युवानी में प्रेम नहीं तो क्या खाक! युवानी में प्रेम। बचपन में तो ओलरेडी सत्य होता है। युवानी में प्रेम और बूढ़ापे में करुणा। ये व्यासपीठ की प्रस्थानत्रयी है। मेरे कहने का मतलब ये जीवन की प्रस्थानत्रयी है-सत्य, प्रेम, करुणा। सत्य है शंकर की दायीं आंख। प्रेम है शंकर की बीच वाली आंख और करुणा है शंकर की बायीं आंख। ये त्रिलोचन शिव सत्य, प्रेम और करुणा की दृष्टि रखते हैं। 'वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम्।' दायीं आंख शंकर की सूर्य है। सूरज सत्य है। कालंतर में सूरज भी डूब जाएगा, चला जाएगा। लेकिन अभी तक तो हमारे पास सूरज का ही दृष्टांन्त लेना पड़ता है कि सूरज जेवडुं सत। और प्रेम ये शंकर की अग्नि आंख है। प्रेम अग्नि है। और मेरी व्यासपीठ प्रेम को मध्य में रखती है। कभी-कभी ये आंख खुलती है। बाकी तो खोल ही नहीं पाते हम। नफ़रतों में जीए जा रहे हैं! और बायीं आंख है करुणा। करुणा को बायीं आंख क्यों कहता हूं? करुणा ऐसी है उसको वाम और दाहिन का भेद ही नहीं रहता। कौन उल्टा कौन सुल्टा, कौन अपना कौन पराया? करुणा करुणा है। तो जीने की ये प्रस्थानत्रयी है। बहुत बार बोला हूं लेकिन ये फिर कहूं, सत्य अपने लिए रखना। दूसरा सत्य बोलता है कि नहीं उसका हिसाब-किताब मत रखो। मैं सत्य बोलता हूं कि नही? सत्य अपने लिए। प्रेम दूसरे के लिए, जिसके साथ हो उसके लिए। और करुणा सबके लिए। मेरी दृष्टि में सत्य है एकवचन, प्रेम है द्विवचन और करुणा है बहुवचन। ये जीवन का ग्रामर है।

तो ये जीवन की है प्रस्थानयत्री। प्रेम है मध्यम मार्ग। सत्य है दक्षिण मार्ग। करुणा है वाम मार्ग। वाम मार्ग दूसरे अर्थ में नहीं। तो मेरे भाई-बहन, सबका बचपन सत्य है। युवानी प्रेम होना चाहिए और बूढ़ापा करुणा से भरा होना चाहिए। तो कोई कहता है, जीवन दु:ख है। कोई कहता है, सुख है। कोई कहता है, सुख-दुख मिश्रित है। अब आप तो नहीं पूछोगे लेकिन मानो आप ने पूछ लिया कि बापू, आपकी राय जीवन के बारे में क्या है? मैं ने तो

पहले ही कहा है, मैं जीवनधर्मी हूं। लेकिन शब्द को केवल बिठाना केवल वो नहीं लेकिन जो मैंने जाना वो कह रहा हूं। कोई कहता है, जीवन कष्ट है, दुखदायी है। जैसे बुद्ध। कोई कहता है, जीवन भ्रष्ट है, भ्रष्टता। कोई कहता है जीवन नाशवंत है, नष्ट है। मोरारिबापू कहता है, जीवन इष्ट है। जीवन जीने योग्य है। नष्ट है, चले जायेंगे। नष्ट है तो है। इसमें जीवन नाशवंत है इसलिए खाये ही नही? चाय ही ना पिये जीवन नाशवंत है तो? कोई कहे, भ्रष्ट है। कोई लोगों का जीवन भ्रष्ट है। जिसका हो, हो तू क्यों फिक्र करता है? कई लोग कहते हैं, जीवन कष्ट है, दु:ख है। मेरी समझ में गुरुकृपा से इतना आया, जीवन इष्ट है। जीवन स्वयं साधना है। साधना को जीवन से बिलग मत करो। तो जीवन इष्ट है मेरे भाई-बहन। मेरे युवान भाई-बहन, जीवन को बहुत रस से जीयो, बस। केवल फल के रूप में जीवन को मत देखो, रस के रूप में देखो। गांव में तुम देखो, मैंने देखा है गांव में कि गांव के घर में आम का पेड़ होता है ना तो जब उसपे पहला आम लगता है तो अकेला घर मालिक नहीं खाता। उससे पहले घर मालिक ऐसा कहता है, पड़ोस के बच्चे कहां है? उनको बुलाओ। पहली फांक पड़ोस के बच्चे को देता है। ये जीवन इष्ट है। तो जीवन के कई दृष्टिकोण हैं। जीना चाहिए लेकिन जिजीविषा मुक्त जीवन। वरना सौ वर्ष तक शरद तक जीना भी ताप हो जाएगा! और ऐसे शरदातप का नाश कोई साधु का दर्शन या तो किसी साधु की वाणी से होता है। जो आपका प्रश्न है उसके बारे में मुझे इतना कहना है।

''बापू, कल आपने कहा कि अस्तित्व की करुणा महसूस करके हम अपने जीवन की करुणता का अंत कर सके।'' यहां करुणा और करुणता का अंत मिन्स हम रोते रहते हैं, मर गए, मर गए, मर गए! ये करुणता है। जब माँ मैना रोने लगी तब क्या कहा माँ भवानी ने?

जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं।

दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब नहीं।।

मेरे भाग में जो सुख-दु:ख होगा, मैं जहां भी जाऊंगी, प्राप्त करूंगी। ये रोने का अवसर नहीं है माँ, करुणा छोड़। करुणता माने हार जाना। अब क्या होगा? अब क्या होगा? लेकिन व्याख्या सरल पड़ती है। जब जीवन में आता है तब बड़े-बड़े कांप जाते है! बड़े-बड़े हिल जाते हैं! और जब बड़े-बड़े हिल जाते हैं और हिलना न हो तो एकमात्र उपाय और वो है रामनाम, हरिनाम, हरिनाम।

मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे, शामळा गिरधारी।

कह दो उसको कि एक तेरा ही सहारा है।

ए जी मारे एक तमारो आधार रे, शामळा गिरधारी।

ए मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे...

भगवान कहते हैं, मेहताजी, ऐसी-ऐसी हुंडियां लिखते रहना। द्वारिकाधीश नरसिंह मेहता को कहते हैं, मैं तेरा नौकर हूं। बड़े हो उन्हें कष्ट बहुत आते हैं। मोभ की लकड़ी हो ना उसको दोनों तरफ से कील खानी पड़ती है।

तुल्यनिन्दास्तुतिमाँनी सन्तुष्टो येन केनचित्।

अनिकेत: स्थिरमति: भक्तिमान्मे प्रियो नर:।।

'चिंता क्वापि न कार्य:।' श्रीमन् महाप्रभुजी भगवान वल्लभ कहते हैं, वैष्णव को चाहिए कि चिंता न करे। मुश्किल है। बोल जाना आसान है लेकिन टिक पाएंगे हरिनाम से। आखिरी उपाय रामनाम, कृष्णनाम, शिवनाम, दुर्गानाम, अल्लाह का नाम। जो भी नाम आपकी रुचि में आये। तो जीवन इष्ट है। मुझे दो-तीन दिन से बोल रहे हैं, बापू श्राद्ध चल रहे हैं। मुझे पता है। इशारा मैं समझा गया हूं! और कहते हैं, आस्था एक महीने से बंद है। तो श्राद्ध पक्ष है। मेहता के पिता का श्राद्ध का वर्णन करूं। बहुत बार ये श्राद्ध गाया है फिर एक बार नरसैयो। मेरे लिए रोज नया है नरसैयो। नरसिंह नरसिंह है! मैं इमानदारी से कहता हूं कि नरसिंह तुलसीदासजी से पहले हुए। छ सौ करीब और तुलसी पांच सौ के करीब। इसलिए नरसिंह महेता की कई सूत्रात्मक बातें तुलसी ने 'रामचरित मानस' में कबूल की। ये 'वैष्णवजन' तो क्या है? 'वैष्णवजन' के करीब-करीब सब सूत्र तुलसी ने 'मानस' में उठाये हैं। 'पीड पराई जाने'; 'परपीडा सम नहीं अधमाई'; 'सकल लोकमां सौने वन्दे।' 'सिया राममय सब जग जानी।' 'निंदा न करे'; 'परनिंदा सम अघ न गरीसा।' प्रत्येक सूत्र नरसिंह महेता का। अद्‌भुत आदमी हुआ!

मैं बहुत बार बोला हूं, फिर एक बार बोलने को जी करता है कि नरसिंह महेता को उनकी नात ने, उसके कुल ने नागर कुल ने नात बाहर किया था, जाति से बाहर कर दिया था कि ये तो हरिजन वास में जाता है! भजन करता है! तो परेशान कर रहा है। तो नात बाहर! मेरा ऐसा मानना है, नागरों का इष्टदेव हाटकेश्वर है; भगवान हाटकेश। ये कोम है ना उसका वर्ण भी उजला और उनका देव भी उजला-स्वर्णिम, हाटकेश्वर। हाटक माने सोना। हमारे 'मानस' में लिखा है, किसी की भी बुद्धि को प्रेरित करता है शिव। नागरों की क्या ताकत कि नरसिंह मेहता को न्यात बाहर करे! लेकिन शंकर ने नागरों को प्रेरित किया कि नरसिंह मेहता को बाहर करो क्योंकि अब एक जाति या एक न्यात में समा सके ऐसा नहीं है ये। अब वो उसकी सीमा में से बाहर निकालो उनको क्योंकि अब वो एक जाति-पाति में बंध नहीं रह सकते नरसैयो! वो पूरा जगत का है। और गांधी ने तो 'वैष्णवजन तो' पसंद करके पूरी दुनिया का उद्धार कर दिया। वो क्या जाति-पाति में बंध सकता है? तुम मोरारिबापू को टुकड़े में नहीं बांध सकते। अपने देश का हमें आनंद है लेकिन हमें कम पसंद ही नहीं! 'नाभ्ये सुखम् अस्ति।' तुम कैसे बांध सकते हो? मैं एक तरह की बात नहीं कर सकता। सब प्रवाह आते रहते हैं। हिन्दु, मुस्लिम, शीख, ईसाई कोई भी आओ।

काबे से बुतकदे से कभी बजमें जाम से।

आवाज़ दे रहा हूं तुम्हें हर मकाम से।

आओ, आओ, आओ! नरसिंह महेता को जाति के चक्कर में कोई बांध सकता है? मेरे महादेव ने कहा, मैं विश्वनाथ हूं। मेरा वैष्णव भी वैश्विक होना चाहिए। हमको कोई बांध नहीं सकता। मुझे तो पसंद ही नहीं। रूपयेवाले तो मुझे बांध ही नहीं सकते! वो तो भागते हैं! पदवाले-प्रतिष्ठावाले डरते हैं उसका मुझे आनंद है। ये आपकी दुआ है और मेरे गुरु का प्रताप है। बंधना नहीं। वैश्विक चेतना को तुम बांध नहीं सकते। वो बिलकुल निजतंत्र होती है। पूर्ण स्वतंत्र उसका स्वभाव हो। तो नरसिंह मेहता को कोई नात में बांध न सके। तो शंकर की प्रेरणा हुई इसलिए उसको नातबाहर निकाला। गांधीजी को भी न्यात के बाहर किया था बनियों ने एक समय में! क्या फायदा? उनको न्यात बाहर किया, गांधीजी विश्ववंद्य हो गये! तुम उसको बांध नहीं सकते। विश्वामित्र कहते हैं, दशरथ, राम को केवल आप के आंगन में बंधियार मत कर दो। मैं विश्वामित्र हूं। तुम्हारे राम को भी विश्व का मित्र बनाना चाहता हूं। दे दो मुझे राम। तो नरसिंह मेहता आगे हैं। गोस्वामीजी की बहुत-सी बातें नरसिंह के पदों से उतरी ऐसा मुझे लगता है। और मैं स्वीकार करता हूं। 'सभी सयाने एक मत।' तो मेहता नरसिंह उसके जीवन के कई प्रसंग, बहुत प्रसिद्ध प्रसंग जीवन के उसके। एक तो कुंवरबाई का मायरा। उसको चमत्कार के रूप में मत जाना। बुद्धि काम नहीं करेगी! कुंवर का वो प्रसंग नरसिंह मेहता की बेटी का और सास लिस्ट बनाने लगी। सास तो सास होती है! तुम्हारे पिता तो भजन करता है! झांझ-पखवाज लेकर घूमता रहता है! तो प्रसंग है तो उसको बुला और ये लाये इतनी कंठी, इतनी माला, इतने हार और दो बड़े-बड़े पत्थर लाये! ऐसा कहती है, ऐसा व्यंग्य किया! पत्थर लाये। कुंवर निमंत्रण भेजती है। मेहताजी आते हैं लेकिन जिसका सहारा हरि हो, द्वारिकाधीश हो, उसकी जो व्यवस्था वो चमत्कार लगते हैं लेकिन उसमें ऐसा कहते हैं कि जो लिस्ट सास ने भेजा था न उसी लिस्ट में ठाकुरजी ने पत्थर भी सोने के रखे! तीन-तीन किलो के सोने के पत्थर उसमें रखे थे! शामलशाह का विवाह, कुंवरबाई का ये प्रसंग; नरसिंह की जो हूंडी, ये जो कुछ पंच प्रसंग बड़े महत्त्व के। इनमें से एक बहुत प्यारा प्रसंग है नरसिंह मेहता के पिता का श्राद्ध। ये मैं गाता रहता हूं।

जीवन की प्रस्थानत्रयी है–सत्य, प्रेम, करुणा। सत्य है शंकर की दायीं आंख। प्रेम है शंकर की बीच वाली आंख और करुणा है शंकर की बायीं आंख। ये त्रिलोचन शिव सत्य, प्रेम और करुणा की दृष्टि रखते हैं। शंकर की दायीं आंख सूर्य है। सूरज सत्य है। कालांतर में सूरज भी डूब जाएगा, चला जाएगा। लेकिन अभी तक तो हमारे पास सूरज का ही दृष्टांत लेना पड़ता है कि सूरज जेवडुं सत। और प्रेम ये शंकर की अग्नि आंख है। प्रेम अग्नि है। और मेरी व्यासपीठ प्रेम को मध्य में रखती है। कभी-कभी ये आंख खुलती है। बाकी तो खोल ही नहीं पाते हम। नफ़रतों में जीए जा रहे हैं! और बायीं आंख है करुणा। तो जीने की ये प्रस्थानत्रयी है।

हनुमानजी केवल वचनात्मक गुरु नहीं है, रचनात्मक गुरु है

आइए, 'मानस-किष्किन्धाकांड', उसकी कुछ आगे की सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा करें इससे पूर्व कल सायंकाल यहां जो एक मुशायरा हुआ; काव्यपठन का कार्यक्रम हुआ जिसमें अस्सी प्रतिशत गुजराती काव्य और बीस प्रतिशत उर्दू कुछ पांच थे और वो हमारे परम स्नेही शोभितभाई की अगवानी में सरस कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। बहुत नये-नये विचार के शे'र सुने गए। बहुत प्रसन्नता हुई। आइये, आगे बढ़ें। ये पूरा 'किष्किन्धाकांड' जो है उसमें पूर्णत: केन्द्र में श्री हनुमानजी हैं। वैसे तो 'सुन्दरकांड' का केन्द्रबिंदु भी बहुधा हनुमानजी ही है लेकिन वहां कुछ ओर केन्द्र भी है। लेकिन जहां तक गुरुकृपा से मेरी समझ है वहां 'किष्किन्धाकांड' में करीब-करीब पूर्णत: केन्द्र में श्री हनुमानजी है। वैसे तो पूरा 'रामचरित मानस' गुरु है, सद्गुरु है। हम बहुत बड़भागी है कि हमारे पास गुरुनानक देव की परंपरा में दस गुरुओं और कबीर आदि अन्य गुरुओं के वचनों को संकलित करके एक सद्ग्रंथ हमको प्राप्त हुआ जिसको हम 'गुरुग्रंथसाहिब' सद्गुरु कहते हैं। 'रामचरित मानस' भी अपने ढ़ंग से सद्गुरु है। सब का अपना-अपना निजी रूप है। तुलसी के मतानुसार ये भी एक गुरु है। ये भी एक अर्थ में गुरुग्रंथ है। प्रमाण-

सद्गुर ग्यान बिराग जोग के।
बिबुध बैद भव भीम रोग के।

तो ये पूरा ग्रंथ सद्गुरु है। अपनी निजता लिए हुए गुरुग्रंथ है। वो 'गुरुग्रंथसाहब' है। उसकी महिमा अतुलनीय है। लेकिन ये भी गुरुग्रंथ है। ये जो सद्ग्रंथ है 'रामचरित मानस' उसमें तो सात विभाग हे। और यदि आप गुरुकृपा से उसमें ठीक से अवलोकन करें तो पता लगेगा कि प्रत्येक सोपान में गुरु का दर्शन होता है। सब से पहला गुरु 'बालकांड' में है भगवान महादेव।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्र: सर्वत्र वन्द्यते ।।

और हमारे अपने गुजरात में रंग अवधूतजी हुए नारेश्वर के संत। उसने एक ग्रंथ लिखा जिसका नाम है 'गुरु लीलामृत ग्रंथ', जिसमें गुरु की लीला है। 'रामचरित मानस' के 'बालकांड' गुरुग्रंथ का एक प्रथम भाग जिसमें गुरु शिव है और भगवान शंकर का लीलामृत भी है, गुरु की लीला भी है। पूरा गुरु लीलामृत है, जिसमें त्रिभुवन गुरु भगवान शिव का ब्याह और फिर गुरुमुख से रामकथा का आरंभ है। प्रथम सोपान का दूसरा गुरु है देवर्षि नारद। नारद गुरु है। नारद एक ऐसा गुरु है 'मानस' के सोपान में जिसके बारे में गोस्वामीजी कहते हैं, 'गति सर्वत्र तुम्हारी।' नारद पाताल में भी दिखते हैं। नारद मृत्युलोक में भी दिखते हैं। नारद स्वर्ग में भी दिखते हैं। कोई लोक नारद से अपरिचित नहीं। तो नारद भी गुरु है।

गुर के बचन प्रतीति न जेही।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही।।

पार्वती कहती हैं, नारद मेरे गुरु हैं। हे सप्तऋषि! नारद के-गुरु के वचन पर प्रतीति नहीं उसको स्वप्न में भी सुख और सिद्धियां सुगम नहीं। मैं मेरे गुरु के वचन को छोडूंगी नहीं। मेरा घर बसे या उजड़ जाए, मेरे गुरु का वचन मेरे गुरु का वचन रहेगा। तो एक है नारद। ये जो गुरुग्रंथ है मेरे लिए मेरी समझ में विश्व का एक बिलग। ध्यान देना, कोई गलत अर्थ न करे। 'गुरुग्रंथसाहब' की एक अपनी ऊँचाई है; एक अपनी महानता है। तीसरा गुरु 'रामचरित मानस' में वशिष्ठजी।

गुर गृह गयउ तुरत महिपाला।
चरन लागि करि बिनय बिसाला।।

तो 'बालकांड' के कुछ गुरुजन इसमें वशिष्ठजी हैं। विश्वामित्र भी गुरु हैं। भगवान राम बला और अतिबला विद्या की प्राप्ति करते हैं और उसके कहने पर वो धनुषभंग आशीर्वाद लेकर करते हैं। तो विश्वामित्र भी गुरु है। शतानंदजी भी गुरु है। और एक गुरु है वामदेवजी 'बालकांड' में।

'अयोध्याकांड' में वशिष्ठजी तो है ही। 'गुरु बिबेकसागर जगु जाना।' गुरु वशिष्ठ तो है ही। लेकिन संसार है, संसार के सोपानों में इन सद्गुरु की खोज में, कहीं-कहीं सभानता न रहे तो कुछ जो गुरु नहीं है ऐसे कपटी गुरु भी मिल जाते हैं जिसमें सावधान रहना पड़ता है। जैसे कि 'बालकांड' में एक कालकेतु नामक गुरु आ गया है, जो प्रतापभानु का विनाश कर देता है। और 'अयोध्याकांड' में एक गुरु महिला आई जिसका नाम है मंथरा, गुरुमाँ। कोटि-कोटि गुरु के समान मंथरा को बताया गया जिसने कैकयी जैसी संत की माँ की बुद्धि को परिवर्तित कर दिया। और ध्यान देना, गुरु खास नहीं होना चाहिए, गुरु आम होना चाहिए। आम-सार्वभौम। सच्चा गुरु, सद्गुरु, बुद्धपुरुष आम होता है। जिसका कोई खास नहीं होता; जिसके करीब कोई नहीं होता; वो खुद किसी से दूर नहीं होता है। ये बुद्धपुरुष की पहचान है।

तो 'अयोध्याकांड' के गुरु वशिष्ठ तो है ही। 'अयोध्याकांड के एक गुरु है महर्षि भरद्वाज। मंथरा तो वो गुरु है, दागवाली गुरु। गुरु को पूछा जाए 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' किसको करो? कोई बुद्धपुरुष को। इसलिए स्वयं ब्रह्म भरद्वाजजी से जिज्ञासा करते हैं, हे महर्षि, आप मुझे रास्ता बताओ कि हम किस रास्ते यहां से आगे बढ़े। वनवास के दौरान रास्ता किसको पूछोगे? गुरु को पूछना। क्योंकि अनेक रास्ते हैं यहां। भगवान राम भरद्वाजजी से पूछते हैं, भगवन्, चौदह साल हम को अब वन में रहना है, आगे बढ़ना है, आप बताएंगे कि हम यहां से प्रयाग से आगे किस रास्ते से जाएं? भरद्वाजजी कहते हैं महाराज, आपके लिए तो सब मार्ग सुगम है। तो भरद्वाजजी गुरु हैं। फिर आगे की यात्रा में मैं देखता हूं तो एक गुरु है वाल्मीकि जिसको राम जिज्ञासा करते हैं, महाराज, आप मुझे रहने का स्थान बताओ। जहां कोई मुनि को मेरे रहने से उद्वेग न हो। कोई कौल-किरात मेरे कारण मुश्किल अनुभव न करें। पशु-पक्षी को पीड़ा न हो। मुझे कोई ऐसी साधनास्थली बताओ जहां मैं रहूं। मार्ग गुरु को पूछना और साधनास्थली भी गुरु को पूछना। और वहां वाल्मीकिजी भी हंस पड़े कि महाराज, मैं जरूर आपको जगह बताऊं कि आप यहां रहे लेकिन पहले आप कृपा करो कि किस जगह आप नहीं हैं?

जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर,
या वो जगह बता जहां पर खुदा न हो।

कोई खाली जगह हो तो बताओ। वाल्मीकि पहचानते हैं रामतत्त्व क्या है, फिर भी अपनी वाणी को पवित्र करने के लिए और हम जैसों को मार्गदर्शन मिले इसीलिए 'अयोध्याकांड' में एक गुरु स्थान निर्देश करता है। चौदह स्थान की बात आई है, आप जानते हैं।

तो एक गुरु वाल्मीकि है। भरत भी गुरु है। तुलसीदासजी उसको गुरु के रूप में कुबूल करते हैं। तो भरत यदि गुरु है 'अयोध्याकांड' में तो भरतरूपी गुरु को भी रास्ता दिखा दे और चित्रकूट का संकेत कर दे वो निषाद भरत का भी गुरु बन बैठा है। यहां जन्म कहां हुआ, यहां कुल क्या है, ये नहीं देखा गया। जिन्होंने जाना है वो दूसरे को जानकारी दे सकता है। यद्यपि चित्रकूट पहुंचते-पहुंचते निषाद भी थोड़ा रास्ता भूल गया। ये प्रेम के कारण भूल गया। रास्ता दो प्रकार से भुला जाता है। एक तो अधिक प्रेम के कारण आदमी लड़खड़ा जाता है और दूसरा कोई कुमार्गदर्शक मिल जाए तो रास्ता गुमराह कर देता है। फिर वो आगे चलकर भरतजी का मार्गदर्शन करते हैं। तो निषाद भी एक अर्थ में मार्गदर्शक है और भरत तो है ही। तुलसीदासजी 'अयोध्याकांड' के समापन में कहते हैं कि दूसरों का तो जो होना हो होता लेकिन भरत न होते तो मेरे जैसे सठ को कलिकाल में कौन ऊपर उठाता? तो भरत को गुरु कहा है।

'अरण्यकांड' में आइए। एक गुरु बैठी है वहां। और गुरु पुरुष ही हो जरूरी नहीं है। मातृशरीर भी हो सकता है। बच्चा भी हो सकता है। और 'श्रीमद् भागवतजी' में तो कितने गुरु बताये! चौबीस-चौबीस गुरु की चर्चा आई। इसमें मुझे जो गणिका पर बोलना है न उसमें एक गुरु गणिका भी है 'भागवत' में। एक नर्तकी को दत्तात्रेय ने गुरु बनाया है। जो 'मानस-गणिका' करना है न अपने को। और किस समय करना है वो मोरारिबापू नक्की करेगा। आचार्यों की, संतों की, आप की दुआओं से जहां होगा वहां करेंगे। जिसको कुछ चाहिए उसको तो कहीं से भी मिल जाता है। 'अरण्यकांड' में एक गुरु माँ बैठी है जिसका नाम है अनसूया। जो गुरु जानकी को बोध देत देती है। अनसूया जानकी को निमित्त बनाकर संसार के नारीवर्ग को एक 'अनसूया गीता' देती है। गुरु माँ बैठी है जिसको 'अनसूया गीता' कही जाए। कोई भी गुरु बन सकता है। वहां अनसूयाजी एक सूत्रपात बड़ा प्यारा करती हैं गुरु माँ। वो कहती है, हे जानकी, स्त्री के लिए भाई जरूर बंधु है। स्त्री के लिए बाप उनका मूल है। स्त्री के लिए माँ जन्मदात्री है।

सब ठीक लेकिन एक स्त्री के लिए सब का योगदान आंशिक होता है। माँ ने कन्या को जन्म दिया, उसका आंशिक योगदान है। बाप ने बेटी को पढ़ाया- लिखाया, आंशिक योगदान है। भाई ने बहन की सुरक्षा की, जहां गया साथ-साथ गया। चाचा-चाची, मामा-मामी, दादा-दादी जो-जो हो सब के आंशिक योगदान हैं नारी के लिए लेकिन अनसूया कहती हैं, अमित दान, एक असीम दान स्त्री को कोई देता है तो उनका भर्ता देता है, उनका पति देता है। नारी के लिए उसका पति ही केन्द्रबिंदु है, बाकी सब का आंशिक योगदान है। इसमें कोई निम्न, कोई श्रेष्ठ, कोई दबा हुआ, कोई मालिक बन बैठा ऐसी बात नहीं है। ये समझ की बात है। मार्ग न बताये, स्थान न बताये, उपदेश न दे लेकिन एक कोने में बैठकर केवल स्तवन करता हो वो भी गुरु है। जैसे अरुणाचलम् का रमण महर्षि। आदमी कहीं गया नहीं एक कंदरा को छोड़कर। कई लोग उनके पास जाते थे, रमण महर्षिजी, आपको नेत्रयज्ञ करवाने चाहिए। बोले, तू कर ना! मैं यहां अपने ढ़ंग से सेवा कर रहा हूं। आदमी को क्या है, सेवा करनेवाले भी बहुत होशियार है। जिसके पास पैसे होते हैं न वो कई महात्माओं के पास जाते हैं, शरीर में बहुत रोग है, सेवा करने की बहुत इच्छा है लेकिन शरीर में रोग हैं। रोग भले हो पर रूपया तो है न, सेवा कर इससे। जिसके पास रूपया नहीं है और शरीर हट्टाकट्टा है तो तू शरीर से सेवा कर। जिसे सेवा करनी नहीं है वो होशियारी करता है! बड़ी चालाक दुनिया है! मेरे सामने से हटा दो ये दुनिया! एक नई दुनिया बनानी पड़ती है।

हो गइ है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

एक जवान कवि चला गया जल्दी दुष्यंत और पाकिस्तान की शायराना परवीन जल्दी चली गई! क्या गज़लें दी है! क्या विचार दिया हैं!

तेरी खुश्बू का पता करती है।
मुझपे एहसान हवा करती है।
मुझको उस राह पर चलना ही नहीं,
जो मुझे तुझसे जुदा करती है।

हे गुरु, मुझे उस मार्ग पर कदम तक नहीं रखना जो मार्ग मेरे बुद्धपुरुष से बिलग कर दे, मेरे प्रेमी से बिलग कर दे, मेरे पियू से बिलग कर दे। बहुत प्यारी गज़लें, बहुत प्यारे अशआर दिए उसने और दुष्यंत ने। पैसेवाले कहते हैं, शरीर ठीक नहीं है, क्या करें? रूपयों से कर! जिसके पास रूपये नहीं है, शरीर अच्छा है तो शरीर से कर। जिसके पास जो क्षमता है उसका सेवा में विनियोग किया जाये। तो साधुओं की साधना अपने-अपने ढंग से होती है।

तो 'अरण्यकांड' में है गुरु माँ अनसूया और स्तुति में डूबा हुआ महर्षि अत्रि, जो गुणातीत है। अत्रि तीन प्रकार की एषणा से मुक्त है; तीन गुण से मुक्त है। गुणातीत है। 'अरण्यकांड' के कुछ पके हुए गुरु हैं। 'अरण्यकांड' में भगवान राम स्वयं गुरु है। 'अरण्यकांड' में लक्ष्मण ने पांच प्रश्न पूछे और उसका प्रत्युत्तर गुरु बनकर राघव ने दिया है, जिसको 'अरण्यकांड' में 'रामगीता' कही जाती है। राम है गुरु। राम स्वयं गुरु है। मुझे बड़ी खुशी होती है। लेकिन 'अरण्यकांड' ना दाबा मांथी एक केरी पाछी सडेली नीकळी और वो है रावण। संन्यासी का वेश लेकर आया। गुरु का वेश आया था। जो समर्पण नहीं करता था, अपहरण करता था। लेकिन मुझे खुशी ये है कि 'अरण्यकांड' में एक गुरु है कुंभज ऋषि, जिससे भगवान राम मंत्र मांगते हैं और कुंभज वहां मंत्रदान करते हैं; गुरु है। अब मुझे जो विशेष खुशी है वो ये है कि 'अरण्यकांड' में एक गुरु है शबरी। शबरी गुरु है। आप कहेंगे कि कैसे? उसने क्या बोध दिया? दुनिया को नहीं, राम को बोध दिया, राघव, आप पंपा सरोवर जाओ। भगवान राम नौ प्रकार की भक्ति शबरी से कहते हैं वो तो ओलरेडी उसमें थी। वहां राम का कोई बोध नहीं है। बोध तो शबरी ने दिया कि आप पंपा सरोवर जाओ। वहां सुग्रीव से मैत्री करना। तो 'अरण्यकांड' में गुरु शबरी भी है। मैं निषाद को भी गुरु कहता हूं और शबरी को भी गुरु कहता हूं। और मुझे कोई जाति भेद नहीं है कि कौन स्त्री, कौन पुरुष; कौन पशुजाति, कौन खगजाति? यहां हमारे आचार्यों ने, महापुरुषों ने, बुद्धपुरुषों ने भेद किया ही नहीं। तथाकथित लोगों ने भेद पैदा किया है! शबरी गुरु है; गुरु माँ है। और फिर 'बालकांड' वाला गुरु दिखता है 'अरण्यकांड' के अंत में, वीणावादक नारद फिर वहां पंपा सरोवर पर दिखता हैं और फिर नारद स्वयं भगवान से मार्गदर्शन पाने के लिए संत के गुण पूछते हैं तब भगवान भी कुछ समय के लिए गुरु बन गए हैं।

तो ये मेरे गुरुग्रंथ के कुछ पके हुए गुरु। अब जिस कांड को केन्द्र में रखकर अबू धाबी की कथा चल रही है उसमें श्री हनुमानजी प्रधान गुरु है। पूरे कांड में जैसे वायु

सब जगह व्याप्त होती है वैसे हनुमान छाये हुए हैं। व्याप्त है 'किष्किन्धाकांड' में, 'सुन्दरकांड' में भी। पहले 'सुन्दरकांड' के थोड़े पके हुए गुरु बता दूं फिर 'किष्किन्धाकांड' में केन्द्रित हो जायेंगे। 'सुन्दरकांड' में श्री हनुमानजी तो यत्र-तत्र-सर्वत्र दिखते हैं; दर्शन गुरु के होते हैं। और फिर श्री हनुमानजी महाराज लंका में प्रवेश करते हैं और वहां गुरु से जुगति सीखी जाती है। गुरु जुगति बताते हैं। 'सुन्दरकांड' के एक गुरु है असुर जाति का विभीषण। तो वहां एक असुर और जानकीजी को मार्गदर्शक की जरूरत पड़ी तो वो एक असुर गुरु माँ, त्रिजटा गुरु माँ। भील से भी गुरु बन सकता है। निषाद से भी गुरु बन सकता है। असुर से भी गुरु आ सकता है। त्रिजटा भी गुरु है। और श्री हनुमानजी त्रिभुवन गुरु है, शंकरावतार है इसलिए रावण की सभा में जब बंदी बनकर गए तो वो भी गुरु का दायित्व निभाते और रावण ने तो कहा कि मुझे बहुत बड़ा बंदर आज गुरु के रूप में मिला। तो श्री हनुमानजी तो वहां है ही। यद्यपि समुद्र जड़ है। प्रकृति के पांचों तत्त्व जड़ है। इनमें समुद्र भी जड़ है। लेकिन तुलसी समुद्र को गुरु कहते हैं, 'प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि।' सागर तुम्हारे कुल का गुरु है। समंदर ने कुछ समय भगवान को जवाब नहीं दिया, मूढ़ता व्यक्त की, ये बात और है। लेकिन कुछ भी हो, मुझे समुद्र इसलिए गुरु लगता है कि समुद्र ने कहा, आप पथ्थर से सेतु बनाकर समंदर के दो किनारों को जोड़ो। विश्व में जो सेतुबंध का प्रस्ताव रखे ये मेरी दृष्टि में आज के युग का प्रासंगिक गुरु है।

'लंकाकांड' में पहले गुरु है काल। काल अपना गुरु है, ध्यान देना। कितने भी समर्थ गुरु से नहीं सुधरता वो काल से सुधर जाता है। मृत्यु का ड़र बड़ों-बड़ों को दीक्षित कर देता है। और 'लंकाकांड' का एक गुरु है भगवान रामेश्वर। तुलसी ने त्रिभुवन गुरु की स्थापना 'लंकाकांड' में की। शिव तो है ही। ये 'लंकाकांड' का गुरु है। असुर पत्नी मंदोदरी भी 'लंकाकांड' में गुरु है जो रावण को बोध करती है कि अभी भी समय है, सुधर जाओ, सुधर जाओ। लेकिन 'लंकाकांड' में एक गुरु कालनेमि। कालनेमि राक्षस आश्रम बनाकर बैठा है। बड़ी-बड़ी दीक्षा की बातें करता है। हनुमानजी को फंसाने की कोशिश में है। कालनेमि एक ऐसा निकला है। लेकिन वो बिगड़ी हुई, दागवाली केरी है। तो भी एक गुरु-कुगुरु है। और 'लंकाकांड' में एक समर्थ गुरु जो भगवान राम है, जहां भगवान राम ने विभीषण की जिज्ञासा और अति स्नेह के कारण भयभीत विभीषण को धर्मरथ का बोध दिया है, धर्मरथ का व्याख्यान किया। वहां राम का गुरुपद है। कृष्ण ने 'गीता' का ज्ञान दिया रथ का सारथि बनकर। राम ने धर्मरथ को केन्द्र में रखते हुए नंगे पैर विभीषण को धर्मरथ का ज्ञान दिया है।

'उत्तरकांड' के गुरु बड़े प्रसिद्ध। एक गुरु गुणातीत गुरु भगवान महाकाल के मंदिर का 'परम साधु परमारथ बिंदक।' कागभुशुंडि का गुरु परम साधु, एक गुरु। यद्यपि थोड़ा तमोगुण था। दूसरे गुरु है, जिसका नाम था लोमश। थोड़ा तमोगुण है, क्रोध आता है लेकिन वो ही लोमश ने कागभुशुंडि को अपने पास रखकर 'रामचरित मानस' भाखा है जब पात्रता दिखी तब। लोमश गुरु है। और तीसरा मेरे लिए बुद्धपुरुष स्वयं कागभुशुंडि गुरु है। तो ये है गुरुग्रंथ। 'मानस' के प्रत्येक सोपान में पके हुए गुरु कुछ मैंने जो दर्शन किये वो आपको बताये।

तो 'किष्किन्धाकांड' में श्री हनुमानजी केन्द्रस्थ है और हनुमानजी गुरु हैं। हम सब 'हनुमानचालीसा' में यही तो गाते हैं-

जै जै जै हनुमान गोसांई।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायक फल चारि।।

अब ये आप तो नहीं पूछेंगे क्योंकि आप डूबे हैं भाव में लेकिन कालांतर में आप के मन में प्रश्न हो कि ये जो आपने बताये 'मानस'रूपी ग्रंथ से तो कम से कम गुरु के लक्षण तो बताओ। तो हनुमानजी जो 'किष्किन्धाकांड' का केन्द्रबिंदु है उसमें हनुमानजी ने जो-जो किया वो सब गुरु के लक्षण हैं। आप गिनते जाओ। हनुमानजी की एन्ट्री से लेकर 'किष्किन्धाकांड' जहां पूरा होता है वहां तक हनुमंत क्रीड़ा जो है। हनुमानजी केवल वचनात्मक गुरु नहीं है, रचनात्मक गुरु है। वचन की बड़ी महिमा है। वचन की तो महिमा है ही लेकिन गुरु रचनात्मक है। गुरु केवल रामनाम जपे इतना पर्याप्त नहीं है। गुरु रामकाम भी करे। 'राम काज लगि तव अवतारा।' ऐसा श्री हनुमानजी के लिए कहा। तो 'किष्किन्धाकांड' का जो गुरु हनुमानजी हैं वो केवल वचनात्मक नहीं, रचनात्मक है। तो यहां गुरु के लक्षण हैं। पूरे 'किष्किन्धाकांड' में हनुमानजी का चरित्र जो है वो एक-एक गुरु की लक्षणा बता रहे हैं।

'मानस-किष्किन्धाकांड', आगे चलें। जो गुरुग्रंथ है उनमें से जो चंद गुरुओं का दर्शन और जिस कांड को इस

कथा का विषय बनाया है उसमें हनुमानजी केन्द्रस्थ है वायु की तरह पवनपुत्र। बुद्धपुरुष का पहला लक्षण 'किष्किन्धाकांड' के मुताबिक। क्योंकि गुरु को हर एंगल से देखना पड़ता है। कोई एक ही विधा नहीं है उसको देखने की। गुरु आगे भी होता है, गुरु पीछे भी होता है। गुरु बायां होता है, गुरु दायां होता है। गुरु कभी सिर के ऊपर भी होता है, कभी कदमों के नीचे भी होता है। गुरु सर्वत्र है। उसको यदि पहचान लिया जाए। और ये दर्शन मैं पहली बार कह रहा हूं। सात सौ कथा में पहली बार। और ये मुझे खबर नहीं ऐसा नहीं। ये दबी स्मृति प्रकट हो रही है। जब मैं 'किष्किन्धाकांड' दादा के चरणों में बैठकर पढ़ रहा था तब जब गुरु की चर्चा निकली तब दादाजी इस रूप में समझाते थे तो आज स्मृति आ रही है। तो ये प्रसाद है किसी का।

श्री हनुमानजी है बुद्धपुरुष और बुद्धपुरुष का पहला लक्षण है, 'धरि बटु रूप देखु तैं जाई।' हम चर्चा कर गए आपके सामने कि राम-लक्ष्मण को सीता अन्वेषण करते-करते ऋष्यमूक पर्वत की ओर आते देख सुग्रीव भयभीत हो गया ऋष्यमूक पर्वत से और भयभीत होकर हनुमानजी को कहता है कि ये कौन आ रहा है? मुझे डर लग रहा हैं। आप जाकर के परिचय करो और मुझे संकेत करो। और तब सुग्रीव कहता है, आप ब्रह्मचारी के रूप में जाइये। गुरु ब्रह्मचारी होता है। प्लीज़, इसका मतलब जिस अर्थ में हम ब्रह्मचारी का अर्थ करते हैं इतना सीमित अर्थ नहीं। करीब-करीब सभी आचार्य, करीब-करीब सभी ऋषि सब गृहस्थ हैं। और ब्रह्मचारी का अर्थ है गृहस्थ होते हुए भी निरंतर जिन्होंने ब्रह्म चिंतन किया है; निरंतर जिन्होंने ब्रह्म में चरण किया है। और ओशो तो कहते हैं, जो निरंतर ब्रह्म की चर्चा में रहता है वो ब्रह्मचारी। अच्छा निवेदन है ये। ब्रह्मचर्य ये केवल आश्रम के मुताबिक सीमित नहीं है। ब्रह्मचारी का अर्थ संकीर्ण नहीं करना चाहिए। कबीर क्या है? गृहस्थ है। तुकाराम क्या है? उसको जगद्गुरु कहते हैं। तुलसी क्या है? पूर्वाश्रम में गृहस्थ है। ब्रह्म में जागे, ब्रह्म में सोये, ब्रह्म का चिंतन, ब्रह्म के साथ भोजन करे, ब्रह्म में पीए, ब्रह्म में उठे, ब्रह्म में बैठे, ब्रह्म में देखे, ब्रह्म में सुने, सब ब्रह्म से सराबोर जिसका जीवन है वो ब्रह्मचारी है। तो गुरु का ये पहला लक्षण है। इसका मतलब ये नहीं कि एक गृहस्थ है तो ब्रह्मचारी नहीं है। गृहस्थ है तो एक व्यवस्था है गृहस्थाश्रम की। जो भजनानंदी है वो कायम ब्रह्मचारी है। तो ब्रह्मचारी का अर्थ है यहां भजनानंदी, बस सीधा-सादा अर्थ। ये ब्रह्मचारी है।

बुद्धपुरुष का दूसरा लक्षण 'मानस-किष्किन्धाकांड' अंतर्गत वो है, 'बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ।' हनुमानजी ब्राह्मण का रूप लेकर गया। हमारे यहां कहा गया, वर्णों के गुरु ब्राह्मण है। ब्राह्मणत्व गुरु है। यहां भी केवल जातिवाचक, वर्णवाचक अर्थ मत लेना। जिन्होंने ब्रह्म को जानने का सात्त्विक प्रयास किया है और सफ़ल भी रहा हे ऐसे ब्रह्मप्राप्त व्यक्ति ब्राह्मण है, द्विज है। गुरु की कोख से जिसका दूसरा जन्म हो चुका है, द्विजत्व को उपलब्ध। गुरु का लक्षण है ब्राह्मणत्व। फिर श्री हनुमानजी भगवान राम-लक्ष्मण के सामने गए और भगवान को पूछने लगते हैं कि 'को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा।' बुद्धपुरुष का लक्षण है, जो जिज्ञासा करे कि 'कोऽहम्', 'कोऽहम्', 'कोऽहम्'; वो कौन है, वो कौन है, वो कौन है? और ये खोज करते-करते साधक को-बुद्धपुरुष को कभी न कभी भीतर से जवाब मिल जाता है, 'अहं ब्रह्मास्मि।' जिसको तुलसी 'उत्तरकांड' में कहते हैं, 'सोहमस्मि।' एक बुद्धपुरुष क्या खोजता है? ऐसा जागा हुआ बुद्धपुरुष, उसकी एकमात्र खोज होती है प्रभु पहचान की।

गुरु का एक आगे का लक्षण; 'किष्किन्धाकांड' में श्री हनुमानजी महाराज ईश्वर को पहचान गए, जान गए कि ये ब्रह्म है। गुरु वो है, जिसने ब्रह्म को जाना है। ब्रह्मविद होता है; लेकिन गुरु बड़े उदार होते हैं इसलिए जिसको जाना है उसको बांटता है। गुरु का आगे का लक्षण है, मैंने राम को पहचाना तो विषयी जीव को राम से मैत्री करवा दूं। गुरु का यही काम है, जो भटक गए हैं उसको हरि से

जोड़ना। सुग्रीव भटका हुआ है, भयभीत है, विषयी है। हम जैसे विषयीओं को बुद्धपुरुष हरि तक पहुंचा देता हैं। हम जैसे विषयी को जीवों को-गुरु हरि से कक्षा के अनुसार संबंध जोड़ देते हैं। वैष्णव परंपरा में एक बहुत प्यारा शब्दब्रह्म है 'ब्रह्मसंबंध।' ठाकुरजी से जोड़ देना। श्री हनुमानजी ये करता है; गुरु ये करता है; आचार्य ये करता है। ब्रह्मसंबंध करवा देता है।

तो हनुमानजीरूपी बुद्धपुरुष का ये लक्षण यहां चरितार्थ हो रहा है। अब खास मुद्दों पर आपको मैं इंगित करना चाहता हूं और ये बुद्धपुरुष के लक्षण हैं। हनुमानजी पूरे 'किष्किन्धाकांड' में दो प्रसंग में बिलकुल गायब है। कहां गया गुरु? यद्यपि भाग नहीं गया है। गुरु भागता नहीं। कभी अंतर्धान होता है। दो प्रसंग। एक, भगवान प्रवर्षण पर्वत पर चातुर्मास कर रहे हैं। हनुमानजी कहीं दिखते नहीं। कम से कम श्रोता के रूप में तो हनुमान को कहीं दिखा देते! कम से कम कभी तो जाते कि प्रभु आप कैसे हैं? कहीं उसका दर्शन नहीं है। एक प्रसंग ये है चातुर्मास प्रवर्षण और इससे पूर्व का एक प्रसंग। बालि और सुग्रीव के युद्ध में हनुमानजी की कोई भूमिका नहीं दिखती। बालि और सुग्रीव के युद्ध में घर्षण में राम साक्षी है। हनुमानजी कहीं नहीं। ये दोनों प्रसंग एक तो बालि-सुग्रीव का ये संघर्ष और दूसरा प्रभु का प्रवर्षण निवास; दोनों में हनुमानजी नहीं दिखते हैं। और दोनों प्रसंग को गुरुकृपा से मैं नाम देना चाहता हूं। एक है रास प्रसंग और एक है ह्रास प्रसंग। ह्रास प्रसंग मानी बालि-सुग्रीव का युद्ध। और रास प्रसंग मानी 'प्रिया हीन डरपत मन मोरा।' जानकी की स्मृति; ऋतु वर्णन। राम बहुत प्रेक्टिकल हैं। राम को गानेवाले थोड़े ज़िद्दी और जड़ बन गए हैं! कितने रसिक है मेरे ठाकुर! लखन, कहीं जानकी जीवित हो तो कैसे ही जतन करके उसको लाया जाए क्योंकि सावन बीता जाए। राम सीखा रहे हैं, कोई व्यक्ति अपने प्रिय के विषय में सावन-शरद ऋतु का वर्णन करे उसीमें बुद्धपुरुष को चाहिए डिस्टर्ब ना करे। विक्षेप ना करे। साधु प्रेक्टिकल होता है।

मैं कथा में कहता हूं। मेरे पास कितने बच्चे आते हैं जवान देश के, विदेश के। सब कहते हैं, बापू, हमें आप की पोथी 'रामायण' के सामने रिंग सेरेमनी करनी है। कई लोग व्यासपीठ को फेरे लगाते हैं। फिर कहते हैं, हम शादी करने के बाद आपकी रामकथा सुनेंगे पहले। तो मैं मना करता हूं। लग्न करने के बाद कथा में सीधा मत आओ। पहले कश्मीर जाओ। मैं बिलकुल स्पष्ट हूं इस बात में। तुम जाओ, थोड़ा घूमो, फिरो। मैं ऐसा वास्तविक आदमी हूं, मैं जीवनधर्मी आदमी हूं। मैं ये कहता हूं। और ये मुझे शंकर ने सिखाया। ये तो प्रमाण है। शिवजी ब्याहे, शादी के बाद सीधी कथा शुरू की? नहीं। तुलसी लिखते हैं, 'करहि बिबिध बिधि भोग बिलासा।' भगवान शंकर ये सब जो समय है उसको विवेक से निगर्मित करते हुए फिर कैलास के वेदविदित वट वृक्ष के नीचे बैठकर रामकथा का आश्रय करते हैं। पुत्रप्राप्ति तक उसने विहार किया है। संसार में मर्यादा में घूमे। उसके बाद कैलास के शिखर पर बैठे हैं। बुद्धपुरुष तो ऐसे विवेकी होते ही है। लेकिन परिवार के सदस्यों में भी ये विवेक होना चाहिए।

भगवान राम और लक्ष्मण पारिवारिक संबंध से दो भाई है। सीता राघव की आह्लादिनी शक्ति है। फिर भी नरलीला है तो सीता के वियोग में राम कहते हैं, मेरा मन डर रहा है कि वो कहां होगी? वो कहां होगी? और हनुमानजी उसमें विक्षेप नहीं कर रहे। और दूसरा ये बुद्धपुरुष का लक्षण है कि कोई पारिवारिक तकरार है परिवार में, बुद्धपुरुष का ये काम नहीं कि उसमें बीच में जाकर बिचौलियां बने। हनुमानजी नहीं गए। ये पक्के आध्यात्मिक तत्त्व है। और तुम्हारे पारिवारिक कलह में

हनुमानजी जो 'किष्किन्धाकांड' का केन्द्रबिंदु है उसमें हनुमानजी ने जो-जो किया वो सब गुरु के लक्षण हैं। हनुमानजी की एन्ट्री से लेकर 'किष्किन्धाकांड' जहां पूरा होता है वहां तक हनुमंत क्रीड़ा जो है। हनुमानजी केवल वचनात्मक गुरु नहीं है, रचनात्मक गुरु है। वचन की बड़ी महिमा है। वचन की तो महिमा है ही लेकिन गुरु रचनात्मक है। गुरु केवल रामनाम जपे इतना पर्याप्त नहीं है। गुरु रामकाम भी करे। 'राम काज लगि तव अवतारा।' ऐसा श्री हनुमानजी के लिए कहा। तो किष्किन्धाकांड' का जो गुरु हनुमानजी हैं वो केवल वचनात्मक नहीं, रचनात्मक है।

किसी बुद्धपुरुष को डालना भी मत। तुम घाटे का सौदा कर रहे हो। मुझे बड़ा प्यारा पक्ष लगता है 'मानस' का ये जो मेरे दादा ने मुझे बताया था कि बुद्धपुरुष को चाहिए, तुम्हारे आर्थिक जगत में बुद्धपुरुष को क्या लेना-देना! ये तुम जानो। बुद्धपुरुष को इसमें मत डालो। हां, ठीक है तुम्हारी श्रद्धा हो और केवल बुद्धपुरुष के कान में डाल दो वो भी पर्याप्त होता है। फिर उसका भजन सब कुछ कर देता है। केवल कान में डाल दो। रोना नहीं, अपना ये हो गया!

मुझे बहुत प्रेरणा देता है ये प्रसंग कि दो जगह मेरे हनुमान की गैर मौजूदगी। सांसारिक बातों मे वो पड़ता नहीं बुद्धपुरुष और संघर्ष में नहीं पड़ता। ये बुद्धपुरुष के लक्षण है। उसके बाद बुद्धपुरुष का लक्षण है मेरा आश्रित जिसका ब्रह्मसंबंध मैने हरि से करवाया था और जिसने हरि से वादा किया था कि मैं भक्ति करूंगा लेकिन वो विषयों के कारण भूल गया तब बुद्धपुरुष को फिर प्रवेश करना होता है। हनुमानजी ने सोचा कि मेरा आश्रित जिसका ब्रह्म संबंध मैंने हरि से करवाया वो राम का काम चुक गया! फिर बुद्धपुरुष का कर्तव्य है, आश्रित जब भोग में लिप्त हो जाए तो थोड़ा उसको जागृत करना है। और जागृत करने में उसको साम, दाम, दंड, भेद भांति समझाना पड़ता है। यहां हनुमानजी ने सुग्रीव को चारों प्रकार से समझाया है।

तो बुद्धपुरुष का ये अर्थ है। मेरा आश्रित प्रभु को दिया हुआ वचन चुक गया है। कहीं ईश्वर मुझे न कहे कि ये तेरा था और ये हो रहा है। किसी को जब तुम बोलने लगते हो कि हम आश्रित है, तो बहुत जिम्मेवारी है। गुरु सोये हुए आश्रित को जगाता है। ये हनुमानजी ने करके दिखाया है। ये बुद्धपुरुष का लक्षण है। और फिर रामकार्य करने की बात आई, भक्ति की खोज की बात आई, सीता खोज का अभियान हुआ तब गुरु वो है वो अगवानी लेने के लिए बेताब न हो; वो तो 'पाछें पवन तनय सिरु नावा।' पीछे खड़ा रहे वो बुद्धपुरुष। इज्जत दूसरे को दे। मार्गदर्शक दूसरे को बनाये और श्री हनुमानजी पीछे रहे। जब लगेगा कि मेरे आश्रित को तृषा लगी है, मेरे आश्रित को भूख लगी है, मेरे आश्रित भूख-प्यास से पीड़ित है; अब उसको पानी नहीं मिलेगा तो बिना जल ये मर जाएंगे उसी समय श्री हनुमानजी पानी की शोध में निकलते हैं। अब हनुमानजी और पूरी टुकड़ी सीता की खोज के लिए जा रही है। हनुमानजी पानी खोजने निकले। सब पानी के बिना मरनेवाले थे। तो हनुमानजी ने देखा कि एक पृथ्वी की गुफ़ा में पक्षी उड़ रहे हैं। और जहां पक्षी उड़ते हो तब पता लगता है वहां जल होना चाहिए। श्री हनुमानजी एक पहाड़ पर चढ़ जाते हैं। ये गुरु की भूमिका है; गुरु का ये लक्षण कि तृषा मिटाने के लिए वो गतिशील होता है। तो उस समय हनुमानजी आगे चलते हैं और गुफ़ा में प्रवेश करते हैं। जहां खतरा होता है वहां बुद्धपुरुष आगे होते हैं।

हनुमानजी आगे गुफ़ा में जाते हैं। गोस्वामीजी कहते हैं, सुंदर आश्रम है गुफ़ा में। एक सरोवर है। कमल खिले हैं। सरोवर के पास एक तपस्विनी स्त्री बैठी है, जिसका नाम स्वयंप्रभा। अब यहां बुद्ध का न्याय आ जाता है, 'अप्प दीपो भव।' गुरु क्या कहता है, 'तुं तारा दिल नो दीवो था।' स्वयंप्रभा का मिलना क्या? तेरी खुद आत्मज्योति का परिचय करा दूं। आमने-सामने करा देता है और बुद्धपुरुष बीच से हट जाता है। स्वयंप्रभा ने कहा, तुम आंखें बंद करके बैठ जाओ। तुम पहुंच जाओगे। स्वयंप्रभा कहती है, अंतर्मुख हो जाओ। बहिर्मुख भटकाव छोड़ दो। तुम आंखें बंद कर दो। सीता मिल जाएगी। दो वस्तु हैं। आंख खोलकर पुरुषार्थ होता है। आंख मूंदकर विश्राम होता है। आंख बंद करना ये विश्वास का प्रतीक है, आंख खोलकर चलना ये विकास का प्रतीक है। हम अंतर्मुख ज्यादा नहीं रह पाते वर्ना तो स्वयं की प्रभा ही भीतर भक्ति की प्राप्ति करा दे। लेकिन हम तुरंत बहिर्मुख हो जाते हैं। इतनी माला की, अभी तक कुछ नहीं हुआ! हमनें इतना 'हनुमानचालीसा' किया, परिणाम नहीं आया! हम देखने के आदती हैं। हम परिणाम पाने के लिए अधीर हैं। तो हुआ क्या? सबने आंखें खोल दी! हनुमानजी ने आंख नहीं खोली थी। जब तक जामवंत ने नहीं कहा तब तक हनुमानजी अंतर्मुख बैठे हैं। हनुमानजी अंतर्मुख हैं। बुद्धपुरुष अंतर्मुख होता है। जब जरूरत पड़े तो बहिर्मुख। जब लगे कि अब भजन में डूबना है तो अंतर्मुख। उसके बाद बुद्धपुरुष का लक्षण ये है कि विश्व के कार्य के लिए केवल अंतर्मुख ही ना बैठे। कोई बुज़ुर्ग यदि कहे, कोई अनुभवी यदि कहे कि अब तो आप उठो, तो उठे। 'किष्किन्धाकांड' के अंत में जामवंत ने कहा, हनुमानजी, उठो, तुम चुप क्यों हो? रामकार्य के लिए आप का जीवन है। हनुमानजी पर्वताकार हो गए हैं। और बुद्धपुरुष इतने सरल होते हैं कि जामवंत को पूछते हैं, लंका में जाकर मुझे क्या करना है? जिससे मार्गदर्शन मिले वो ले लेता है। जहां से कुछ संदेश मिले वो ग्रहण करता है। और जामवंत ने उसको कहा कि आप जाइए, सीता की खबर लेकर आइए। और फिर हनुमानजी उस रूप में जाते हैं। ये है 'मानस-किष्किन्धाकांड।'

राम सर्वकाल में प्रासंगिक है, रामकथा सर्वकाल में प्रासंगिक है

बाप! राम का अवतार हुआ, राम की लीला हुई, राम का चरित्र वो काल तो त्रेतायुग था। हम कलियुग में हैं। बड़ा कालांतर है। बहुत बड़ा फ़ासला है काल का। स्थान का भी फ़ासला है। वो अयोध्या में घटी घटना फिर जनकपुर फिर चित्रकूट फिर दंडकवन फिर प्रवर्षण पर्वत फिर समुद्र तट फिर लंका फिर अवध। स्थान का अंतर है। काल का अंतर है। देश का अंतर है। लेकिन ये कथाएं हकीकत होते हुए भी इतने काल के बाद हम गाते रहते हैं वाणी को पवित्र करने के लिए और आप सुनते रहते हैं कान को पवित्र करने के लिए। लेकिन ये फ़ासला कम कैसे हो? कम हो सकता है इस प्रसंग का भावमय श्रवण करने से। उसके सात्त्विक-तात्त्विक इन्टरप्रिटेशन से। घटना तो बहुत दूर हुई कालों से पहले। इसलिए कई लोग आशंका करते हैं कि क्या राम हुए हैं? ऐसी घटना कभी हुई है? और कई बुद्धिजीवी लोग ऐसा कहते रहते हैं! सबको अधिकार है। कई लोग रामकथा के इस महाकाव्य को पाश्चात्य जगत के महाकाव्यों के साथ तुलना भी करते हैं। ठीक है, अपने-अपने तराजू से सब तोलते हैं। सबको हक है। लेकिन राम हुए हैं, हुए हैं, हुए हैं। राम है, है, है। राम रहेंगे, रहेंगे, रहेंगे। क्यों ये कथा युगों के बाद इतनी मीठी लगती है? और राम सर्वकाल में प्रासंगिक है; रामकथा सर्वकाल में प्रासंगिक है; यदि भाव और प्रेम से उसका श्रवण-गायन किया जाए, अनुसरण किया जाए, तो उसको रोज हम करीब पाते हैं। रोज हम जीवन का सत्य बना सकते हैं। इसलिए बार-बार कथा गाई जाती है।

प्रत्येक प्रसंग की, प्रत्येक घटना की अपनी एक गरिमा है। नौ दिन में उसको कैसे समेटा जाए? फिर भी सार-सार सुन लें। अयोध्या में भगवान राम का जन्म हुआ उस काल में। आज वो जन्म उत्सव हमारे लिए किस रूप में प्रासंगिक हो सकता है? तुलसीदासजी कहते हैं 'मानस' में कि राम जब प्रकट हुए तब एक महीने का दिन हो गया था। ये संभव नहीं है कि एक महीने तक सूरज का डूबना-अस्त होना रुक जाए। हां, इसको मानना भी पड़ेगा कि इस पृथ्वी पर कई जगह छः-छः महीने की रात है, छः-छः महीने का दिन है। तो एक महीने का दिन अयोध्या में घटी घटना। आज का सत्य कब बने? इसका मतलब ये आप ये पिटीपिटाई मान्यता न बना लें कि त्रेतायुग हो, अयोध्या हो, रामनवमी हो, मंगलवार हो, दोपहर का सूरज हो, अभिजित हो, कौशल्या हो, दशरथ हो, तभी ही राम प्रकट होता है। इससे बाहर आना पड़ेगा। शंकर भगवान ने पार्वती को कहा कि उस समय एक महीने का दिन हो गया और एक महीने तक रामजन्म मनाया गया अयोध्या में। सबको लगा आज ही राम प्रकट हुए हैं। तो तीस दिन गुजर गए हैं इसका मतलब ये कि राम कोई भी तिथि में प्रकट हो सकते हैं। ये बाध्यता नहीं है नवमी की। मैं तो ये कहूंगा कि राम जब भी जन्मे वो नवमी तिथि है। राम मंगलवार-भौमवार को जन्म ले ऐसा नहीं; राम जब जन्मे मंगल ही मंगल है। मध्याह्न का सूर्य हो तभी राम जन्में ऐसा नहीं; जिसके जीवन में राम प्रकट किया उसके लिए कायम मध्याह्न है, उजाला ही उजाला है। कभी रात है ही नहीं। इस रूप में जीवन का सत्य बनाना पड़ता है।

चार भाईयों का नामकरण हुआ। वशिष्ठजी ने बड़े पुत्र का नाम राम रखा। कैकेई पुत्र का नाम भरत रखा और सुमित्रा के दो पुत्र, उसमें एक का नाम शत्रुघ्न रखा, एक का नाम लक्ष्मण रखा। ये त्रेतायुग की घटना है। लेकिन वो सत्य आज हमारा सत्य कैसे बने? तो इसलिए व्यासपीठ कहती रहती है कि राम-राम जपनेवालों को चाहिए ये तीन नाम का अर्थ समझें। राम मंत्र है, राम महामंत्र है। राम नाम भी है। राम वेद का प्राण है। राम प्रणव है। राम औंकार है। लेकिन रामनाम जपनेवालों को चाहिए कि वो भरत के नाम की अर्थछाया में नाम जपें। भरत का अर्थ है सबको भर देना, पोषण करे। तो हम रामनाम जपते हैं तो हमारा कर्तव्य है, हम किसी का शोषण न करें, सबका पोषण करें। तब हमारा सत्य बनेगा। मेरी व्यासपीठ कहती रहती है, रामनाम जपनेवाले को शत्रुता का नाश करना चाहिए, शत्रु का नहीं। शत्रु का लाख नाश करो तो भी जब तक शत्रुता बुनियाद बनी है, पौधें पनपेंगे। दुश्मन मिट जाए ये ठीक नहीं, दुश्मनी मिट जाए। और जैसे लक्ष्मणजी पूरी पृथ्वी को धारण करता है, जगत का आधार है शेषनारायण के रूप में, वैसे रामनाम जपनेवाले को चाहिए कि हम पूरी पृथ्वी का आधार तो नहीं बन सकते लेकिन हमारी औकात के अनुसार हम जिसके-जिसके सहयोगी बन पाएं, आधार बन पाएं।

विश्वामित्र आये और यज्ञ के लिए राम की मांग करे। दशरथजी जरा पहले तो मना करते हैं लेकिन बाद में दे देते हैं। क्या अर्थ है? त्रेतायुगीन घटना को प्रासंगिक कैसे बनायें? तो इसका अर्थ है, मेरे देश का ऋषि यदि ऋषि है, मेरे देश का फ़कीर यदि फ़कीर है तो संपत्ति न मांगे। भारत के एक साधु ने सम्राट की संपत्ति नहीं मांगी। सम्राट की संतति मांगी। अब ऐसे फ़कीर और ऐसे दरवेश की जरूरत है जो चंदा न मागे; जो चंद्र जैसा बेटा हो तो भारत की रक्षा के लिए, भारत की सभ्यता के लिए, भारत के उद्धार के लिए मांगे। और कई माताओं ने अपने बेटे बोर्डर पर चांद जैसे टुकड़े दे ही तो दिए हैं। संपत्ति नहीं मांगी, संतति मांगी। और वो भी मुझे बहुत अच्छा लगा कि साधु ने राम को दीक्षा देने के लिए नहीं मांगा कि तेरे बालक को साधु बना दूं। जो आजकल प्रथा चल गई! जैसे कोई बालक मिला, दीक्षा दे दो! ये हत्या है! हिंसा है! दिशा दो, दीक्षा नहीं। सब दीक्षा देने लगे हैं छोटे-छोटे बच्चे को! जबरदस्ती दीक्षा! क्या-क्या धंधा शुरू किया है! विश्वामित्र राम को ले गए तो विरक्त न बनाया; चारों भाई की शादी करके ले आये; गृहस्थ बना दिया। उसको संन्यास नहीं दे दिया कि पहन लो कंथा! कभी-कभी मुल्क ने कभी-कभी विचारधाराओं ने बहुत जबरदस्तियां की है! धर्म के नाम पर ज्यादा हुआ है! मेरी कथा में आनेवाले कितने भिन्न-भिन्न संप्रदाय के हैं! कोई पुष्टिमार्गी है लेकिन रामकथा से भी इतना ही प्यार करते हैं। शिव का नाम लेते रामकथा में डूबते हैं। मुझे उसकी खुशी है।

कल मेरे पास एक माहिती आई। पाकिस्तान से आया एक युवक, उसने पूछा कि ये सब तुम्हारे यहां हाथ में ये छोटा बेरखा क्या करते हैं? तो कहा कि हम पूरी बड़ी माला नहीं रखते तो ये बेरखा हम सब जपते हैं इष्टदेव का। तो ये पाकिस्तानी युवक ने कहा, इस्लामी युवक ने कहा, मुझे ये बेरखा मिले? ये बनी घटना है। तो कहा कि हां! मेरे पास एक ओर है, दूं? तो उसने पूछा कि तुम्हारे पास कहां से आया? तो उसने अहोभाव से नाम दिया। तो फिर उसने लिया और पाकिस्तानी युवक कह रहा है कि मैं उस पर क्या बोलूं? और ये तो मेरा पढ़ाया हुआ पोपट था! अच्छा जवाब दिया, इस पर तू जो भी नाम लेना चाहे, अल्लाह का, खुदा का, रब का जो भी नाम लेना चाहे तो ले। तो पूछा कि आप लोग कौन-सा नाम लेते हैं? तो बोला, हम तो 'राम राम' लेते हैं। तो उस युवक ने कहा, मैं इस बेरखे पर रामनाम बोलूं तो? मुझे छूट है? मुझे कोई अपराध तो नहीं पड़ेगा? बोले, नहीं। उसको दीक्षा नहीं कहते, दिशा कहते हैं। वो अपने आप प्रकट होती है घटना। तो सोचो मेरे भाई-बहन, कितना इतना परिवर्तन हो रहा है मेरी नज़रों के सामने! मैं बहुत तसल्ली लेकर इस दुनिया को छोडूंगा, बहुत संतुष्टि लेकर जाऊंगा। और इस अहोभाव से फिर पैदा होऊंगा, जन्म-जन्म मैं रामकथा सुनाऊंगा। जैसे तुलसी ने कहा, 'पायो परम विश्राम।' मुझे भी परम विश्राम हो जाए कि केवल अहेतु जो मैंने गाया है दुनिया के चौक में उसका रिझल्ट आ रहा है, उसका परिणाम आ रहा है। ऐसी घटना होंसला बढ़ाती है।

दांडी में मेरा अनुभव था। गांधीबापू की दांडी यात्रा का जो मशहूर स्थान वहां मेरी कथा थी 'मानस-महात्मा' पार्ट-१, बापू की इस तीर्थ भूमि पर तो एक मुस्लिम युवक आया मेरे पास व्यासपीठ पर। बोले, बापू, आप सब के हाथ में 'राम' लिख देते हैं तो मेरे यहां (छाती पर) लिखो। उसने अपना कुर्ता ऊंचा किया। मैंने कहा, मैं वहां 'अल्लाह' लिखूंगा, 'राम' नहीं लिखूंगा। बोले, बापू, मैं कहता हूं। मैंने कहा, नहीं, अल्लाह और राम में मेरे लिए कोई भेद नहीं है। मैं 'अल्लाह' लिखूंगा। बोले, 'राम' लिखवाना चाहूं; मुझे राम कह रहा है कि तू 'राम' लिख। मैंने कहा कि मुझे खुदा कह रहा है कि तू 'अल्लाह' लिख। ये आज के काल की प्रासंगिकता है। आज के काल में ये जरूरी सब बातें हैं।

राम-लखन जाते हैं विश्वामित्र के साथ। सब से पहले ताड़का को मारते हैं। ताड़का की संतान मारीच और सुबाहु यज्ञ बाधा बनते हैं। तो भगवान ने सोचा कि जो संतान यज्ञ में बाधा करते है और जहां यज्ञ बाधक जन्मते हैं उस भूमिका को नष्ट कर दिया जाए। जहां से आसुरी तत्त्व प्रकट होते हैं उसकी बुनियाद खत्म कर दी जाए और वो भी निर्वाण के रूप में। ताड़का को एक ही बाण से प्रभु ने निर्वाण दिया। सुबाहु को निर्वाण दिया। मारीच को बिना फने का बाण मारकर समंदर तट पर फेंक दिया। कुछ दिन बाद विश्वामित्रजी के कहने पर भगवान जनकपुर की यात्रा करते हैं। रास्ते में अहल्या का उद्धार किया है। अहल्या से भूल हो गई। यहां कौन माई का लाल भूल नहीं करता? अहल्या का चरित्र गिरे हुए को बहुत ढ़ाढ़स देता है। अहल्या का पति भी चला गया, शिष्य भी चले गए, पशु-पक्षी चले गए पतिता समझकर तब जाकर भगवान राम उनके पक्ष में आकर खड़े रहे। विश्व को, भारत को, इस प्यारी पृथ्वी को ये तीन लक्षण संपन्न फ़कीरों की जरूरत है। पहला विचारक

हो। देश को जरूरत है विचारक की। उसके बाद मेरी व्यासपीठ मांगती है, उद्धारक की भी जरूरत है। गिरे हुए को उठाये। उसके बाद स्वीकारक की जरूरत है। भगवान ने ऐसा प्रसंग रचा कि अहल्या का त्याग किया था वो गौतम उसका स्वीकार कर लेते हैं। राम उसका उद्धार कर लेते हैं। तुलसी विचारक के रूप में इस प्रसंग के रूप में हमारे करीब पहुंचा देते हैं। अहल्या का उद्धार हुआ है।

भगवान गंगा के तट पर गए। गंगा अवतरण की कथा सुनी। उसके बाद जनकपुर गए। 'सुंदर सदन' में राम का निवास हुआ। उसके बाद भगवान नगर दर्शन के लिए जाते हैं जनकपुर में। दूसरे दिन सुबह प्रभु पुष्पवाटिका में गुरुपूजा के लिए फूल लेने जाते हैं और जनककन्या बाग में अष्टसखियों के साथ गौरीपूजा के लिए आई हैं। और जानकी और राम का प्रथम सुंदर मिलन है पुष्पवाटिका। जानकी चल रही हैं। एक सखी ने कहा, गौरीपूजा बाद में होगी सिया। जिसके बारे में तू पूछती थी कि कौन वो राजकुमार नगर में आया, जिसने कल सायंकाल को पूरी नगरी को माधुर्य में डूबो दिया है। चल जानकी, देख ले बाग में हैं। और जानकी गौरीपूजा छोड़कर के चली उस सखी को आगे करके रामदर्शन को। जानकी के पैर के नूपुर, हाथ के कंगन, कटिभाग की करधनी, तीनों आभूषण की आवाज़ हो रही है और आवाज़ सुनकर भगवान राम लक्ष्मणजी से कहते हैं, लक्ष्मण, ये कौन आ रहा है? इतने में जानकी को ठाकुर ने देखा। हाथ के कंगन दान का प्रतीक है। कटि की करधनी संयम का प्रतीक है। और पग के नूपुर सदाचरण का प्रतीक है। सदाचरण, समर्पण और संयम ये तीन व्यक्ति के आभूषण ऐसे हैं कि ईश्वर को भी तुम्हारी ओर देखने को मज़बूर कर देते हैं। प्रभु में उर्मियां उठी है। तुलसी दो-टूक बेपर्दा बात कर रहे हैं। लखन, ये जानकी को देखकर, उसकी अलौकिक शोभा को देखकर मेरा सहज पवित्र मन जरा क्षुभित हो रहा है। जरा कुछ छिपाना नहीं है। उस दिन भावेश ने कहा था न उर्दू का शे'र था कि-

बदनज़र से कभी नहीं देखा,
तेरी तसवीर भी कंवारी है।

ऐसी दृष्टि हो तो किसी का रूप देखकर थोड़ी उर्मि जगे तो कोई पाप नहीं है। लेकिन तुम ऐसे आंखें बंद कर दो और अंदर से तुम्हें भाव जगता हो, ऐसे नाटक बंद करो यार! ये सब प्रपंच है। ये सब आडंबर और दंभ है। मेरा राम सीखा रहा है, यदि रूप अलौकिक है और तुम्हारा मन पवित्र है तो आकर्षण स्वाभाविक है। लौकिक रूप हो और तुम्हारा पवित्र मन है तो आकर्षण नहीं होगा। पवित्र मनवाले का मन लौकिक रूप में नहीं जाएगा। प्रथम मर्यादा से मिलन होता है भक्ति और भगवान का और एक दूसरे को इस रूप में लीलाक्षेत्र में समर्पित हुए। जानकीजी भवानी के मंदिर में फिर आती है और माँ जगदंबा की पार्वती की स्तुति करती है। भवानी की मूर्ति मुस्कुराई। बोली। कंठ से माला गिरी, वो जानकी को दी और गौरी ने आशीर्वाद दिया, जानकी, तुम्हें सांवरा मिलेगा। सगुन होने लगे।

प्रसन्नचित्त जानकी सखियों के संग अपने भवन में आई। यहां भगवान फूल लेकर गुरु की पूजा करते हैं। आशीर्वाद दिया। दूसरी रात्रि पूरी की। उसके बाद धनुषयज्ञ का प्रसंग है। महाराज जनक का शिव धनुष इतने राजा लोग आये थे, तोड़ नहीं पाए! आज के संदर्भ में इसका क्या अर्थ करें? तो इसका सत्य व्यासपीठ को ये लगता है कि शंकर का धनुष है और शंकर समग्र अस्तित्व का अहंकार है। समष्टि के अहंकार वो ही तोड़ सकता है जिसमें जरा भी अहंकार न हो। राम तोड़ पाये क्योंकि उसमें अहंकार नहीं है। राम धनुष भंग करने गए तब गुरु को पहले प्रणाम किया है और जो गुरु को प्रणाम करके कार्य करता है उसको कर्तृत्व की गुरुता बोझ नहीं बनती। गज पंकज नाल की तरह राम ने धनुष भंग किया। जानकीजी ने जयमाला पहनाई है। जयजयकार हो रहा है। इतने में परशुरामजी आते हैं और फिर भगवान का जयजयकार करके परशुराम चले जाते हैं। इस प्रसंग को आज के जीवन का सत्य कैसे बनाया जाए कि अहंकार शिव धनुष है और जब तक साधक का अहंकार टूटता नहीं तब तक भक्ति हमारा वरण नहीं करती। लेकिन अहंकार टूट जाए और भक्ति मिल जाए उसके बाद एक खतरा आता है और वो है क्रोध। क्योंकि तुम भक्ति करोगे तो तुम ज्यादा सरल होते जाओगे और रांक बन जाओगे। और रांक बनोगे तो लोग बहुत त्रास देंगे, लोग बहुत परेशान करेंगे। और बहुत परेशान करेंगे तो कभी न कभी साधक में क्रोध आ जाता है कि हद हो गई! तो परशुराम क्रोध का प्रतीक है कि बीच में क्रोध आता है। लेकिन क्रोध भी तपस्या के लिए चला जाए तब जीवन धन्य होता है।

यहां विश्वामित्र को प्रणाम करके जनक कहते हैं, आप की कृपा से सब विघ्न दूर हो गए। अब आज्ञा करे। बोले, दशरथजी बारात लेकर आये और लोक और वेद दोनों रीति से आप ब्याह करो, कन्यादान करो। महाराज

दशरथजी के पास पत्रिका लेकर दूत गए। दशरथजी आते हैं। मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, गोरज बेला, उसी समय शुभ लग्न का मुहूर्त निकाला है। प्रभु देवताओं को, ब्राह्मणों को प्रणाम करके सिंहासन बैठे। और जानकीजी को ले आये शतानंद और वशिष्ठजी कुलगुरु है। वशिष्ठजी ने जनक को कहा कि सुना है कि आपकी बेटी ऊर्मिला और मांडवी, श्रुतकीर्ति आपके भाई की बेटियां है। हमारे राजकुमार चार हैं। तो इस विवाह मंडप में एक साथ चारों का ब्याह हो जाए? लक्ष्मण के साथ ऊर्मिला, भरत के साथ मांडवी, शत्रुघ्न के साथ श्रुतकीर्ति। एक ही ब्याह मंडप में चारों का विवाह संपन्न हुआ। कुछ दिन बारात रुकी। उसके बाद कन्या बिदाई हुई।

सब अवध पहुंचे। कुछ दिन के बाद विश्वामित्र ने विदा ली। जीवन का सत्य क्या है? जीवन का सत्य है, आज के समय में किसी पहुंचे हुए साधु को किसी गृहस्थ के प्रसंग में जाना पड़े और उसके जाने से उस प्रसंग में रोनक आये, उसको एक नए जीवन की दिशा मिले तो साधु को जाना भी चाहिए। लेकिन गृहस्थ का प्रसंग होने के बाद साधु को चाहिए कि अपनी भजनस्थली में लौट जाए। मेरा विश्वामित्र विदा मांगता है। पूरा राज परिवार विश्वामित्र की विदा के समय नयन ड़बड़बा गए कि दाता, ये सब संपदा आपकी है। हम तो आपके सेवकमात्र हैं। आपके भजन में बाधा न पड़े लेकिन आप को कभी हमारी याद आये तो हमें दर्शन देते रहिए। साधु से क्या मांगना? इतना ही मांगना, हमें दर्शन देना। साधु को क्या करना चाहिए? हां, एक डिस्टन्स रखकर सब के प्रसंगों में, सब के जीवन में रससृष्टि की जाए, उत्साहवर्धन किया जाए लेकिन भजन को अकबंध रखकर। मेरी तो एक मांग है व्यासपीठ से कि साधुओं को साधना के भोग पर सद्प्रवृत्ति भी नहीं करनी चाहिए। सद्प्रवृत्ति करे समाज। लोगों के विकास की बात करे सरकार। साधु भजन करे वो राष्ट्र में सब से बड़ा योगदान है विश्व मंगल के लिए। काम पूरा हो जाए तो साधु निकल जाए।

'अयोध्याकांड' में जिस दिन राम को राज मिलना था उसी दिन राम को चौदह साल का वनवास दे दिया गया! ये जीवन का सत्य है। जीवन के सुख-दु:ख की छाया हमारे जीवन में बदलती रहती है रात-दिन की तरह। सुख आता है जाने के लिए। उदास नहीं होना चाहिए। दृढ़ बनो। दु:ख आया है तो जाने के लिए ही। वो भी जाएगा। सुख-दु:ख तो सापेक्ष है। एक सिक्के के दो पहलू है। भगवान को चौदह साल का वनवास हुआ। प्रभु चित्रकूट में निवास कर रहे हैं। सुमंत लौटे। दशरथ ने प्राणत्याग किया। भरत आये। पितृक्रिया की। राज्य का मसला खड़ा हुआ कि अब क्या किया जाए? भरत ने कहा कि मैं पद का आदमी नहीं, मैं पादुका का आदमी हूं। मैं सत्ता का आदमी नहीं, मैं सत् का आदमी हूं। हम सब जाए चित्रकूट और राम की ये संपदा

राम को समर्पण कर दी जाए। फिर मेरा राघव मुझे जो आज्ञा करे वो करूंगा। भरत की बात सब को प्रिय लगी। सब निकल पड़े। भरत चित्रकूट पहुंचे। यहां से जनकपुरवासी जनक के साथ आये। सब मिले। दशरथजी का शोक व्यक्त हुआ। बड़ी-बड़ी सभाएं हुई। कोई निर्णय नहीं हो रहा है कि क्या किया जाए। ठाकुर, आप का मन जैसे प्रसन्न रहे ऐसा निर्णय करो। आख़िर में भरत समझ गए। भरत ने कहा, प्रभु, चौदह साल मैं अयोध्या का संचालन करूंगा लेकिन मुझे जीने के लिए कुछ सहारा चाहिए। और 'प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं।' पादुका दी है। भरत को ऐसा लगा कि सीता-राम स्वयं पादुका के रूप में मेरे साथ आ रहे हैं।

यहां भरतजी ने सिंहासन पर परमात्मा की पादुका को प्रस्थापित किया। पादुका को पुछ-पुछकर भरतजी राज्य कर रहे हैं। एक दिन वो वशिष्ठजी से कहते हैं, आप मुझे आज्ञा करें तो मैं नंदीग्राम में कुटियां बनाकर रहना चाहता हूं। वशिष्ठजी ने कहा, भरत, हमने धर्म की व्याख्या की लेकिन तू जो समझता है, और तू जो भी करता है ये धर्म नहीं है, धर्म का सार है। इसलिए तुम जो करना चाहो करो लेकिन एक माँ कौशल्या के दिल को चोट न आये वो ध्यान रखना। माँ का दिल डूब गया तो तेरी रामभक्ति अधूरी रह जाएगी। भरतजी माँ कौशल्या के पास आये, माँ! मैं नंदिग्राम में रहूं? मैं कुटियां बनाकर जीउं? राम वन में रहे तो मैं भवन में नहीं रह सकता। कौशल्या ने सोचा कि भरत को यदि चौदह साल तक जीवित रखना है तो इस संत की इच्छा में हम बाधा न करें। अपने मन को मज़बूत करके कौशल्या ने कहा कि बेटे, तेरी आत्मा ये कहती है और तू ऐसे प्रसन्न रह सकता है तो जाओ बेटे नंदिग्राम में। त्याग की चरम सीमा है रामकथा। समर्पण का गौरीशंकर शिखर है रामकथा। परस्पर परम प्रेम की एक उत्तुंग ऊंचाई है रामकथा। भरतजी नंदिग्राम निवास करने लगे।

'अरण्यकांड' में भगवान स्थानांतर करते हैं। प्रभु दंडकवन में गोदावरी के तट पर पंचवटी में निवास करते हैं। एक बार लक्ष्मणजी के पांच प्रश्नों का उत्तर देते हैं। आध्यात्मिक चर्चा हुई। फिर शूर्पणखा को दंडित किया। शूर्पणखा ने खर-दूषण-त्रिशिरा को उत्तेजित किया। इन आसुरी वृत्तियों को निर्वाण दिया। शूर्पणखा रावण को उकसाती है। रावण जानकी का अपहरण करने की योजना बनाता है। इससे पहले राम ने ललित नरलीला की योजना बना ली। लक्ष्मण फल-फूल लेने गए हैं। पंचवटी में राम ने सिया को कहा कि तुम अग्नि में समा जाओ। जब तक मेरी ललित नरलीला मैं पूरी न करूं आप अग्नि में रहो। परमात्मा के चरणकमलों को हृदय में धारण करते हुए जानकी अग्नि में विराजित होती है। प्रतिबिंबित रूप रखा। रावण जो ले गया वो भक्ति नहीं थी, भक्ति की छायामात्र थी। अशोकवन में जानकी को यत्न करके रावण बंदी बना देता है। इस तरह से छाया जानकी का अपहरण हुआ। सीता विहीन कुटिया देखकर ललित नरलीला करते हुए राम रोये। सब मानवीय लीला है। जटायु को देखा। जटायु ने कथा कही। जटायु का भगवान की गोद में प्राणत्याग हुआ। संस्कार हुआ। प्रभु आगे बढ़े। कबंध नाम के राक्षस का उद्धार करके शबरी के आश्रम में आये। नौ प्रकार की भक्ति की चर्चा हुई। शबरी योगाग्नि में चली गई जहां से लौटना न पड़े। और भगवान पंपा सरोवर पर आये। नारद से मुलाकात हुई। सुंदर चर्चा हुई। फिर 'किष्किन्धाकांड' शुरू हुआ।

आगें चले बहुरि रघुराया।
रिष्यमूक पर्बत निअराया।।

इस नवदिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विचार 'किष्किन्धाकांड' को बनाकर हमने यथासमय, यथामति गुरुकृपा से आपके सामने 'किष्किन्धाकांड' की कुछ विशेष सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा की। उसके उपसंहारक सूत्र। कल तक की कथा में हमने देखा कि श्रीहनुमानजी महाराज से गुरु के रूप में किष्किन्धा में एक बुद्धपुरुष के क्या लक्षण होते हैं वो उजागर होते हैं। स्वयंप्रभा ने बंदरों को आंखें बंद करने के लिए कहा और बंदरों ने आंखें खोली तो सब सिंधु के तट पर आ गए। आंखें खोलकर सब सोचने लगे कि अब क्या करे? अवधि पूरी होने को है! तब जामवंतजी ने कहा कि अंगद, राम केवल मनुष्य नहीं है। राम का ब्रह्मपणा जो जानकारी में था, जामवंत ने वो बात कही। समुद्र के तट पर एक गुफा थी। उसमें संपाति नाम का गीध था। उसने ये सब सुना और वो बाहर आया। बंदरों के समूह को देखकर सोचने लगा कि आज विधाता ने मुझे खुराक दिया! मैं बहुत दिनों से भूखा मर रहा हूं। आज इन सबको खा जाऊंगा! उसका सात्त्विक-तात्त्विक संवाद क्या करे? जीवन में दो गुफा हैं। एक स्वयंप्रभा की गुफा, एक सम्पाति की गुफा। स्वयंप्रभा की गुफा में सरोवर है, सम्पाति की गुफा समुद्र के तट पर है। स्वयंप्रभा की गुफा के सरोवर का जल मीठा है। सम्पाति के पास जो समंदर लहरा रहा है, उसका जल खारा है। और बड़ी विचित्रता ये है कि स्वयंप्रभा की गुफा में जब

बंदर हनुमान की अगवानी में गए तो स्वयंप्रभा ने कहा, जल पीयो, स्नान करो, फल खाओ। और सम्पाति की गुफा में यहां ऐसी आवाज आई कि मैं तुम सबको खा जाऊंगा! क्या है अर्थ? मेरे भाई-बहन, तलगाजरडा को लगता है, एक जीवन की गुफा है और एक मृत्यु की गुफा है। पोझिटीव जीवन का सोच करोगे तो जल मीठा है और नेगेटिव सोच करोगे तो जीवन खारा है। मृत्यु की गुफा हो कि जीवन की गुफा, दोनों परमात्मा की ही गुफा है। कभी कृपा खारी होती है, कभी कृपा मीठी होती है। हमारे मन की इच्छा के अनुकूल हो गया तो ये मीठी कृपा है। कभी हमारे परम कल्याण के लिए परमात्मा ने हमारे मन के अनुकूल शायद मीठा पानी न दिया, खारा दे दिया, तो ये कृपा जरा खारी है। नमकीन भी जीवन में जरूरी है। ठाकुर की, जो हम नहीं चाहते ऐसी कृपा नमकीन है जो जीवन को विशेष सुस्वादु बनाती है, जरूरी है। दोनों को कुबूल करना होगा। मैं तो इसी में जीता हूं कि यहां जो भी हो हरि की कृपा, बस। शिकायतें मत करो।

सम्पाति आया, मैं सबको खा जाऊंगा! अंगद ने कहा, बस बात खत्म! हमसे तो जटायु बड़भागी है कि भगवान के काम में आ गया। जटायु का नाम सम्पाति ने सुना और बंदरों को कहा कि अब मैं आपको खाऊंगा नहीं। जटायु मेरा भाई है। एक महत्त्व की बात समय पर बहुत ढ़ाढ़स देती है। मैं आपको शरीर से मदद नहीं करता। अब बूढ़ा हो चूका हूं। लेकिन आंखों से देखता हूं ये समंदर, बीच में त्रिकूट और एक त्रिकूट पर अशोकवाटिका मुझे दिखती है और अशोक वृक्ष के नीचे माँ जानकी सोच में डूबी बैठी है। आपमें से कोई जाकर के माँ तक पहुंचे वो धन्य होगा। और अब मुश्किल ये हो गई कि ये शतजोजन सागर को लांघकर कौन पहुंचे वहां? कोई राम का कार्य पूरा कर सके ऐसा न निकला। एकमात्र मेरा हनुमान चुप बैठा है और सबकी दृष्टि हनुमान पर गई। जामवंत ने कहा कि हनुमानजी आप चुप क्यों है? आपका जीवन ही तो रामकार्य के लिए है और आप मौन बैठे हैं! इसका एक अर्थ ये भी ले सकते हैं, बहुत बोल-बोल करते हैं वो कुछ नहीं करते! जो चुप होते हैं वो ही कर लेते हैं। जो अंतर्मुख है वो ही पा जाते हैं। जो बहिर्मुख होते हैं वो रह जाते हैं। रह जाते हैं उसकी चिंता नहीं। अंतर्मुख का संग किया हो तो कुछ देर के बाद जानकी के दर्शन हो जायेंगे। फायदा तो होगा ही साधुसंग का। श्रीहनुमानजी को आह्वान किया है। और 'रामकार्य के लिए मेरा जीवन है।' सुनते ही बाबा पर्वताकार हो गए, 'जामवंत, तुम बताओ कि मुझे क्या करना है लंका में?' युवानों, तुम आगे बढ़ो, तुम जोश से आगे बढ़ो। लेकिन बुज़ुर्गों का अनादर मत करना। उसके अनुभवों का आशीर्वाद लेना। हनुमानजी कहते हैं, हे जामवंत, मुझे क्या करना चाहिए? तब जामवंत ने कहा, आप लंका जाओ। माँ को मिलना। प्रभु ने जो पहचान के लिए मुद्री दी वो देना। परिचय देना और माँ कुछ निशानी दे तो लाना। ये संक्षेप में वर्णित था 'मानस-किष्किन्धाकांड।' अब 'सुन्दरकांड' की शुरूआत-

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

जामवंत के वचन सुनकर हनुमानजी के हृदय में बहुत अच्छा लगा। समुद्र के तट पर एक सुन्दर पर्वत था। हनुमानजी पर्वताकार हुए। हनुमानजी की महिमा क्या है? कि इतनी ऊंचाई पर जाने के बाद भी ये रामस्मरण चुकता नहीं। रास्ते में विघ्न आये। बाधाओं को पार की और लंका में प्रवेश करते हैं। वहां एक और पर्वत है। बाबा उस पर्वत पर चढ़े और ऊपर चढ़े-चढ़े देखा कि चारों और लंका को कड़ा पहरा लगा हुआ है। कैसे अंदर प्रवेश करूं? हनुमानजी सोचने लगे कि दिन में तो जाना मुश्किल है। बिल्कुल छोटा रूप लेकर रात्रि में नगरप्रवेश करूं। हनुमानजी बिल्कुल छोटा रूप लेकर लंका में रात्रि में प्रवेश करने गए ही और लंकिनी ने पकड़ लिया! दुनिया में जितने चोर है उसका मैं खुराक बना दूं! और हनुमानजी का दिमाग गया! और एकदम मुष्टिका का प्रहार सिर पर किया! विरक्त हो गई लंकिनी। रक्त निकला और पूरी दृष्टि बदल गई।

हनुमानजी लंका के मंदिर में घूमने लगे। कहीं सीता न मिली। विभीषण से मिले। विभीषण से मार्गदर्शन लेकर अशोकवाटिका में जाते हैं और वहां रावण बीच में आ जाता है। धमकी देकर निकल जाता है। फिर मुद्रिका फेंककर हनुमानजी प्रकट होते हैं। माँ और हनुमान का संवाद। भूख लगी। फल खाये। तरु तोड़े। अक्षय को निर्वाण दिया। मेघनाद हनुमान को बांधकर ले गया रावण के दरबार में। बातचीत चली। मृत्युदंड की बात हनुमानजी पर आई। तब विभीषण ने कहा कि नीति मना करती है कि दूत को न मारा जाए। दूसरा दंड करो। हनुमानजी की पूंछ जलाई। क्या अर्थ है? आज के जीवन का क्या सत्य है? जो भक्ति का दर्शन करता है, जो रामकाम करता है उसकी पूंछ समाज जलाता है। पूंछ का अर्थ है प्रतिष्ठा। समाज प्रतिष्ठा पर प्रहार करता है। लेकिन हनुमान नहीं जले, जलानेवाले जल गए! पूरी लंका में एक विभीषण का घर नहीं जला।

माँ के पास आये। माँ ने चूड़ामणि दिया। हनुमान निकल जाते हैं। मित्रों को मिले। सुग्रीव के पास गए। सब प्रवर्षण पर्वत पर गए भगवान राम के पास। जामवंत ने राम को हनुमंत चरित्र सुनाया। भगवान राम गदगद हो गए! हनुमानजी को गले लगाकर बोले, हनुमान, पूरा रघुवंश तेरे कर्जे से कभी मुक्त नहीं होगा। अब विलम्ब न करो। परमात्मा की सेना ने प्रस्थान किया। समंदर के तट पर डेरा डाला। सभा में विचार-विमर्श हुआ तब विभीषण ने कहा कि अभी भी मौका है, जानकी को वापिस लौटा दो। रावण कुपित हुआ। विभीषण को चरण प्रहार करता है। विभीषण भगवान की शरण में आता है। शरणागत को आश्रय दिया। राय ली गई कि लंका कैसे जाए? विभीषण ने कहा, आपके कुल में समुद्र गुरु है, पूज्य है। तीन दिन आप प्रार्थना करो। यदि कोई मार्ग दे तो बल का प्रयोग नहीं करना। प्रभु तीन दिन प्रार्थना करते हैं। समुद्र ने भगवान के विनय को अनसुना कर दिया। तब भगवान ललित नरलीला करते हुए थोड़े कुपित दिखाई दिए कि लक्ष्मण, धनुषबाण ला। ब्राह्मण का रूप लेकर समुद्र भगवान की शरण में आया, 'मैं जड़ हूं प्रभु! आपको मैंने समय पर जवाब नहीं दिया। सेतुबंध करो।' भगवान ने ये विचार कुबूल किया। समुद्र पर सेतुबंध बना। 'सुन्दरकांड' वहां पूरा हो जाता है।

'लंकाकांड' के आरंभ में सेतुबंध रचित हुआ और प्रभु ने कहा कि ये उत्तम धरती है। मेरी इच्छा है कि यहां शंकर की स्थापना की जाए। भगवान के हाथों से भगवान रामेश्वरम् का स्थापन हुआ। जयजयकार हुआ। प्रभु ने लिंग स्थापन करके विधिवत् पूजा की। शिव और मुझमें कोई भेद नहीं ये विश्व को बताया। एक शिखर पर प्रभु ने डेरा डाला। सायंकाल का समय। रावण अखाडे में आया है मनोरंजन के लिए। किन्नर, गंधर्व, अप्सराएं सब देवलोक से आये हैं। सुन्दर महफ़िल सजी थी। भगवान दूर से देख रहे थे। रावण के महारस को भंग किया। युवराज अंगद को संधि के लिए भेजा गया। संधि का प्रस्ताव विफल हुआ। युद्ध अनिवार्य हुआ। घमासान युद्ध होता है। आखिर मैं राम और रावण का भीषण युद्ध हुआ है। आखिर में रावण का भी निर्वाण हुआ। रावण का तेज प्रभु के तेज में समर्पित हुआ है। मंदोदरी आई। स्तुति हुई। रावण की क्रिया हुई। विभीषणजी को राजतिलक हुआ। हनुमानजी को भेजा, अब सीता को खबर करो। सीताजी को ले आये। पुष्पक विमान तैयार हुआ और साथियों को लेकर भगवान अयोध्या की यात्रा करते हैं। रामेश्वर का दर्शन करवाया। कुंभज आदि महात्माओं को मिलते-मिलते परमात्मा शृंगबेरपुर में विमान ऊतारते हैं जहां केवट की नौका में ठाकुर बैठे थे। प्रभु ने केवट को बुलाया कि मैं तेरी ऊतराई देने आया हूं। केवट रो पड़ा! मालिक, ये तो दूसरी बार दर्शन करने का एक कीमिया था कि इस बहाने आप यहां आये। लेकिन आपको कुछ देना है तो मैंने आपको नौका में बिठाया, आप मुझे विमान में बिठाकर अयोध्या ले चलो। हनुमानजी को भेज दिया अयोध्या। भरत को खबर की। यहां 'लंकाकांड' पूरा होता है।

भगवान का विमान सरजू के तट पर ऊतरा। पूरी अयोध्या उमड़ पड़ी। भगवान विमान से ऊतरकर जन्मभूमि को प्रणाम करते हैं। तुलसी ने बड़ी वैश्विक बात कही कि लंका से जब विभीषण, सुग्रीव, जामवंत सब बंदर विमान में बैठे थे लेकिन अयोध्या ऊतरे तो सब सुन्दर मनुष्य शरीर! तो रामकथा असुर-बंदर-भालू इन सबको मनुष्य बनाने की एक प्रक्रिया है। गुरु वशिष्ठजी के चरणों में दंडवत्

राम का अवतार हुआ, राम की लीला हुई, राम का चरित्र हुआ वो काल तो त्रेतायुग था। घटना तो बहुत दूर हुई कालों से पहले। इसलिए कई लोग आशंका करते हैं कि क्या राम हुए हैं? ऐसी घटना कभी हुई है? और कई बुद्धिजीवी लोग ऐसा कहते रहते हैं! सबको अधिकार है। लेकिन राम हुए हैं, हुए हैं, हुए हैं। राम है, है, है। राम रहेंगे, रहेंगे, रहेंगे। और राम सर्वकाल में प्रासंगिक है; रामकथा सर्वकाल में प्रासंगिक है; यदि भाव और प्रेम से उसका श्रवण-गायन किया जाए, अनुसरण किया जाए, तो उसको रोज हम करीब पाते हैं। रोज हम जीवन का सत्य बना सकते हैं।

किया। प्रत्येक व्यक्ति को भगवान व्यक्तिगत साक्षात्कार करवाते हैं। सबसे पहले प्रभु कैकेई के पास गए। सुमित्रा को मिले। माँ कौशल्या को मिले। वशिष्ठजी आये। ब्राह्मणों को बुलाया गया और दिव्य सिंहासन मंगवाया। पृथ्वी को, सूर्य को, दिशाओं को, जनता को, माताओं को, गुरुजन को, मित्रों को सबको प्रणाम करते हुए भगवान राज्य सिंहासन पर बैठे। सियाजु बगल में बैठी और विश्व को, त्रिभुवन को रामराज्य देते हुए भगवान वशिष्ठजी ने राम के भाल में पहला राजतिलक किया-

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

छः महिने बीत गए। अब प्रभु ने मित्रों को विदा दी। एक हनुमानजी रहे केवल। रामराज्य का वर्णन हुआ। यहां ललित नरलीला करते हुए राम समय मर्यादा बीती और जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। वैसे तीनों भाईयों के घर भी दो-दो पुत्रों के जन्म की कथा है। जानकी के दो पुत्रों की बात करके तुलसी आगे की कथा रोक देते हैं। सीता का दूसरी बार का त्याग जिसमें अपवाद और दुर्वाद है ऐसी बातें तुलसी ने हटा दी। उसके बाद तो पूरी कथा कागभुशुंडिजी की ओर गति कर जाती है। अंत में गरुड कथा सुनते-सुनते अपने बुद्धपुरुष भुशुंडि के चरणों में प्रणाम करके सात प्रश्न पूछते हैं। मानो 'मानस' के सातों सोपानों का अर्क है इसमें। सात प्रश्नों के उत्तर दिए गए और गरुड बुद्धपुरुष को प्रणाम करके वैकुंठ गए। याज्ञवल्क्य महाराज ने भरद्वाजजी के पास कथा पूरी की कि नहीं वो स्पष्ट नहीं है। त्रिवेणी का जलप्रवाह प्रयाग में बहता रहेगा तब तक ये कथा भी बहती मानी जाएगी। काश! हम सुन पाएं।

कैलासपति महादेव ने भवानी के सामने कथा को विराम दिया। तीनों आचार्यो ने कथा पूरी की और कलिपावनावतार तुलसी रामकथा को विराम देते हुए अपने मन को संबोधन करते हुए आख़िर में बोले हैं कि मेरे जैसे मतिमंद पर एक लवलेश कृपा हुई तो मैं आज परम विश्राम कर रहा हूं। तुलसी ने कथा को विराम दिया और इन्हीं चारों आचार्यों की कृपाछाया में बैठकर सद्गुरु भगवान की कृपा से मेरी व्यासपीठ नौ दिन के लिए मुखर हुई थी और अब मैं भी कथा को विराम की ओर लिए चलता हूं तब 'हरि अनंत हरि कथा अनंता।' जितना हरि अनंत है इतनी ही उसकी कथा अनंत है। पूरे आयोजन के प्रति मैं मेरा संतोष व्यक्त करता हूं। मेरे श्रोताओं की इतनी शांति से सुनने की जो पिपासा, इस आपकी श्रावणभक्ति को सलाम करता हूं।

नौ दिन का ये सुकृत, ये प्रसन्नता जो इकठ्ठी हुई है किसको समर्पित करें? नौ दिन की रामकथा का फल किसको दें? श्राद्ध पक्ष चल रहा है। आइए, विश्वभर के सभी पितृओं को हम ये कथा समर्पित करते हैं। पूरे जगत के पितृओं को कोई भी भेद के बिना श्राद्ध के रूप में श्रद्धा से इस नवदिवसीय रामकथा मैं समर्पित करता हूं। साथ-साथ यहां के राजा शेखसाहब या जो हो, उसका परिवार, यहां की जनता, यहां की सरकार इन सबको भी मैं बहुत-बहुत मुबारकबाद देता हूं कि आप लोगों ने भी बहुत सहयोग दिया और सुचारु रूप से हम कथा को संपन्न कर रहे हैं। छोटे-बड़े सब; किन-किन का नाम लूं? मैं हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करता हूं और व्यासपीठ से कहता हूं, खुश रहो बाप! 'खुश रहो, हर खुशी है तुम्हारे लिए!' मेरे युवान भाई-बहन, एक सौ सत्तर देश में सुननेवाले सभी मेरे श्रावक भाई-बहन, आप सभी को भी व्यासपीठ से याद करते हुए आप सबके लिए भी मैं शुभकामना व्यक्त करता हूं। और पहली तारीख से माँ पार्वती के नवरात्र शुरू हैं। एडवान्स में जगदम्बा की आराधना की शुभकामना भी व्यक्त करता हूं।

मानस-मुशायरा

शर्त ये कहती है कि जुबां से कुछ नहीं बोलूं।
दिखावे के लिए हंस लूं तसल्ली के लिए रो लूं।
मेरी आंखों ने देखा है, मेरे कानों ने सुना है।
शराफ़त ये कहती है कि किसीका राज़ ना खोलूं।
-जमील हापुड़ी

हो गइ है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।
-दुष्यंतकुमार

मैंने एक-एक ईंट का सदका निकाला है,
मेरे मकां की दीवार कभी गिर नहीं सकती।
-अंदाज़ देहलवी

जनाजे पर मेरे लिख देना यारों,
मोहब्बत करनेवाला जा रहा है।
-राहत इन्दौरी

किसी की राह में आंखों को कर लिया पत्थर।
अब इससे बढ़कर भला इन्तजार क्यों करता?

●

मेरी तलाश थी यारों फ़क्त वो दो आंखें,
मैं इस जहान की दौलत का शुमार क्यों करता?
-शरफ़ नानपारवी

बदनज़र से कभी नहीं देखा,
तेरी तसवीर भी कंवारी है।
-भावेश पाठक

शिक्षक वाणी, वर्तन और वेश का स्वच्छ और स्वस्थ होना चाहिए

चित्रकूट एवोर्ड अर्पण समारोह में मोरारिबापू का प्रसंगोचित वक्तव्य

इस गांव में प्रति वर्ष ऐसा एक अहेतु और फिर हेत सिवाय कोई हेतु नहीं है ऐसा एक कार्यक्रम आयोजित होता है। हम सब के आदरणीय पूज्य सीतारामबापू पधारते हैं। इस बार वसंतबापू भी आये हैं। विशेष आनंद यह है कि गुजरात में नयी सरकार स्थापित हुइ है, फिर से जिनको शिक्षणमंत्री का पद प्राप्त हुआ है ऐसे हम सब के आदरणीय महानुभाव भूपेन्द्रभाई पधारे हैं, उनके लिए मैं अंत:करणपूर्वक की खुशी व्यक्त करता हूं। आप का स्वागत है। गुजरात राज्य शिक्षक संघ के अध्यक्ष आदरणीय दिग्विजयसिंह साहब, सतीशभाई, भावनगर जिले के सभी पदाधिकारीओं और जिनकी वंदना हमने की है ऐसे सभी प्रबुद्ध महानुभावों जिनकी 'चित्रकूटधाम एवोर्ड' से वंदना की है वे सभी आदरणीय महानुभाव, आप सभी शिक्षक भाई-बहनो, ग्रामजनों और जिन बालकों ने इतना सुंदर कार्यक्रम दिया है; मूलत: इन सभी वस्तुओं के प्राण ये बालक है। ये सब बोडी के अलग-अलग अंग है। बोलना हमारा काम है।

बोलना चार प्रकार से होता है। कहीं आदमी मन से बोलता है। कहीं बुद्धि से बोलता है। कभी आदमी चैतसिक एकाग्रता से बोलता है। एक वर्ग ऐसा भी है कि केवल अधिकार से ही बोलता है। भगवत्कृपा से किसी ने मन से बोला, कोई बुद्धि से बोला, कोई पतंजलि की चैतसिक एकाग्रता से बोला, पर किसी ने अधिकार से नहीं बोला ये अपने समारंभ की सफलता है। जिले का सम्मेलन बुलाना था। एक वक्त आदरणीय दिलीपभाई के नेतृत्व में समस्त गुजरात का भी सम्मेलन हुआ। हर बार जिले के शिक्षक एकत्र होते। मुझे भी पसंद आता। परंतु इस बार किसी कारण से संभव नहीं हुआ। अगली बार समझ कर रखेंगे कि छुट्टी का दिन हो! इस बार प्रोब्लेम ये हुआ है कि ओन ड्यूटी! ऐसा बहुत आग्रह नहीं रखना चाहिए साहबों! यह शिक्षण का ही काम है। ये भूपेन्द्रसिंह साहब ने मेरे समक्ष स्वीकार किया कि यदि मेरे पास बात आती तो मैं तुरंत हां पाड़ देता। वर्कींग डे में भी ये कार्य हो सकता है। पर इसमें किसी का दोष नहीं है। मैं तो अपनी तारीख देता हूं। मोदीसाहब और मोरारिबापू बहुत घूमते हैं!

मैं एक विनती करूंगा अपने शिक्षक भाई-बहनों से, ईश्वर आप को चाहे जितनी प्रगति और उच्चतम शिखर पर चढ़ाये परंतु अपने स्वभाव का रंकपन किसी दिन नहीं छोड़ना। ये जो रंकपन है वो समढियाळा ने हमें सिखाया है कि 'भक्ति करनी है उसे रंक बनकर रहना चाहिए।' ये रंकपन है वो अपना सुरक्षित रहना चाहिए। हमारे गांव के शिक्षक मेरी तारीख कुबूल करेंगे, साफ़ बात है। परंतु अब मैं ही ध्यान रखूंगा कि रविवार ही हो जिससे विद्यार्थीओं का कुछ न बिगड़े, क्योंकि खूब चिंतित है शिक्षण जगत में सभी! ऐसी चिंता सत्तर वर्ष से रखी होती तो साहब चंद्र पर न जाना पड़ता! चंद्र में जो होता उसे नीचे आना पड़ा होता। परंतु कहीं चूक हुई है। कहीं भूल हुई है। कारणों को मैं स्वीकार करता हूं। किसी से भी चिंता नहीं करनी। न तो सरकारश्री को, न तो मंत्रिओं को, न तो साहबों को। मैं ही रविवार काढ़ दूंगा आप को। अगले वर्ष हम जिला सम्मेलन करेंगे और मैं ही ऐसा समय दूंगा।

एक वस्तु याद रखनी चाहिए बाप! ये जो राजनैतिक क्षेत्र के अपने महानुभाव है ये सब लडवैया है। वैसे न लड़े तो भी पांच वर्ष में तो लड़ना ही पड़ेगा! ये सभी लड़वैया है। और सभी शिक्षक घडवैया हैं, वो लड़वैया नहीं है। अरे भाइ! देश के इतने सारे प्रश्न विद्यार्थीओं को देना चाहिए? इतने सारे प्रश्न हमें सरकार को नहीं देना चाहिए। ये लोग हमें पैंतीस प्रतिशत पर ही पास करें उसमें अपना क्या बिगड़ जाता है? इस देश में प्रश्न, प्रश्न, प्रश्न! ये देश दुनिया को पूर्ण विराम देनेवाला देश है।

हरि ॐ पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

ये अपना देश है इसलिए प्रश्न होना चाहिए। तुम्हारे जो प्रश्न है, समस्याएं हैं, सब कुछ है। इसलिए वहां से अड़चन नहीं आयेगी। वहां से कोई अड़चन आये तो मुझे कहना। मैं भी बापू का बापू हूं न! ये दिलीपभाई कहते हैं इसलिए कहता हूं। परंतु साहब! दिल से अपनी वेदना प्रगट करनेवाले एक शिक्षा मंत्री है इसका साधु के रूप में मुझे आनंद है। मैंने पहले के भी शिक्षा मंत्रीओं को देखा है। सब ने अपने-अपने ढ़ंग से काम किया ही है, करते ही है और करना ही चाहिए। पद मिल जाने के बाद जो आदमी हद छोड़ जाये वो आदमी व्यर्थ है। उसने प्रोटोकल छोड़ा है। प्रोटोकोल उसे सरकारी रूप में मिलता है कि अध्यक्ष होगा वो अंत में बोलता है। मुझे भी स्वीकार करना चाहिए। पर उन्होंने छोड़ दिया। भूपेन्द्रभाई छोड़ते हैं। पर एक समय अपने प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी भी छोड़ते। वे सी.एम. थे तब का मुझे अनुभव है साहब! हम एक मंच पर हो और निकलना होता। उनकी एक प्रकार की सिक्युरीटी होती है ये स्वाभाविक है। तब वे मुझ से खास तौर पर कहते बापू, ये मेरी बहरे-गूंगे की शाला है! उसका जो कमान्डो होता है वो सुनता ही नहीं! कुछ भी बोलता नहीं। उसे बस जो ड्यूटी सौंपी गई होती है उसमें ही होता है। इसलिए नरेन्द्रभाई मुझे खास कहते, बापू, ये बहेरे-गूंगे की शाला है। पहले आप को बैठा दूं गाड़ी में। आप निकलो फिर मैं निकलूंगा। ये वस्तु है। होद्दा मिलने के बाद तुलसीदासजी की एक चौपाई सभी राजनीतिज्ञों को याद रखने जैसी है। मैं तो साधु हूं। मुझे चुनाव में खड़ा नहीं रहना है। यहां खड़ा हूं इतना ही खड़ा हूं।

नहि कोउ अस जनमाउ जग माही।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।

जगत में ऐसा कोई जन्मा नहीं कि प्रभुता मिलने पर उसको मद न हुआ हो। पर अभी भी अपने पास ऐसे आदमी हैं कि प्रभुता पाने के बाद वे प्रभु को नहीं बिसरे हैं। इसकी हमें खुशी है।

मैं बिहार में कथा कर रहा था। अंतिम पांच दिन बाकी थे तब काशीनरेश आये कथा सुनने। आज भी काशीनरेश बाज़ार में निकलते हैं तब विश्वनाथ के अवतार माने जाते हैं और काशी से जब नरेश निकलते हैं तब सभी दुकानों से बाहर निकल जाते हैं, धंधा बंद कर देते हैं और हाथ उठाकर नारा लगाते हैं, 'हर हर महादेव।' वे बैठे थे। शाम को मुझसे मिलने आये। हमें चाय पीने की आदत इसलिए मैंने कहा कि चाय बनाओ। महाराज स्वयं चाय पीते थे। मैंने चाय ली। महाराज को दी। विवेकपूर्वक रानी ने भी ले ली। फिर कटोरा बगल में रख दिया। मुझे लगा, शायद न भी पीनी है। अथवा अन्य कोई कारण भी होगा। इसलिए मैं कहूं फिर ना भी नहीं पाड़ सके। साहब! वे बोले, बापू की उपस्थिति में मुझसे चाय नहीं पिया जायेगा। ये आन भी है इस देश में। राज और रानी खड़े हुए, परदे के पीछे गये, चाय पी और कटोरा रखा। ये प्रोटोकोल।

आध्यात्मिकता पहले है। भौतिकता बाद में आती है। इसका अर्थ ये नहीं कि हम आध्यात्मिक हैं। ऐसा कोई मेरा दावा नहीं है। पर ऐसी समझ को नमन करता हूं। दूसरा कुछ नहीं। कोई भी व्यक्ति हमें आदर प्रदान करता है न तब हम उसके अधिकारी है ऐसा नहीं मानना चाहिए। वो उसकी उदारता है। वो उसकी समझ है। और मैं वर्ण में नहीं मानता हूं। हम तो बावा हैं। चारों वर्ण के बाहर निकले

वही बावा कहलाता है। पर अमुक जो कुलीनता होती है वो कुलीनता होती ही है साहब! क्षत्रियपन। और आज आनंद ये है कि शिक्षण में आज लगभग सभी क्षत्रिय ही हैं। मेरा क्या है कि मेरी बिरादरी है न इसलिए मैं शिक्षक को परख लेता हूं। मैं देखता हूं न तो खबर पड़ जाती है कि ये अपना आदमी है! दूसरा हो ही नहीं सकता। उसके वेश पर से, उसके बोलने के ढ़ंग से और अधिकतर उसके चरणकमल पर से पहचान लेता हूं। उसका स्लीपर जो कुछ भी हो और उसकी जो मरम्मत होती है उससे मुझे खबर पड़ जाती है कि अपनी बिरादरी के सिवाय दूसरा कोई हो ही नहीं सकता! कारण कि मैं आप का हूं और आप मेरे हो इसलिए मुझे ऐसे पता चलता है। परंतु जो अमुक कुलीनता है।

यह और बात है कि वो खामोश खड़े रहते हैं।
लेकिन जो बड़े होते हैं, वो बड़े ही होते हैं।

कुलीनता तो हमारी होनी ही चाहिए। आज देश में तकलीफ़ क्या है? विश्व की बात छोड़ दे। यद्यपि विश्व हमारा परिवार है। आज बड़ी से बड़ी क्राइसिस हो तो 'पन' है वो 'पन' खो दिया है। शिक्षक हैं, शिक्षकपन खो दिया है। ये 'पन' दो अक्षर है उसे खो दिया है! शिक्षक कितने हैं? होना चाहिए। परंतु शिक्षकपन नहीं है। मैं उलाहना नहीं देता। भूल निकालने खड़ा नहीं हुआ हूं। अन्य राज्यों की अपेक्षा गुजरात में शिक्षकपन बहुत अच्छा है, है, है। अन्य प्रान्तों की अपेक्षा गुजरात के विद्यालय स्ट्रक्चर की दृष्टि से भी अच्छे हैं, हैं, हैं। शिक्षा भी गुणवत्तापूर्ण हैं, हैं, हैं। शिक्षक भी वैसे देखने जैसे हैं। साहब! मैं प्रायमरी स्कूल में तालुका नंबर-१ शाला में नौकरी करता था। हमारे कांतिकाका पंड्या हमारे प्रिन्सिपल थे। ज्यों-त्यों युक्ति करके सब में से बचाकर दीवाली के दिन उनका कोट सिलवा दिया। टाई-बाई नहीं! वो फिर बांधना नहीं आता! हम लोग तो टाई खोलनेवाले आदमी हैं साहब! अभी बापू ने कहा कि एक गुरु गुगल और एक गुरु शिक्षक। परंतु एक गुग्गुर साधु ने जो चिमटे से धूपदानी में डाला हो और जो आरती उतारी हो न वो गुग्गुर सब की अपेक्षा श्रेष्ठ होगा साहब! उसने लोगों को सुगंध भी दी है और मार्ग भी बताये हैं। तो टाई का तो कुछ नहीं था! फिर कहा बूट! स्लिपर में तो ये सब अच्छे न लगे। मैं गया मध्यान्तर में। हम चाय पीते हैं न एकदम पानी जैसी! शिक्षक मानी पूरा हो गया! उसकी चाय! उसकी मितव्यता ओ...हो...हो! यानी हम चाय पी रहे थे तब हमारे प्रिन्सिपल साहब ने कहा, अब तो प्रायमरी के शिक्षक प्रोफेसर जैसे लगते हैं! मैं खुश हुआ। दूसरे राज्यों की अपेक्षा हमारे शिक्षक सुंदर हैं। अब अंत:करण सुंदर बनाना हम सब का फ़र्ज है। अभी हाल ही में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है 'मेरा शहर।' उसमें सभी क्षेत्रों के आदमीओं को लिखने के लिए कहा। मुझसे कहा बापू, आप को लिखना ही पड़ेगा। मैंने कहा, मुझे लिखना नहीं आयेगा। मैं ह्रस्व-दीर्घ की बहुत भूलें करता हूं और आप पढ़े-लिखे वही निकालते हैं! दूसरा कुछ आप नहीं देखते। मुझे कोई पत्र आता है तो मैं उत्तर नहीं देता। पढ़े-लिखे को तो देता ही नहीं क्योंकि वो दूसरा कुछ नहीं देखता! अगर मैंने 'राम' लिखा होगा वो नहीं देखता! ब्रह्मांडी रामतत्त्व को नहीं देखता! वो भूलें ही निकालता है उसमें से। इसलिए मैं उसे फोन करता हूं। भले ही हमारा थोड़ा खर्च होता है। मैंने कहा कि बोलता हूं, तुम लिखो। तब कहा कि मैं एक साधु के रूप में अपना गांव निश्चित नहीं कर सकता हूं। तलगाजरडा ऐसा नहीं कह सकता। पूरा ब्रह्मांड मेरा गांव है। साधुता लज्जित होती है। फिर भी अपने को अपनापन होता है। इसलिए मैं आप से ऐसा कह रहा था कि अपने जैसी प्रायमरी स्कूलें दूसरी जगह बताओ। अपने जैसी प्रायमरी स्कूलें वहां की हाईस्कूलें नहीं है ऐसी हैं। हमारी हाईस्कूलें वहां के कोलेजों के मकान नहीं है ऐसी हैं! क्या दाता दान देते हैं? अब हमें उसमें रंग भरना है। भरा जा रहा है उसमें हमें अधिक भरना है। यानी 'पन' बाकी है। देश के पास बहुत से साधु हैं। साधुता ठीकठाक नहीं है। देश के पास बहुत से नेता है। नेतागीरी नहीं है। अभिभावकत्व बरकरार रखना है।

पांच जन स्वस्थ और स्वच्छ हो तो देश का पंचामृत है। पहला तो देश की सरकार स्वच्छ और स्वस्थ हो। पहले अपना गुजरात और उसका विकास। अमुक वस्तुएं तो ऐसी होती हैं कि बैरियों को भी प्रशंसा करनी पड़ती है। मैं तो पूरे देश में घूमता-फिरता हूं। आप गुजरात को देखे। आप की बहन या पुत्री रात को दो बजे निकलती है। आप ही बताइए। अपवाद हो सकता है। रीक्षा उन्हें दो बजे घर छोड़ आती है। ऐसी समरसता। कितनों में जो 'पन' की कमी है न वही गड़बड़ करते होते हैं; क्योंकि आज आदमी जिसे चाहे जैसे घुमाए। इन लोगों ने साथ मिलकर गाय और बच्छड़ा की भेंट दी है। ये तो अभी ठीक

है कि निशान नहीं है। नहीं तो मीड़ियावाले ऐसा-वैसा कर डालते! मैंने ठीक से देखा है गाय और बच्छड़ा? ये तो बहुत पुरानी बात थी। इस देश में किसी को कमल भी नहीं दिया जाता कि ये तो वो लगता है! किसी को आशीर्वाद भी नहीं दिया जाता, ये फल्लां लगता है! अरे, रहने दो न भाईसाहब! मेरी तो गांधीनगर में कथा थी तब से मांग है लेकिन बावा की कौन सुनता है? न सुने तो कुछ नहीं। बीज बावा ने बोया है। फिर मकरंद दवे ने कहा था कि 'मैंने तो बीज बोया है। अब बादल जाने या वसुंधरा।' मैंने गांधीनगर की कथा में कहा था कि इस देश में किसी दिन ऐसा होगा कि हाथ में कमल होगा? इसलिए ये जो गाय और बच्छड़ा दिया न उसमें कुछ दूसरा मत छापना क्योंकि किसी भी निवेदन को, किसी सभी घटना को चाहे किस रूप में लोग मोड़ देते हैं! सरकार जिस देश की स्वस्थ होगी उसका चेहरा तेजस्वी होगा। जो अधिकारी स्वच्छ और स्वस्थ नहीं होते उनके चेहरे पर तेज नहीं होगा। जगत में आप चाहे जहां देखे। जो साधु स्वच्छ और स्वस्थ नहीं है उसमें तेज नहीं है क्योंकि तप बिना तेज नहीं आता। ये तेज टिकाना है। हमारे देश में प्रत्येक के चेहरे पर तेज होना चाहिए और आंख में नमी होनी चाहिए। संवेदना खत्म हो गई है! एक शे'र सुनाऊं शिक्षकों। संवेदना किसे कहते हैं?

मैं खुद को धूप से कैसे हटाऊं?
मेरे साये में एक आदमी सोया है।

सरकार के तमाम विभाग स्वच्छ और स्वस्थ होने चाहिए। यह एक सुंदर सत्संग था। यह शिक्षक सम्मेलन न था। ये सुंदर सत्संग था। मैं शब्द का आदमी हूं। अपने शब्दों का मैं जैसे-तैसे उपयोग नहीं करता। दूसरा, शिक्षकों का पोषाक स्वच्छ और स्वस्थ होना चाहिए। हो सके उतना सादा होना चाहिए। बापू ने कहा कि सप्ताह में एक बार खादी पहने। मैं खादी पहनता हूं परंतु मेरी खादी चिकनी नहीं है! शिक्षक वाणी, वर्तन और वेश से स्वच्छ और स्वस्थ होना चाहिए। साफा बांधकर आये कोई बात नहीं परंतु वो रजोगुणी नहीं होना चाहिए। वो तमोगुणी नहीं होना चाहिए। शिक्षक स्वच्छ और स्वस्थ होना चाहिए। मेरी वाणी में व्याकरण नहीं है। मेरी आदत है कि भारत में जहां भी जाता हूं समय हो तो पाठशाला चलती है वहां मैं जाता हूं। एक तो वे लोग भी खुश हो जाते हैं फिर उनके ब्लैकबोर्ड पर लिखता भी हूं। मैंने अपना शिक्षकत्व नहीं खोया है। केवल मुझको इज़ाफ़ा नहीं मिला! इन्क्रिमेंट जो मिलता है वो मिला नहीं! बहुत बार ऐसा होता है कि हम यदि अभी तक होते तो कितना पेन्शन मिलता होता? खैर! नसीब की बात है! आप सभी नसीबवालें हैं। मैं एक पाठशाला में गया। अपनी गुजराती पाठशाला। अब शिक्षक पढ़ा-लिखा भी सही। उसका कोई इरादा भी न था। उसने कहा, बापू आ गये हैं। अब स्नान ग्रहण कीजिए। कहना था सभी स्थान ग्रहण कीजिए। एक बार तो माफ़ कर देते हैं यार! पर दूसरी बारकहा, अब सभी स्नान ग्रहण कीजिए! तीसरी बार कहा इसलिए मैंने कहा, साहब! ये किसके मृत्यु स्नान में मुझे बुलाया है?

तीसरा, गाम की पंचायत स्वच्छ और स्वस्थ होनी चाहिए। उसके सभी सभ्यों से लेकर पटवारी तक। और उसमें अध्यक्ष तो खास तौर पर। वो स्वस्थ और स्वच्छ होने चाहिए। उन्हें सप्ताह में एक बार विद्यालय में जाकर शिक्षकों को उलाहना देने के लिए नहीं परंतु गांव की शिक्षा की चिंता व्यक्त करनी चाहिए। वाली ध्यान ही कहां देते हैं? चित्रकूट में मेरे पास बच्चें आते। मैं पूछुं, बापा कहां है? तो कहते हैं, महाराष्ट्र में। महाराष्ट्र में भले कपास के लिए जाएं परंतु वालीओं को बालकों का ध्यान रखना चाहिए। भतलब शिक्षक के उपकरण, शिक्षकों, गांव की पंचायत, स्वास्थ्य स्वस्थ होने चाहिए।

चौथा, देश का धार्मिक जगत स्वच्छ और स्वस्थ होना चाहिए। ये लोग क्यों इतना अधिक आदर देते हैं? क्यों अपना प्रोटोकोल तोड़ते हैं? क्यों धर्मजगत को मान देते हैं? और ये वर्ण, धर्म के ये सब भेद मिटने चाहिए। उसमें स्वच्छता और स्वस्थता आये। ऐसे अमृत हमें और आप को खड़े करने होंगे। हमारे अधिकारी, पदाधिकारी स्वच्छ और स्वस्थ हो। दूसरे की तुलना में हमारे अधिकारी अच्छा ही काम करते हैं, यह मुझे एक साधु के रूप में कहना ही चाहिए। मानपत्र नहीं है, प्रेमपत्र है साहब! प्रेमपत्र है। प्रमाणपत्र देनेवाला मैं कौन होता हूं? परंतु जब ये मलीनता देखता हूं तब ऐसा लगता है कि कुछ कमी है।

शिक्षक हैं, शिक्षकपन खत्म न हो जाये। नेता हैं, नेतागीरी खत्म न हो जाये। मानव हैं, मानवता खत्म न हो जाये। धर्म हैं, अनेक धर्मों को सम्मान परंतु धार्मिकता खत्म न हो जाये। इस राष्ट्र की तुलना में कोई नहीं आ सकता है।

यूनिफोर्म न थे हमारे पास! तलगाजरडा की स्कूलों में पढ़ते थे तब पढ़ने का एक आनंद था। शिक्षकों का भी महत्त्व था। अभी भी है, नहीं है ऐसा नहीं। और जब ऐसे जागृत शिक्षक हमारे पास है उसमें अधिक सुधार होगा ही, या तो हम अपने आप करेंगे तो बहुत बड़ा काम होगा।

ये दिलीपसिंह बापू बोलते हैं वो मुझे पसंद है। वे तो ऐसा बोले कि मुझको पांच मिनट में पूरा करना है। उन्होंने कहीं पांच मिनट में पूरा नहीं किया! इमानदारी से निश्चित कीजिए। परंतु कोई-कोई बोलता है न तब ऐसा होता है कि ओर बोले, और बोले, और बोले। ये शिक्षकों का जो उमंग होता है न पांच के बदले अधिक बोलने का, ऐसा उमंग वर्ग में बालकों के समक्ष रखते तो? नहीं, नहीं, पैंतीस या चालीस मिनट का लेक्चर क्यों? मैं एक घंटे पढ़ाऊंगा। मैं रविवार को भी बालकों को पढ़ाऊंगा। मैं ये कथा पूरी हो जाती है तब बंद नहीं हो जाता हूं। रोज बाहर झूले पर बैठा रहता हूं। सब से मिलता रहता हूं। मैं किसी दिन छुट्टी नहीं रखता। कोई प्रश्न करता है, कोई कुछ करता है, कोई बात करता है। कोई गज़ल गाता है, कोई शेर-शायरी करता है। कुछ मायोभाई बात करते हैं। अपना सत्संग ही चलता रहता है। मतलब मैं कोई वेकेशन नहीं लेता। मैंने पूरी जिंदगी वेकेशन नहीं लिया साहब! जब शिक्षक था तब वेकेशन लेता था तो ये लोग मेरा वेतन काट लेते थे साहब! तुम स्थायी नहीं यानी दूसरे दिन मुक्त कर देते! वो मेरे हिस्से का वेतन कहां जाता होगा ये तो चंदामामा जाने! अपने यहां दो साक्षी है। चांद को भी फिर पता नहीं चलता क्योंकि वो अमावस्या के ग्रहण में चला जाता है। यानी बीच से कौन निकाल ले गया ये खबर ही नहीं पड़ती। और इसका भोग मोरारिबापू बने हैं! हमें टी.ए., डी.ए. न देते थे! हमें मेडिकल न देते, क्योंकि तुम स्थायी कहां हुए हो? अरे, स्थायी होने पर तो कुछ दीजिए! अपने स्वधर्म में रहे। ये महानुभाव जो निवृत्त हुए हैं वे तो आयु के कारण हुए हैं। निवृत्ति में प्रवृत्ति। 'भागवतजी' कहते हैं 'धर्मम् सततम्...' निवृत्त होने पर क्या करना चाहिए? सेवा करना चाहिए। मोरारिबापू ही कथा कहे ऐसा नहीं है। हम भी छोटी-मोटी कहानियां कह सकते हैं। एक शिक्षकत्व हम में आये।

(चित्रकूट एवोर्ड (२०१८) अर्पण समारोह में तलगाजरडा (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य)

श्री वी.एस.गढवी

श्री मायाभाई आहीर

श्री ओसमान मीर

श्री देवराज गढवी (नानो डेरो)

क़व्वाली-प्रस्तुति

पाकिस्तानी-मुशायरा

काव्य-प्रस्तुति : सर्वश्री गौरांग ठाकर, शोभित देसाई, भरत भट्ट, भावेश पाठक, अनंत राठोड

॥ जय सीयाराम ॥